विजय विनोद

कृत ग्वाल कवि

लिप्यांत्रण तथा संपादन

डा॰ देवेन्द्र सिंह विद्यार्थी

प्रकाशक

सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड

शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी,

श्री अमृतसर ।

१ओं सतिगुर प्रसादि॥

ग्वाल कवि कृत

विजय विनोद

लिप्यांत्रण तथा संपादन

डा० देवेन्द्र सिंह विद्यार्थी

प्रकाशक :

सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड

शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी

श्री अमृतसर।

प्रकाशक:

सिक्ख इतिहास रिसर्च बोर्ड
शिरोमणी गुः प्रः कमेटी
श्री अमृतसर

अकतूबर १६६७ ५०००

मुद्रक:

गोल्डन आफसैट प्रैस
गुरुद्वारा रामसर साहिब
श्री अमृतसर।

प्राक्कथन

कवि ग्वाल, अपने समय में ब्रज भाषा की चार प्रमुख विभूतियों में अग्रगण्य थे। उन्हों ने १८२२ बि॰ में नाभा के राजा जसवन्त सिंह का आश्रय ग्रहण किया। १८८१-१८९१ बि॰ तक के अमृतसर में विद्वान जगीरदार स॰ लहणा सिंह मजीठिया की शरण में आ गए। वे अमृतसर से १८९१ में लाहौर महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में पहुंच गए। यहां रहते समय वज़ीर राजा ध्यान सिंह के अधिक निकटी हो गए। महाराजा रणजीत सिंह के मरते ही राजगर्दी का युग उभरा। ग्वाल ने सिक्ख राज का पतन अपनी आंखों देखा था। उन्हों ने थोड़े अन्तर से सभी मुख्य घटनाओं का वर्णन पूरी भावना से किया है। यह और बात है कि कवि का जो नायक है, वही वस्तुत: लोगों का खलनायक है। ग्वाल ने जो वर्णन किया है, उस में अपने नायक के पक्ष में अधिक ऊहा पोह नहीं की। सारी हकीकत अपनी वास्तविकता सहित, कथन की प्रक्रिया में झलक जाती है। अस्तु

यह रचना स: शमशेर सिंह 'अशोक' संपादित पुस्तक 'प्राचीन वारां ते जंगनामें' में १९५० ई॰ से गुरूमुखी अक्षरों में छपती आई है। पहले भी लित्थो पर एक बार यह पुस्तक छपी थी। हमारे सामने बड़ी समस्या यह थी कि पिछले ४७ वर्षों में चार बार प्रैस में, छपाई की प्रक्रिया पार करते, पाठ की काफी दुर्दशा हुई है। स: शमशेर सिंह बीते दशक में स्वर्गवासी हो गए। उनका संग्रह कई हाथों में

बट गया और सिक्ख रैफ्रैंस लायब्रेरी १९८४ में नष्ट हो गई। अत: पुनः पाठ संस्थापन में अटकल पर ही निर्भर करना पड़ा है।

हमें आशा हैं कि पंजाब में सिक्ख राज्य के इतिहास के विद्यार्थी गण इस का पर्याप्त लाभ लेंगे। पंजाब में ब्रजी रचना का भी यह अद्भुत नमूना है। कवि ग्वाल की रचनाओं में इतिहास लिप्त यह दूसरी रचना है, पहली रचना १८८१ बि० में 'हमीर हठ' थी। पंजाब और राजस्थान विश्वविद्यालयों से हमीर हठ पर कुछ शोध कार्य भी हुआ है। वैसे वीरकाव्य ग्वाल का विषय नहीं था। यह केवल दरबारी कवि होने की मजबूरी थी। होली के दिनों में यह खून की होली की दास्तान पाठकों की भेंट है।

देवेन्द्र सिंह विद्यार्थी (डा०)
इन्चार्ज सिक्ख इतिहास रीसर्च बोर्ड
शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी

रचना तन्त्र

मङ्गलाचरण, ग्रन्थ रचना का कारण ५०-५१
महाराजा रणजीत सिंह का राज तेज ५१
राजा ध्यान सिंह की आमद और उसका राज-प्रबन्ध ५६
राजा ध्यान सिंह को वज़ारत ६०
हीरा सिंह महाराजे की हज़ूरी में ६५
महाराजे की ओर से हीरा सिंह का पालन-पोषण ६७
हीरा सिंह को राजा की पदवी ६९
महाराजा रणजीत सिंह का स्वर्गवास तथा अन्तिम संस्कार ७०-७२
महाराजा खड़ग सिंह को राज-गद्धी ७७
महाराजा खड़ग सिंह का देहांत तथा डोगरों की साज़िश ८१
कुंवर शेर सिंह को ध्यान सिंह का बुलावा ८२
राजा ध्यान सिंह की प्रतिज्ञा तथा सिक्ख सेना के माध्यम से साज़िश८४
कुवंर शेर सिंह और राजा ध्यान सिंह की वापसी ८८
राजा ध्यान सिंह की आमद और लाहौर पर अधिकार १०५
महाराजा शेर सिंह की गद्धी-नशीनी १०७
सन्धावालिए सरदारों का देश से निष्कासन १०९
सन्धावालिओं की तबाही ११०
सरदार अजीत सिंह की कलकत्ते चाराजोई १११
बेदी बिक्रम सिंह के सहयोग द्वारा महाराजा से क्षमा ११५
सरदार अजीत सिंह पुन: लाहौर लौटा ११६
महाराजा की ओर से अजीत सिंह को पुन: आश्रय ११८
स॰ लहणा सिंह सन्धावालिए की रिहाई ११९
स॰ अतर सिंह की वापसी १२१
सन्धावालियों की साज़िश १२३

महाराजा शेर सिंह की हत्या १२५
कुंवर प्रताप सिंह की हत्या १२६
राजा ध्यान सिंह की हत्या १२७
ध्यान सिंह की हत्या की सूचना १३२
दीवान दीना नाथ और उस की उपमा १३६
सैना का उत्थान १३८
सन्धावालियों को सूचना १४०
लाहौर किले पर चढ़ाई १४०
स० लहणा सिंह को भांज और घाव आना १४६
स० अजीत सिंह की हत्या १४६
स० लहणा सिंह का अन्त १४७
सन्धावालियों की लाशों का तृस्कार तथा राजा ध्यान सिंह का अन्तिम संस्कार १४८
महाराजा दलीप सिंह को गद्दी १४९
स० अतर सिंह की हत्या १५१
राजा हीरा सिंह की उपमा १५४

कवि ग्वाल : संक्षिप्त जीवनी

ग्वाल छाप-धारी कवि

नाभा दरबार के राज-कवि गोपाल सिंह नवीन ने अपनी रचना सुधा-सागर में "अथ नाम रासी कवि भेद वचनिका" शीर्षक से जहां एकाधिक कवि (जिन की छाप एक सी थी) गिनाए हैं वहां एक ग्वाल प्राचीन और दूसरे "ग्वाल राइ मथुरा बारे" का उल्लेख किया है।[१]

श्री नरेन्द्र नाथ बसु ने ग्वाल प्राचीन का जन्म-काल १७५८ ई॰ दिया है।[२] उन की कोई रचना नहीं मिलती केवल कालिदास हज़ारा में कुछ कबित्त दिए गए हैं।[३]

श्री प्रभु दयाल मीतल ने 'पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ' में एक सूची उन कवियों की दी हैं जिन के पद वल्लभ सम्प्रदाय में, नित्य कीर्तन में, मंगला से शयन प्रयन्त तथा श्री कृष्ण जन्म से हिण्डोले के उत्सव तक गाए जाते हैं। उक्त सूची में 'गंग-ग्वाल" नाम भी मिलता है।[४] और, पूर्व कथित तीनों कवियों में किसी की रचना में भी पद नहीं पाए जाते अत: यह कोई चौथे व्यक्ति हो सकते हैं। मीतल जी से पूछ ताछ करने पर भी इस विषय में कोई जानकारी प्राप्त नहीं हो पाई।

प्रस्तुत वर्णन, सुधा-सागर में वर्णित दूसरे कवि-ग्वाल अर्थात् कवि "ग्वालराइ मथुरा बारे" से ही सम्बन्धित है।

इनका सब से पुराना उल्लेख 'निम्बार्क माधुरी' ग्रन्थ में उपलब्ध है:

---

१. सरोज सर्वेक्षण, पृ॰ १२०।

२. हिन्दी विश्व कोष, पृ॰ ७३७।

३. शिव सिंह-सरोज, २ रा सं॰, लखनऊ-१८८१-पृ॰ ३७९।

४. पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ-मथुरा-२०१० वि॰-पृ॰ ३६१-फुट नोट।

यहां उन का (निम्बार्क मत के भक्त कवि का) ही वर्णन आभिप्रेत रहा है:

माधुरी-कार ने कवि का विप्र होना, मथुरा में जन्म लेना, पूर्व जन्म के 'सुकृत' का फल, देवी की कृपा (सरस्वति की तथा यमुना की), एवम् उन के वैष्णव तथा भक्त होने का उल्लेख सपष्ट किया है:

बन्दी विप्र सु वंश जन्म मथुरा पुरी पावन।
विपिन राज बस कीन भक्ति श्री जुगल रिझावन।

पूर्व जन्म कृत पुन्य प्रगट फल विसद सुलीन्हो।
कविता भक्ति अपार कृपा करि देवी दीन्हो[५]।

सुकवि ग्वाल निज वंश कुल धर्म सुवैष्णव प्रगट ह्वै।
कीन्हे जग विस्तार पुनि श्री निम्बार्क पद कमल द्वै[५]।

जाति तथा वर्ण

कवि ग्वाल ने अपनी पहली रचना जमुना लहरी में लिखा है :

"श्री वृषभान कुमारिका त्रिभवन तारिणी नाम।
सीस नवावत ग्वाल कवि सिद्ध कीजिये काम॥१॥

वासी वृन्दा विपन को श्री मथुरा सुखवास।
श्री जग्दम्बे दई हमें कविता विमल विलास॥२॥

अन्त: साक्ष्य के होते किसी अन्य साक्ष्य की आवश्यकता नहीं रह जाती। ग्वाल की लगभग हर एक रचना में यहीं तथ्य दुहराया गया है। अत: यह मानने में कोई आपत्ति नहीं कि ग्वाल-बन्दी-जन जाति के भाट थे। बन्दी-जन ब्रह्मभाटों की एक सुविख्यात श्रेणी है जिसका उल्लेख पुराणों तथा महाभारतादि ग्रंथों में हुआ है। इनकी उत्पति ब्रह्मा के कवि नाम के पुत्र से कही गई है।

---

५. निम्बार्क माधुरी

इनकी रीतियां तथा प्रथाएं सब वही हैं जो ब्राह्मण समाज में प्रमाणित हैं। यह मांस खा लेते हैं किन्तु शराब नहीं पीते।[६] ग्वाल भी अपने को विप्र कहते हैं:

"विदित विप्र बन्दी विसद वरने व्यास पुरान।
सा कुल सेवाराम को सुत कवि ग्वाल सुजान॥३॥[७]"

वंश परम्परा

अपनी दूसरी रचना रसिकानन्द में ग्वाल ने कवि वंस वर्णन शीर्षक से लिखा है :

"तां वंदी के वंस में प्रगटे माथुरराव। पंडित परम सुजान मति सज्जन सुमति सुभाव।
जगन्नाथ जू प्रगट हुए तिन के तनय प्रसंस। बिद्याबोध उदारमति जिन जीते बुधवंस।
तिन के प्रगट सुखद सुत श्रीमन रावमुकन्द। मुरलीधर जी तिन तनय रक्षक श्री ब्रजचन्द।
श्री मुरलीधरराव जू काव्य, छंद, रस लीन। राजा सूरजमल्ल की जाइ सभा बस कीन।
दये अश्व कच्छी तिन्हें हिम्मत बहादर भूप। राज-मान अति ही भए रचना रची अनूप।
श्रीमन सेवाराम जी तिन के सुत अवतंस। काव्य, गान, रस में भए सुहृद उदार प्रसंस।
ग्वाल राव तिन के तनय . . . ॥ ५६-६२॥

पिता का नाम

ऊपर दिए गए संदर्भ में ग्वाल ने अपने पिता का नाम सेवाराम दिया है किन्तु नवनीत जी के पास जो 'रसिकानन्द' की प्रति थी उसमें (सम्भवत: लिखारी के प्रमाद से) ६१वां दोहा न था और जमना-लहरी में दर्ज़ अन्त: साक्ष्य के आधार पर कवि के पिता का नाम सेवाराम मिलता था, इस लिए ग्वाल के जीवन पर अपने लेख में उन्होंने अनुमान दौड़ाया कि या तो मुरलीधर

---

६. लोहिया, बजरंगलाल-राजस्थान की जातियां- कलकत्ता, १९४५-पृ० ११६-११९।

७. जमुना लहरी, हस्त लिखित, निजी संग्रह

और सेवा राम एक ही व्यक्ति के नाम हैं या ग्वाल एक के पुत्र तथा दूसरे के दत्तक पुत्र होंगे। काल के अन्तर को उन्होंने गिनती में ही नहीं लिया अन्यथा तत्काल गुत्थी सुलझ जाती। रसिकानन्द की और जितनी प्रतियाँ देखने को मिली हैं उन सब में पाठ पूरा है अत: सन्देह को अवकाश ही नहीं रहा। डा. ब्रजनारायण सिंह ने भी सेवाराम तथा सेवाराव का भेद न करते हुए सेवाराम नाम ठीक माना है।[८] इन्तखाबे-यादगार में और ग्वाल की रचनाओं में सेवाराम ही मिलता है। फिर भाटों के लिए नाम के पीछे राम लगाने का कहीं कोई निषेध भी तो नहीं व्यर्थ की एंचतान से कुछ अन्तर भी नहीं आता, अत: अन्त: साक्ष्य के आधार पर कवि ग्वाल के पिता का नाम राय सेवाराम ही ठीक बैठता है।

माता का नाम

ग्वाल की माता का नाम किसी ने भी नहीं लिखा। ग्वाल की किसी रचना में भी इस का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। पिता के स्वर्गवास हो जाने के पीछे ग्वाल को जितना दुलार जितनी अगवानी मिल सकी वह माता ही से मिल सकती थी इसलिए इस में तो सन्देह नहीं कि ग्वाल के मन में सब से अधिक श्रद्धा का भाव यदि किसी के प्रति रहा होगा तो अपनी मां के प्रति ही रहा होगा और उस ने किसी न किसी रूप में अवश्य अपनी मां के प्रति अपनी कृतज्ञता अपनी रचना में प्रगट की होगी। कृतज्ञता प्रकाशन का उचित स्थल किसी रचना में या तो मंगल-खण्ड हो सकता है या पुष्पिका। ग्वाल के ग्रन्थों की पुष्पिकाएं इस विषय में सर्वथा मौन हैं किन्तु मंगल के छन्दों में अवश्य कुछ अनुमान दौड़ाने का अवसर मिल जाता है।

मथुरा के श्री भगवान सहाय पचौरी भवेश जी ने एक वार्तालाप में सुझाया कि श्री कृष्ण-जू-को-नख-शिख नाम की रचना में ग्वाल ने जिस ढंग से मंगल में गुरू, जगदम्बा तथा पिता का अभिवादन किया है और फिर आगे

---

८. कविवर पद्माकर और उनका युग-पृ० १८३।

चल कर गुरू तथा कवि-कुल को अभिनन्दित कर पुन: जगदम्बा का स्तवन किया है उस से यह ध्वनि निकलती है कि प्रथम बार जगदम्बिका का उल्लेख माता के नाम का आभास देता है क्योंकि ग्वाल जैसा चतुर शास्त्रज्ञ कवि क्रम भंग का दोषी नहीं ठहराया जा सकता। गुरू के बाद जगदम्बिका तथा उस के बाद पिता की पग बन्दना में, जगदम्बिका पद देवी लखायक न हो कर माता के नाम का लखायक ही हो सकता है। देवी के लिए आगे फिर लिखना

"श्री जगदम्बा की कृपा ता करि भयो प्रकास"

इस पंक्ति में "ता करि भयो प्रकाश" का टुकड़ा (जो विशेष रूप से जन्म का लखायिक हो सकता है) भी निरर्थक नहीं। यहां पुनरुक्ति नहीं बल्कि दो भिन्न व्यक्तित्व हैं जिन की वन्दना की गई है, एक माता है तो दूसरी जगत-माता देवी। यह एक मात्र दिशा संकेत है आग्रह नहीं। अत: कहा जा सकता है कि ग्वाल की माता का नाम जगदम्बा था।

जन्मस्थान तथा निवासस्थान

ग्वाल कवि ने लगभग अपने हर ग्रन्थ में सूचित किया है :

"वासी वृन्दा विपन को श्री मथुरा सुखवास"

और कालियाघाट पर उन की पैतृक हवेलियों के अवशेषों को आज भी देखा जा सकता है। मथुरा के चूना-कंकड़ मुहल्ले में तो ग्वाल की हवेली अभी ज्यों की त्यों बनी है। अत: यही अनुमान होता है कि ग्वाल का जन्म वृन्दावन में ही हुआ होगा, किन्तु निम्बार्क-माधुरी में श्री बिहारी शरण ने भी लिखा है : "बन्दी विप्र सुवंश जन्म मथुरापुरी पावन" इस आधार पर ग्वाल का जन्म मथुरा में हुआ, मानने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए। मथुरा की हवेली ग्वाल कवि के पूर्वजों के समय से चली आ रही थी, स्वभाविक ही था कि वृन्दावन के मुकाबले में ग्वाल के जन्म के समय उन के माता-पिता का निवास मथुरा में ही रहा हो, ऐसे समय बुद्धिमान लोग शहर में रहना अधिक पसंद

करते हैं जहां स्वास्थ्योपचारादि की सुविधा सहज सुलभ हो सकती हैं। अत: यह मानना ही समीचीन होगा कि ग्वाल कवि का जन्म स्थान मथुरा तथा उन का पैतृक निवास स्थान वृन्दावन में था। परिवार सम्पन्न था और सुख सुविधा के लिए मथुरा में अधिक रहता था।

जन्म तिथि

कवि ग्वाल की जन्म तिथि के विषय में किसी अन्त: साक्ष्य का अभाव है। ग्वाल कवि का जीवन वृत्त सर्वप्रथम उर्दू कवि अमीर मीनाई ने अपने "तज़करा इन्तखाबे-यादगार" में दिया था। ग्वाल की जन्म-तिथि तो उस में भी नहीं दी गई परन्तु ग्वाल की निधन तिथि दे कर लिखा है कि उन की मृत्यु ६५ वर्ष की आयु में हुई थी, इस आधार पर ग्वाल का जन्म सन् १८०२ के आसपास बैठता है। ग्वाल का देहावसान रामपुर में हुआ, जहां मीनाई साहब उन दिनों अदालती थे। एक ही दरबार के आश्रित होने के नाते ग्वाल तथा मीनाई साहब में निज के सम्पर्क की सम्भावना हो ही सकती है और मीनाई साहब ने जो कुछ लिखा होगा वह या तो ग्वाल के मुंह से सुनी बातों के आधार पर लिखा होगा अथवा अन्य विश्वस्नीय सूत्रों से पूछ ताछ कर के लिखा होगा। एक समकाली के नाते उन से यह आशा की ही जा सकती है।

हिन्दी में ग्वाल के जीवन वृत्त की पहली विस्तृत सूचना श्री नवनीत चतुर्वेदी द्वारा लिखवाए गए एक लेख से प्राप्त होती है।[१] इस लेख में ग्वाल की जन्म की तिथि मार्गशीर्ष शुक्ला २, सम्वत् १८४८ दी गई है। नवनीत जी ने अपने बचपन में ग्वाल को देखा तथा कवितापाठ करते सुना था किन्तु ग्वाल की मृत्यु के समय नवनीत १० वर्ष के थे और उन का लेख ग्वाल की मृत्यु के ६२ वर्ष बाद लिखा गया था। नवनीत जी ने अपनी सूचना का आधार नहीं बताया, अवश्य ही कोई जन-श्रुति अथवा अटे-सटे का अनुमान आधार

---

१. विशाल भारत, अप्रैल, १९२९।

रहा होगा।

श्री प्रभुदयाल मीतल का विश्वास है कि 'जमुना-लहरी' तथा 'रसिकानन्द' जैसी रचना के लिए काफी प्रौढ़ अनुभव दरकार है जो २०-२१ वर्ष के युवक में सुलभ नहीं हो सकता अत: उन के मत से नवनीत जी की दी हुई तिथि सूचना दरुस्त है।[१०]

मीतल जी का तर्क अकाट्य नहीं ठहरता जब हम देखते हैं कि देव कवि ने १६ वर्ष की आयु में भावविलास रचा था[११] और फूलमंजरी की रचना के समय मतिराम की आयु भी १६ वर्ष के ही आस पास मानी गई है।[१२] यह मान लेना भी कठिन जान पड़ता है कि ग्वाल ३०-३१ वर्ष की आयु तक हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे हों क्योंकि जमुना-लहरी से पहले उनकी कोई भी रचना सामने नहीं आती। २०-२१ वर्ष की अवस्था काम काज में लग जाने की अवस्था है। ग्वाल के पिता का देहान्त उस समय हो गया था जब ग्वाल ८ वर्ष के बालक थे और घर में कोई दूसरा कमाने वाला भी नहीं था। इसलिए अनुमान होता है कि ८-१० वर्ष काशी में विद्यार्जन कर ग्वाल २०-२१ वर्ष में स्वतन्त्र रचना करने तथा जीविका की तलाश करने लगे होंगे। जमुना-लहरी, नेह-निबाह तथा रसिकानन्द उनकी युवा अवस्था की रचनाए रही होंगी। जब तक कोई अकाट्य प्रमाण विपरीत मत की पुष्टि में न मिल जाय हम उनका जन्म १८०२ में ही मानने के पक्ष में हैं। कवि किंकर ने ग्वाल के जन्म का साल १८५१ विक्रमाब्द माना[१३] है और डा. शिवलाल जोशी ने १८२३

---

१०. कविग्वाल, पृ० १०६।

११. नगेन्द्र-देव और उनकी कविता-द्वि. सं० पृ० ३९।

१२. महेन्द्र-मतिराम कवि और आचार्य-१९६०-दिल्ली-पृ० २३।

१३. ग्वाल रत्नावली-इलाहाबाद-१९४५-पृ० १।

लिखा है।[१४] कवि किंकर ने अपने मत का आधार नहीं बताया उनकी और जोशी जी दोनों की तिथियां सर्वथा गलत है, क्योंकि जमुना लहरी की रचना सं॰ १८२२ में हुई थी।

बाल्यावस्था और शिक्षा-दीक्षा

ग्वाल ८ वर्ष के भी न होने पाए थे कि पिता का स्वर्गवास हो गया और ग्वाल के पालन-पोषण का सारा भार माता पर आ पड़ा। मां उन्हें लेकर पैत्रिक निवास स्थान वृन्दावन चली गई। आरम्भिक शिक्षा के लिए ग्वाल वृन्दावन के दयालाल गोस्वामी "दयानिधि" जी के पाठशाला में जाने लगे। यहां हरदेव नाम के एक सहपाठी पर, (जो एक धनिक परिवार से था) गुरू की अधिक अनुकम्पा ने, ग्वाल में हीनभाव को जागृत किया और वह अध्यन से जी चुराने लगे। एक बार किसी कारणवश गुरू ने जो उनकी भर्त्सना की तो ग्वाल, सदा के लिए, उस पाठशाला से उपराम हो गए।[१५] लाचार माता उन्हें लेकर काशी चली गई। बरेली के खुशालराय बन्दीजन उन दिनों काशी में थे, वे ग्वाल के मामा बताए जाते हैं। ग्वाल उन से काव्य की शिक्षा पाने लगे।[१६] ग्वाल ने अपनी रचना 'नख-शिख' में खुशाल राय का गुरू रूप में स्मर्ण किया है।[१७] काशी से विद्या पारंगत होकर (कहा जाता है,) ग्वाल ने कुछ दिनों, स्वामी दयानन्द के गुरू श्री विरजानन्द दण्डि से, 'काव्य-प्रकाश' पढ़ा था और पीछे गोस्वामी दयानिधि जी से हरदेव के मुकाबले में काव्य-परीक्षा दी थी।[१८]

दयानिधि जी ग्वाल, हरदेव तथा नवीन के विद्यागुरू बताए गए हैं, जब कि इनमें से किसी ने भी उन का गुरू रूप में स्मरण नहीं किया। जान पड़ता

---

१४. रीति कालीन साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि-देहरादून-१९६२-पृ॰ २६३।

१५. नवनीत चतुर्वेदी-विशाल भारत-अप्रैल, १९२९-पृ॰।

१६. अमीर मीनाई-इन्तखाबे-यादगार।

१७. "श्री खुशाल कवि मुकट मणि तां को शिष्य विकास"

१८. नवनीत-पूर्वोक्त।

है दयालाल जी की पाठशाला आरम्भिक अध्ययन मात्र करवाती थी अत: उनके किसी शिष्य ने भी अपने काव्य-गुरू के साथ-साथ इनका उल्लेख करना ज़रूरी नहीं समझा। वैसे ग्वाल और नवीन दोनों की रचनाओं में दयानिधि जी के छन्द किसी न किसी रूप में आ जरूर गए हैं।

खुशाल राय को, ग्वाल का गुरू, मीनाई ने भी लिखा है और ग्वाल ने स्वयम् भी उनका स्मरण गुरू रूप में किया है अत: इस विषय में सन्देह की गुंजायश नहीं। विरजानन्द द्वारा साहित्य शास्त्र की शिक्षा दी जाती थी इसका कोई प्रमाण नहीं मिला। ग्वाल ने उनसे काव्य-प्रकाश पढ़ा था इसका भी प्रमाण नहीं मिलता। नवनीत जी के अतिरिकत किसी दूसरे लेखक ने इस कथन का अनुमोदन भी नहीं किया। वैसे भी विरजानन्द का मथुरा में आगमन और निवास १८९३ वि० से पूर्व सिद्ध नहीं होता, तब तक ग्वाल कई ग्रन्थों के रचयिता हो चुके थे। इसलिए ग्वाल और विरजानन्द जी में, गुरू शिष्य का नाता नहीं सिद्ध किया जा सकता। नवनीत जी ने यहां भी अपनी सूचना का कोई आधार नहीं बताया और उनकी यह धारणा भी असत्य तथा भ्रांति जनित सिद्ध होती है। ग्वाल का दीक्षागुरू भी नवनीत जी ने (विरजानन्द का गुरूभाई) शिवानन्द बताया है। यह कल्पना भी सत्य नहीं सिद्ध की जा सकती। हरदेव के साथ प्रतिद्वन्द्वता की बात भी कुछ इसी प्रकार की जान पड़ती है। ग्वाल कवि ने कहीं इस का उल्लेख नहीं किया।

काव्योदय, जीविका की तलाश और आश्रयदाता

विद्याध्ययन से निवृत्त होकर ग्वाल ने काव्य-रचना का आरम्भ किया अत: मंगल रूप में संवत् १८२२ की कार्तिक पूर्णिमा को "जमना-लहरी" नाम से देवी तुल्य जमना जी को १०८ कबित्तों की श्रद्धा-माला समर्पित की। इसी साल, वे जीविका की तलाश में निकल पड़े। ग्वाल के गुरू भाई कवि गोपाल सिंह नवीन उन दिनों नाभा के राजा जसवन्त सिंह के आश्रित थे, ग्वाल ३२ छन्दों की एक छोटी सी रचना 'नेह-निबाह' नाम की भेंट लेकर

नवीन से जा मिले। नवीन के वसीले से, ग्वाल को भी दरबार में जगह मिल गई। महाराजा के आदेश से उन्होंने 'रसिकानन्द' ग्रन्थ चैत्र मास की श्यामा द्वादशी को प्रस्तुत किया। तत्कालीन दरबारी-काव्य, प्रतिभा के मुकाबले पर, विद्वता की अधिक अपेक्षा रखता था अत: उदीयमान कवियों की परीक्षा उनसे काव्य शास्त्र के किसी अंग पर ग्रन्थ लिखवा कर अथवा शास्त्रार्थ द्वारा की जाती थी। ग्वाल को भी इसी रास्ते से होकर निकलना पड़ा। राजा जसवन्त सिंह स्वयं भी कवि थे।

राजा जसवन्त सिंह[१९] के आश्रय में रहते, कवि ग्वाल का साथ, राजा के बड़े बेटे, कंवर रणजीत सिंह से हो गया। कंवर साहब और राजा साहब में, विमाता-पुत्र देवेन्द्र सिंह को लेकर, मनो मालिन्य चल रहा था। कंवर साहब चाहते थे कि किसी प्रकार उन का मामला महाराजा रणजीत सिंह अपने हाथ में लेकर सुलझा दें। कंवर साहब महाराजा रणजीत सिंह के ममेरे भाई थे अपितु संकोच का कारण यह था कि सतलुज के पूर्वी प्रदेश के राज्य अंग्रेज़ी संरक्षण में आ चुके थे। अपने मन्तव्य की प्राप्ति के लिए, कंवर साहब ने सरदार लहणा सिंह मजीठिया को वसीला बनाना चाहा था। ग्वाल कंवर रणजीत सिंह के वकील बन कर सरदार लहणा सिंह के पास अमृतसर पहुंचे और अपनी नई रचना हम्मीरहठ उनको समर्पित की। ग्वाल अपने लक्ष्य में सफल भी हुए। सरदार लहणा सिंह ने कुंवर साहब तथा महाराजा साहब में मुलाकात भी करवा दी किन्तु भाग्य की विडम्बना कि जब सब कुछ ठीक हो जाने की स्थिति आने वाली थी तब कंवर साहब का अचानक स्वर्गवास हो गया और बात बनते-बनते बिगड़ कर रह गई। अब ग्वाल सरदार साहब ही

१९. ना. प्र. सभा काशी द्वारा प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थों के संक्षिप्त विवरण में जसवन्त सिंह बघेला (त्रिरवांनरेश) को ग्वाल कवि का आश्रयदाता बताया गया है जो ठीक नहीं। डा॰ किशोरी लाल गुप्त ने 'सरोज सर्वेक्षण' में (पृ॰ ३०५ पर) इस भूल का यथोचित खण्डन कर दिया है।

के आश्रित हो कर अमृतसर में रह गए।

सरदार लहणा सिंह मजीठिया फारसी, अरबी तथा संस्कृत के श्रेष्ठ विद्वान थे, ये गणित तथा खगोल के विशेषज्ञ थे। इनके आश्रय में अनेक गुणी पण्डित तथा कवि रहा करते थे। इनके आश्रित कवियों में एक नाम कवि मेघ सिंह का है। इन्हीं सरदार साहब के वसीले से ग्वाल महाराजा रणजीत सिंह के दरबार तक पहुंचे और अप्रत्याशित मात्रा में धन तथा सम्मान पाया। मीनाई साहब का यह कथन कि "बाद चंद रोज़ के पंजाब जा कर महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में नौकर हुए।" केवल इतना ही ज़ाहिर करता है कि लाहौर में पहुंच कर ग्वाल को उनकी आकांक्षा के अनुकूल मान सम्मान मिला। पंजाब से मुराद उन दिनों लाहौर दरबार था। बाकी राज्य अंग्रेज़ों के संरक्षण में आ जाने से हिन्दुस्तान में गिने जाते थे।

सरदार लहणा सिंह मजीठिया वही व्यक्ति हैं जिनको नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्टों में मजीठ के स्वामी लहणा सिंह अथवा स्वामी लहणा सिंह कहा गया है। महाराजा रणजीत सिंह के दरबार से इन्हें जागीर मिली हुई थी और 'कसीरूलइक्तिदार" की व्यक्तिगत उपाधि भी प्राप्त थी। यह १८४४ तक रावी तथा सतलुज के बीच के पहाड़ी प्रदेश के नियन्ता भी रहे थे। ग्वाल-कवि, हम्मीर हठ की रचना के समय (१८८१ वि०) से कवि-दर्पण की रचना के समय (१८९१ वि०) तक अमृतसर में रहे थे। तत्पश्चात् ही किसी समय वह लाहौर आकर महाराजा रणजीत सिंह के दरबारी कवियों में शामिल हो गए।

अमीर मीनाई ने लिखा है "लाहौर में ग्वाल को २० रु० रोज़ाना मिलते थे और महाराजा के हज़ूर में कुरसी पर बैठने की अनुमति प्राप्त थी"।[२०] किन्तु इस कथन की किसी स्वतन्त्र साक्ष्य द्वारा प्रामाणिकता सिद्ध नहीं होती

---

२०. इन्तखाबे-यादगार।

हो सकता है यह सूचना उन्हें खुद ग्वाल से ही मिली हो। महाराजा रणजीत सिंह काल में इतनी बड़ी तनखाह का एक कवि को मिलना असम्भव तो नहीं था किन्तु असंगत कुछ ज़रूर जान पड़ता हैं जब हम देखते हैं कि सेना के जर्नैलों को भी महाराजा के शासन काल में ४००-५०० रु॰ मासिक वेतन मिलता था।[२१] यह मान लेना अनुचित न होगा कि, ऐसे राज्य में जिस की शक्ति तथा दृढ़ता का आधार केवल सैनिक शक्ति थी, राज-कवि को सेना के जर्नैल से अधिक वेतन दिए जाने की बात कुछ जंचती नहीं। अत: दरबार में महाराजा के हज़ूर कुर्सी पर बैठने की बात भी कुछ वैसी ही है। महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में कुर्सी पर बैठने का अधिकार केवल भाई राम सिंह, भाई गोविन्द राम तथा राजा हीरा सिंह का बताया गया है।[२२] हां, महाराजा शेर सिंह के दरबार में कवि-ग्वाल को भी यह सम्मान मिल सका हो तो असम्भव नहीं अन्यथा उसका भी कोई उल्लेख नहीं मिल पाया। महाराजा शेर सिंह और उनके पीछे महाराजा दलीप सिंह काल में डोगरा परिवार का बोल बाला था और ग्वाल राजा हीरा सिंह, प्रधान मन्त्री, के प्रमुख सलाहकार पण्डित जल्हा के विशेष कृपा पात्र तथा प्रशंसक दिखाई देते हैं।[२३]

प्रश्न किया जा सकता है कि यदि ग्वाल को लाहौर दरबार से तथा-कथित वेतन नहीं मिलता था तो उन के पास इतनी सम्पत्ति, सोने की ताम झाम आदि कहां से आ गई। इस का सीधा उत्तर तो सम्भवत: कहीं नहीं मिलता परन्तु कुछ टेढ़े मेढ़े संकेत अवश्य सुलभ हैं जिन के आधार पर वस्तु स्थिति का अनुमान किया जा सकता है। कहा जाता है कि एक बार महाराजा रणजीत सिंह ने रात्रि में स्वप्न देखा कि खालसा दल के बूढ़े निहंग उसकी भर्त्सना

---

२१. फौजा सिंह, डा. मिलिटरी सिस्टम आव् दि सिखस-१९६४-दिल्ली-पृ॰ १६८।

२२. मोहन लाल-ट्रैवल्ज़ इन दि पंजाब-१८४६-लन्दन-पृ॰ १२।

२३. देखिए ग्वाल कृति विजय-विनोद छंद संखया:

कर रहे हैं। ज्योतिष्यों ने निर्णय दिया कि महाराजा से कोई अवज्ञा हुई है और उपचार रूप में सुझाया गया कि मथुरा या काशी के किसी ब्राह्मण को भारी दान दक्षिणा तथा महाराजा की एक जड़ाऊ स्वर्ण प्रतिमा देकर शहर से काले भैंसे पर बिठा कर बाहर निकाला जाये तो ग्रह शान्ति हो सकती है।

उस समय मथुरा के रहने वाले एक ब्राह्मण की उपस्थिति दरबार में थी तथा तत्काल यह दान की प्रक्रिया सम्पन्न की गई।[२४] मथुरा वासी ग्वाल के सिवा उस समय कोई दूसरा ऐसा ही व्यक्ति दरबार में उपस्थित रहा दीख नहीं पड़ता। महाराजा के निधन के समय भी जो २० लाख का दान किया गया[२५] था उसमें से भी ग्वाल को भारी हिस्सा मिला होगा।

महाराजा रणजीत सिंह के आश्रय में रह कर ग्वाल कवि ने कौन कौन सी रचना की थी इसका ठीक से कुछ व्योरा नहीं मिलता। कवि दर्पण और विजय-विनोद के बीच की किसी रचना का कोई उल्लेख कहीं पर नहीं। नवनीत चुतुर्वेदी जी ने ग्वाल का एक छन्द उद्धत किया है जिसे वह उस समय पढ़ा गया बताते हैं जब ग्वाल दरबार में पहली बार उपस्थित हुए थे। वह छन्द नीचे प्रस्तुत किया जाता है:-

"मंडन मही के महाराजा रणजीत सिंह
कृपा कै बताओ मोय वहम अकूत है।
झिल मिल के झल्ला अल्ला अल्ला कै हल्ला करैं
त्यों ही कट कल्ला गल्ला होत एकसूत हैं।
ग्वाल कवि जन्त्र है कि मन्त्र कोऊ मारवे कौं
वर है गिरीस को कि बस जमदूत है।
कर में कि मूंठ में कि म्यान में कि तेग़ में कि
का में काबलीन की कटा की करतूत है॥

२४. लतीफ-हिस्ट्री आफ पंजाब-२ सं० १९६४-नई दिल्ली-पृ० ४६६।

२५. उमदत्तत्वारीख, अंग्रेज़ी अनुवाद, व्ही, एन. सूरी, दिल्ली, १९६१-प० ६८८-६९४।

एक फुटकर ढंग के छन्दों की पुस्तक[२६] पिछले दिनों श्री शमशेर सिंह अशोक से मिली है जो खण्डित है और जिसमें कुछ ऐसे कबित्त हैं जो समय-समय पर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की प्रशंसा आदि में कहे गए थे। एक साधारण कोटि की रचना (मगस-नामा के ढंग की) मक्खी-नामा भी उसी संग्रह में शामिल है। उसके सिवा कोई दूसरी रचना नहीं मिल पाई जिसे तत्कालीन माना जा सके।

ग्वाल की रचनाओं में, एक अष्टक उर्दू की सी भाषा में लिखा मिलता है। यह अष्टक भक्त-भावन ग्रन्थ में संगृहीत है और कहा जाता है कि इसकी रचना टौंक के नवाब के आदेश से की गई थी। इस रचना का रचना-काल नहीं दिया गया। हमारा अनुमान है कि यह रचना उसी समय हुई जब ग्वाल रणजीत सिंह के दरबार में थे। हमारा अनुमान इस आधार पर है कि टौंक के नवाब वज़ीरुद्दौला मुहम्मद वज़ीर खां साहब १८३४ से १८६५ तक टौंक के शासक रहे और ग्वाल भी लाहौर दरबार में १८३४-४४ तक रहे थे। इस काल में नवाब साहब ने सय्यद अहमद बरेलवी के साथियों को अपने यहां सीमान्तक प्रदेश से बुला कर वसा लिया था, और सय्यद साहब सिक्खों के विरुद्ध जहाद करते हुए मारे गए थे। महाराजा रणजीत सिंह इनके साथियों की गति-विधि से अवगत रहना चाहते थे इस लिए यकीन किया जा सकता है कि ग्वाल को टौंक से आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए ही भेजा गया होगा और उन्होंने इस दृष्टि से कि नवाब उनका उर्दू रचना का प्रयास देखकर प्रसन्न भी हों और कृष्णोपमा का आग्रह देखकर उनको अपने यहां ठहराना भी न चाहें, यह रचना की होगी। नवाब वज़ीर खां साहब के कृष्ण प्रेम की कोई चर्चा कहीं पर नहीं देखी सुनी गई। सय्यद साहब के साथी लोगों

---

२६. अब यह पुस्तक गुरू नानक देव यूनिवर्सिटी की लायब्रेरी में पहुंच गई है। इस पर कुछ शोध कार्य भी हुआ है। पुस्तक का नं १४१९ है।

को अपने हां बसाने में उनका इसलाम के प्रति विशिष्ठ मोह तो ज़ाहर होता ही है। यह ग्वाल के व्यक्तित्व का राजनैतिक उपयोग ही समझना होगा। १९६५ के बाद ग्वाल रामपुर दरबार में थे अत: उनके टौंक के अगले नवाब अमीनुद्दौला के यहां जाने का प्रश्न ही नहीं उठता। ऐसे ही पहले नवाब अमीर अली खां साहब के यहां जाने की बात भी नहीं जंचती क्योंकि उन दिनों ग्वाल नाभा तथा अमृतसर में मान-सम्मान पा रहे थे।

महाराजा रणजीत सिंह के परलोकगमन के पश्चात् भी ग्वाल लाहौर दरबार में बने रहे परन्तु महाराज खड़क सिंह का राज्य काल शायद ग्वाल के लिए अधिक सुख का नहीं रहा। महाराज के विषय में ग्वाल ने विजय विनोद में केवल एक कबित्त और पांच दोहे लिखे हैं[२७] जिन में भी दो दोहों में कुंवर नौ निहाल सिंह को बुला कर राज्य कार्य सौंपे जाने की, एक दोहे में कुंवर साहब का राजा ध्यान सिंह के परामर्श से काम करने की और एक दोहे में महाराजा खड़क सिंह के निधन की तिथि ही कथित है। कबित्त के भी केवल प्रथम दो पद महाराजा का उल्लेख करते हैं :

> "खड़ग सिंह महाराज जब ते संभार्यो होश
> तब ही ते राखी हुती वृति तपसीन की।
> वैसी ही हिय की वृति राखी राम रटना में
> वृति बदली न कछु तखत नशीन की॥" . . .। १२०॥

नवनीत चतुर्वेदी जी ने अपने लेख में भी श्री विश्वम्भर नाथ खत्री के श्री कृष्ण संदेश में छपे एक लेख का अंश उद्घृत किया है जिसमें लिखा था कि:

"नाभा से विदा लेकर घर जाते समय रास्ते में लाहौर ठहर गए, वहां शेर सिंह से भेंट हुई। उस समय महाराजा खड़क सिंह गद्‌दी पर थे। धनतेरस

---

२७. - थं. सं. १२०-१२४।

का दिन था। सत्कार से प्रसन्न होकर ग्वाल ने आर्शीवाद का कबित्त लिखा जिस का अन्तिम चरण था :

धन तेरस न आई तो को आई पादशाही है[२८]।"

देखने पर यह घटना स्वाभाविक तथा साधारण दिखाई देती है, किन्तु वास्तव में यह एक षड्यन्त्र की कड़ी मात्र है जो उस समय डोगरा परिवार द्वारा अपने प्रभुत्व को येन केन प्रकारेण बनाए रखने तथा हो सके तो राज्य पर अधिकार जमा लेने की धुन में रचा जा रहा था। ग्वाल उन शतरंज की चालों में एक मुहरा भर बनाए गए थे। इस की असलीयत जानने के लिए हमें ग्वाल द्वारा ही रचे गए ग्रन्थ विजय-विनोद को ज़रा ध्यान से खोजना होगा। लाहौर में उन दिनों कंवर नौ-निहाल सिंह की माता अपनी गर्भवती बहू के नाम पर एक कौंसल द्वारा शासन चला रही थी जिसके प्रधान कुंवर शेर सिंह तथा एक सदस्य राजा ध्यान सिंह थे किन्तु जिसमें दोनों ने कभी कोई सहयोग न दिया था बल्कि सब प्रकार से कौंसल के विरुद्ध अवज्ञा की भावना को जगाया जा रहा था। क्योंकि राजा ध्यान सिंह, कुंवर शेर सिंह को सिंहासनासीन करने का वचन दे चुके थे और शेर सिंह के राजा बनाए जाने में ही डोगरा प्रभाव की स्थिरता निहित थी।

कवि ग्वाल ने, जहां विजय विनोद में राजा ध्यान सिंह, राजा हीरा सिंह और राजा गुलाब सिंह तथा शेर सिंह के बीच की मिली-भुगत का चित्रण[२९] किया है और दोनों पक्षों के बीच समाचार लाने ले जाने वालों का वर्णन किया है वहां महाराजा शेर सिंह से अपनी इस आर्शीवाद वाली मुलाकात का कोई उल्लेख नहीं किया। अत: यह निश्चित है कि वह इस घटना को कोई महत्व नहीं देते थे, अगर देते और यह सचमुच की भविष्यवाणी होती तो ग्वाल इस का गोपन न करते। नाभा से लौटते समय लाहौर रुकने की बात सम्भव

---

२८. विशाल भारत, अप्रैल १९२९, पृ. ४३८।२९.

२९. छं सं. १३४-२४४।

है खत्री जी की भूल हो। नाभा से मथुरा जाते लाहौर रास्ते में नहीं आता। ग्वाल उन दिनों नाभा के नहीं लाहौर के दरबारी कवि थे।

महाराजा शेर सिंह के शासन में राज काज की सारी सत्ता तो राजा ध्यान सिंह और उनके पुत्र हीरा सिंह डोगरा के हाथ में थी और महाराजा दिन रात सुख समृद्धि के उपभोग में मस्त रहते थे। कवि ग्वाल अपने भविष्य को डोगरा परिवार के भविष्य के साथ जोड़ चुके थे अत: उनका मान सम्मान भी दरबार में बढ़ गया होगा। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि दरबार में इन को तथा कथित कुर्सी लगाने का अधिकार भी मिल गया था। यद्यपि कोई भी सरकारी अथवा साहित्यक रिकार्ड अभी तक ऐसा न मिला जिस से कि ग्वाल कवि के दरबार में कुर्सी लगा कर बैठने की पुष्टि होती हो।

श्री प्रभुदयाल मीतल ने अपनी पुस्तक "ग्वाल कवि" के पृष्ठ २१-२२ पर लिखा है कि ग्वाल कवि ने एक बार महाराजा शेर सिंह के तोपखाने तथा सेना प्रबन्ध की उपमा में निम्नलिखित कबित्त पढ़ा था :

"फौजें महाराजा सिरी शेर सिंह जू की सजीं
घन घहरात गड़ गड़ गड़क्यौ करैं।
पलटन की पंगति त्यौं पलक न फेरिबै परैं
फरैं फुरतीले फड़ फड़ फड़कयौ करैं।

ग्वाल कवि कहै चलैं तोप की तड़ाड़ैं तेज़
सड़र सड़र सड़ सड़ सड़क्यौ करैं।
सड़ड़ तड़ड़ ताड़ तड़ड़ तड़ड़ ताड़
ततड़ ततड़ तड़ तड़ तड़क्यौ करैं॥"

महाराजा को यह छन्द बहुत ही पसंद आया और प्रसन्न होकर उन्होंने कवि को पीले रंग का पशमीने का एक बहुमूल्य दोशाला पारितोषक दिया। ग्वाल ने तत्काल कृतज्ञता ज्ञापक दूसरा कबित्त पढ़ा :

"उद्धत प्रतापी महाराजा शेर सिंह वीर
बकस्यौ दुसाला आला अजब नवीनौ है।

केसर की क्यारी सौं निकारी मानौ देह जां की
तोल मोल भारी कौ हजारी ये नगीनौ है।
ग्वाल कवि ओढ़त दुफेर दै दै नीठि नीठि
दीठ न परत पर करत पसीनौ है।
और बकसीस तौ लपेटी जाय बुचका में
तेरी बकसीस ने लपेट मोय लीनौ है॥[३०]

महाराजा शेर सिंह की तख़तनशीनी के साथ ग्वाल की प्रतिष्ठा बढ़ी होगी इसमें संदेह नहीं। ग्वाल की रचनाओं का उल्लेख करते समय प्रभु दयाल मीतल जी ने एक रचना 'शेर-सिंह-विनोद' नाम की गिनाई है अपितु यह रचना अथवा उसका कोई प्रामाणिक उल्लेख अभी तक कहीं पर भी देखने में नहीं आया। ग्वाल की रचना 'साहित्यानन्द' में लगभग उसकी पुरानी सभी रचनाओं से उदाहरण दिये गये हैं किन्तु इस नाम के किसी ग्रन्थ का उल्लेख नहीं हुआ।

महाराजा शेर सिंह की हत्या के पश्चात् बालक महाराजा दलीप सिंह को गद्दी पर बिठा कर राजा हीरा सिंह डोगरा प्रधान मन्त्री पद संभाल कर सर्वो-सर्वा हो गया अत: शासन पंडित जल्हा के परामर्श पर चलने लगा, तो ग्वाल ने 'विजय विनोद' जल्हा के ही आदेश पर रचा। जल्हा पण्डित सिक्ख सरदारों को बहुत दिन अपने साथ नहीं रख सका, राजमाता के प्रति उसका दुर्व्यवहार उसकी बात बिगाड़ने का कारण बन गया। थोड़े ही दिनों में राजा हीरा सिंह तथा जल्हा पण्डित को जान बचा कर भागने की आवश्यकता हुई किन्तु वे राह में ही घेर कर मार डाले गए। राजा हीरा सिंह की हत्या दिसम्बर, १८४४ में हुई।

ग्वाल के पांव अब और दिन न जम सकते थे, स्वयं राज्य की नींव

---

३०. पाठान्तर : और की सौगात तो लपेटी जाय बुकचा में रावरी सुगात ने लपेट मोय लीनो है।

डगमगाने लगी थी। ग्वाल लाहौर से मण्डी के राजा बलबीर सेन के पास चले गए। अपने दोनों बेटे भी वहीं बुलवा लिए। राजा बलबीर सेन ने उन्हें एक गांव जागीर में दिया बताया जाता है। हमने मण्डी जा कर पता किया मगर उक्त गांव का नाम नहीं जाना जा सका। पुराना सब रिकार्ड जल चुका है।

मथुरा के श्री मदन मोहन जी चतुर्वेदी ने राजा बलबीर सेन से ग्वाल के सम्पर्क की जो कथा सुनाई है वह इस प्रकार है कि "एक बार महाराजा रणजीत सिंह ने राजा को कैद में डाल दिया और चतुर्वेदी जी के पितामह, जो मण्डी राज्य के कुल-पूज्य थे, उन्हीं दिनों अपनी पूजा आदि लेने मण्डी गए तो सारी बात सुन कर उन्होंने रानियों से कहा कि यदि उन्हें लाहौर पहुंचाने का प्रबन्ध हो जाए तो राजा को स्वतन्त्र करवाने का साधन हो सकता है। लाहौर पहुंचा दिए जाने पर उन्होंने ग्वाल से मिल कर स्थिति पर विचार किया। ग्वाल ने अगले दिन दरबार में एक छन्द[३१] पढ़ा जिसका भाव था कि जिन लोगों ने श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी की सेवा की उन्हें ही महाराज के राज्य में कारावास भोगना पड़ रहा है। महाराजा के पूछने पर सारी बात ज़ाहिर हुई तो राजा को छोड़ देने का हुकम तत्काल हो गया। अगले रोज़ फिर ग्वाल ने महाराजा को प्रसन्न कर के राजा बलबीर सेन का राज्य भी वापिस दिलवा दिया, तभी से राजा ग्वाल का आभार मानते थे।" महाराजा रणजीत सिंह द्वारा राजा बलबीर सेन के कैद किए जाने की कथा का ऐतिहासिक आधार नहीं मिला। परन्तु कंवर नौनिहाल सिंह के आदेश से राजा बलबीर सेन राज्य कर न चुकाने के दोष में ज़रूर पकड़े गए थे और महाराजा शेर सिंह ने उन्हें मुक्ति प्रदान की थी। नामों के फेर बदल से यह कथा सत्य मानी जा सकती है। इसमें सन्देह नहीं कि ग्वाल मण्डी राज्य में रहे थे। १८४५-४६ के बीच

---

३१. छन्द का पाठ नहीं मिल सका।

उन्होंने राजा बलबीर सेन के नाम पर एक अलंकार ग्रंथ 'बलबीर विनोद' रचा था। यह ग्रन्थ तो अब नहीं मिला परन्तु इस के उदाहरण 'साहित्यानन्द' में मिलते हैं।

नवनीत जी ने लिखा है कि "लाहौर में गृहयुद्ध छिड़ने पर ग्वाल मण्डी सुकेत चले गए। वहीं अपने दोनों पुत्र (खूब चन्द व खेम चन्द) बुला लिये। यहां पर ग्वाल को जीविका के लिए एक गांव भी मिला था। फिर खूब चन्द को साथ लेकर मथुरा आ गए।" तब आगे चल कर लिखा है "कविता कौमुदीकार ने खूबचन्द को रूपचन्द लिखा है और खेमचन्द को बड़ा भाई माना है जो वास्तव में छोटा था। खूबचन्द की मृत्यु छोटी अवस्था में हो गई थी। खेम चन्द ने एक खत्रानी के प्रेम में पड़ कर लोक लाज त्याग दी। अपनी स्त्री को भी छोड़ दिया। वह बाद में मथुरा ग्वाल जी के पास आकर रहने लगी।"[३२]

नवनीत जी का यह कथन अन्त: विरोध से दूषित है। इसमें पहले तो कहा गया है कि ग्वाल जी ने दोनों पुत्र मण्डी बुला लिये और फिर कहा है कि खूब चन्द, जो कि दूसरे भाई खेम चन्द से बड़ा था, की मृत्यु छोटी उमर में हो गई थी। मण्डी में खेम चन्द को विवाहित दिखाया गया है। यदि खेम चन्द छोटे थे तो उनसे पहले खूब चन्द का ही विवाह हुआ होना चाहिए था और उनकी विधवा पत्नी का भी कोई ज़िकर आता। परन्तु ऐसा नहीं हुआ। अत: हम यह मानने पर विवश हैं कि कौमुदीकार का मत (कि खूब चन्द छोटे थे) ठीक मालूम पड़ता है। नाम का भेद अवश्य खटकता है। हो सकता है रूप चन्द कहीं लिखने की गल्ती से ही हो गया हो। त्रिपाठी जी से एक बार हमने पूछा भी था तो उन्होंने यही कहा था कि "अकसर हम नोट उर्दू अक्षरों में भी लेते रहे हैं और शिकस्ता उर्दू की लिखावट में यह फर्क पड़

---

३२. -विशाल भारत, अप्रैल १९२९।

जाना असम्भव नहीं था। उन्होंने यह भी कहा था "कि यदि समय पर हमारा ध्यान किसी ने इस अन्तर की ओर दिलाया होता तो सुधार हो सकता था। मुझ से जो बन पड़ा मैनें भरसक सचेत रह कर किया था। इस बुढ़ापे में अब क्या-क्या कर सकता हूँ? नये खोज करने वाले सुधार लें।... मेरा लिखा ब्रह्मा का वाक्य तो नहीं जो सुधारा न जा सके।"[३३] खूब चन्द की मृत्यु छोटी अवस्था में हो गई थी इस लिए उस के मण्डी जाने तथा ग्वाल जी के साथ मथुरा लौट आने की बात भी निराधार हो जाती है।

सम्भवत: खेम चन्द के व्यवहार से दुखी हो कर ग्वाल उसी वर्ष मथुरा चले गए। नवनीत जी ने आगे लिखा है कि ग्वाल "पंजाब से लौट कर मथुरा में एक मकान बनवा कर रईसी ठाठ से रहने लगे[३४]। यहां भी कुछ बात उलझ गई जान पड़ती है। वास्तव में मथुरा में हवेली तो पहले से ही मौजूद थी क्योंकि ग्वाल की पहली ही रचना जमना-लहरी में लिखा है "वासी वृन्दा-विपन को श्री मथुरा सुखवास"। अगर हवेली पहले से न होती तो यह "मथुरा सुखवास" की बात असम्भव होती। यह अवश्य हुआ होगा कि ग्वाल ने पुरानी हवेली को अपने अनुकूल बनवा लिया होगा।

१८४६-१८६० तक ग्वाल मथुरा में ही रहे।इस बीच में इधर-उधर घूम फिर भी आते रहे होंगे। उन के एक बार अमृतसर फिर आने का उल्लेख पंजाबी के कवि भाई साहब भाई वीर सिंह जी के छोटे भाई डा० बलबीर सिंह ने अपने पिता की जीवनी के सिलसिले में किया है।[३५] उन्होंने लिखा है कि ग्वाल तब काफी बूढ़े हो गये थे और कविता पढ़ते समय उनके हाथ[३६] कांपते

---

३३. -अखिल भारतीय हिन्दी परिषद् के दिल्ली अधिवेशन के अवसर पर हुआ वार्तालाप।

३४. विशाल भारत-अप्रैल १९२९

३५. -बलबीर सिंह डा.-चरण हरि विस्थार-जि. १, भा. १-१९४५-अमृतसर-पृ.

३६. ग्वाल का देहावसान ६५ वर्ष की उमर में हुआ। अमृतसर में वे तब आए होंगे जब वे मण्डी से लौट रहे थे। अन्तिम दिनों में वे रामपुर रहे थे। ६० वर्ष की उमर में हाथ कांपने की बात कुछ अधिक जंचती नहीं।

थे।

श्री सत्यपाल गुप्त ने अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा द्वारा अधुना प्रकाशित "ग्वाल समृति ग्रन्थ" में लिखा है कि "नाभा के अतिरिक्त (ग्वाल कवि) आप पटियाला, अमृतसर आदि पंजाब के प्रमुख नगरों में स्थायी रूप से निवास रखते थे।" अमृतसर की बात तो पहले कही जा चुकी है और नाभा में ग्वाल को राज्याश्रय मिला था किन्तु पटियाला में उनके स्थाई रूप से निवास की बात नई है। गुप्त जी ने अपने कथन का आधार नहीं बताया, वैसे यह 'अनहोनी' भी नहीं। पटियाला दरबार में भी उन दिनों कवियों को खूब माना जाता था और दूर-दूर से लोग वहां आते तथा सम्मान एवं जीविका पाते थे। मथुरा के गोपाल भाट राजकुमार अजीत सिंह तथा राजा नरेन्द्र सिंह के आश्रम में थे। कवि निहाल काशमीरी तथा कवि चन्द्र शेखर वाजपेयी भी उन दिनों पटियाला में ही थे। ग्वाल के नाभा दरबार के सुपरिचित कवि बंसी भी उन दिनों पटियाला दरबार में टिके हुए थे और पण्डित चन्द्र कान्त बाली के शब्दों में "ग्वाल कवि की इनके साथ गहरी बनती थी तथा दोनों का काव्यास्वादन एक दूसरे का पूरक बन गया था।[३७] यह और बात है कि दोनों की शैलियां और भाषा दोनों भिन्न थीं। डाक्टर भगवान सहाय पचौरी ने ग्वाल और पटियाला के दरबारी कवि वीर सिंह "बल" से भी अभिन्न मित्रता की बात कही है।[३८] कवि साहब सिंह मृगेन्द ने तो अपने काव्य कोष "कबित्त कुसुम बाटिका" में ग्वाल के छन्दों को अपने छन्दों के समान स्थान दिया था। कवि जय सिंह तथा कवि बसन्त सिंह "ऋतुराज" की मैत्री का पता कवि ग्वाल की शिष्य परम्परा के नाभा निवासी भाई भगवान सिंह द्वारा बताई गई एक घटना से मिलता है। कहते हैं जब "ऋतुराज" कैद

---

३७. *पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ३५२।

३८. टंकित शोध प्रबन्ध। महा कवि ग्वाल-आगरा-विश्वविद्यालय

में थे तो इनके विरोधी खलीफा परिवार वालों ने अपने पद और प्रभाव के बल पर उन्हें अधिक सताने की सोची। ऋतुराज के अभिन्न मित्र-जय-केहरि जी को इसकी सूचना मिल गई तो उन्होंने एक छन्द रच कर ऋतुराज जी को जेल में भेजा:

"चारहुं ओर दिगंतन में दए तोर तमाम तरु रुख भारे।
केते सुपत्त किए बिन पत्त अरु केंतिन के किए आनन कारे।
आपने जान विगार दए वह फूलें फलें निज भाग्य सहारे।
वारें वसंत विचार बचै अब ग्रीष्म आन बजाए नगारे।"

कवि बसन्त सिंह ने वस्तु-स्थिति का परिचय देने के लिए यह सवैया कवि ग्वाल को भिजवा दिया। ग्वाल ने उत्तर में लिख भेजा :

"पिएं जब पानी तब गरम ही पीजियत प्यास न बुझत यां ते होत को खफा नहीं।
आंधी को गुबार धुरधार चढ़े वेशुमार रात लग लोएं चलें को जो तड़फा नहीं।
ग्वाल कवि कहें चीज़ छुए त गरम सब दिल घबरात नींद आवति सफा नहीं।
पांचों ही ऋतून की गुलामिनी ग्रीष्म है मसल मसूर है गुलाम से नफा नहीं॥"

पटियाला दरबार में कवि-ग्वाल के मित्र तो बहुत थे किन्तु अभी तक उनके द्वारा पटियाला में आश्रय ग्रहण, कतिपय, सिद्ध नहीं होता। हो सकता है, नाभा से मथुरा लौटते समय ग्वाल पटियाला में कभी कुछ दिन के लिए रुक गए हों परन्तु वहां का वातावरण उन्हें रास न आ सका हो और तत्कालीन परिस्थितियों में उन्हें वहां निष्ठा से रह जाना रुचिकर न रहा हो।

इसी प्रकार डा॰ मोती लाल गुप्त रचित "मतस्य प्रदेश की हिन्दी को देन" नाम के ग्रन्थ में कवि ग्वाल के अलवर जाने की भी साक्षी मिलती है। डा॰ गुप्त का कथन है कि अलवर में ग्वाल कवि का वहां के राज्य कवि पूर्णमल्ल जी से काव्य विवाद हुआ था। कवि पूर्णमल्ल का जन्म सम्वत् १८९७ बताया जाता है अत: कवि ग्वाल से यह आयु के नाते कोई ४० वर्ष

छोटे थे। ग्वाल अपने जीवन के पिछले दो वर्ष रामपुर में भी रहे थे अतः पूर्ण मल्ल से भेंट सम्वत् १९२२ विक्रमी के आस पास हुई होगी जब कि पूर्णमल्ल जी २२-२३ वर्ष के रहे होंगे। उन दिनों अलवर में राजा विन्य सिंह जी का शासन चलता था और पूर्णमल्ल जी उन्हीं के राज्य-कवि थे।

उक्त घटना का उल्लेख डा॰ गुप्त ने इस प्रकार किया है :

"हिन्दी के प्रसिद्ध कवि ग्वाल से इनका-पूर्णमल्ल जी का-काव्य विवाद हुआ था। अपनी पराजय स्वीकार करते हुए ग्वाल कवि ने कहा था: इस समय सरस्वति आप पर ही प्रसन्न है। उस समय की समस्या पूर्ति का एक उदाहरण भी दिया है:

समस्या : कैसे के बखान करूं मेरे तो है एक जीभ

पूर्ति :

कीन्हों नाहीं वेद पदे भयौ वलमीक तै न
जन्मयो न नाभि हरि दारुन असुर ईभ।
भाष्यकार नाहि पुनि कहि न पुराण कथा
जागत जगत जस पावत सुरसरीभ।
पूरण प्रमित्त होत राजकण हूं की कभूं
देव मग देख दृग गिनती गिने गुनीभ।
गुनन अधिकान अप्रमाण भगवान तब
कैसे कै वखान करूं मेरे तो है एक जीभ॥"[३९]

ग्वाल ने इस अवसर पर जो छन्द पढ़ा था उसका कोई उल्लेख नहीं किया गया। डा॰ गुप्त ने नहीं लिखा कि उनकी सूचना का आधार क्या है तो भी इतना तो मान ही लिया जा सकता है कि अपने अन्तिम दिनों में ग्वाल

---

३९. मत्स्य प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन-राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर-१९६२-पृ॰ २८७-राजस्थान पूरातत्व ग्रन्थमाला : ६६।

अलवर गए और वहां पर उन की भेंट कवि पूर्णमल से हुई थी। पराजय की बात भी अनहोनी नहीं कही जा सकती ग्वाल उन दिनों व्योवृद्ध थे और पूर्णमल तरुण। हो सकता है अष्टावधानी ग्वाल समस्यापूर्ति की तत्कालीन समस्या में पारंगत न हो पाए हों। ऐसी जीत हार केवल बौद्धिक विलास मात्र होती है और परिस्थितियां इसमें योग्यता से कहीं अधिक प्रभाव रखती हैं।

जिन दिनों ग्वाल मथुरा में थे, रामपुर के साहबज़ादा इमदादुल्ला खां "ताब" इनके शिष्य हुए और इनकी वजह से मथुरा ही में रहने लगे। एक बार साहबज़ादा इमदादउल्ला खां के सुपुत्र अपने पिता से मिलने मथुरा आए तो ग्वाल कवि से भी मिले। ग्वाल ने बहुत प्रभावित किया। रामपुर जा कर उन्होंने नवाब यूसफ अली खां साहब से भी ग्वाल की प्रतिभा तथा काव्य चातुरी का उल्लेख किया। नवाब साहब ने ग्वाल कवि को बुलवा कर खूब मान सम्मान किया और चाहा कि ग्वाल वहीं रह जायें किन्तु उन दिनों ग्वाल घर पर ही रह कर भगवद् भजन करना चाहते थे अतः सात महीने नवाब साहब की महमानदारी में रह कर वापिस आ गए।[४०]

रामपुर से लौटते समय ग्वाल चन्दौसी मुरादाबाद के कवि मधुसूदनदास से मिले थे। कहते हैं इस भेंट के समय दोनों कवि मित्रों ने एक दूसरे की प्रशंसा में अति मनोहर छन्दों की रचना की थी। यह घटना १८५८ के आस पास की है।[४१]

१८५९ में ग्वाल एक बार फिर नाभा दरबार में आ गए। उन दिनों नाभा की राजगद्दी पर राजा भरपूर सिंह बिराजमान थे। यह अच्छे कवि तथा उत्तम चित्रकार राजा थे। कांगड़ा शैली के प्रसिद्ध चित्र "टोडी रागिनी" का एक

---

४०. -इन्तखावे यादगार।

४१. -सुरेन्द्रमोहन-हम्मीरहठ-साहित्य सन्देश-नवम्बर १९५८

विशिष्ट संस्करण इनकी कलम का बना मेरे संग्रह में हैं। इस चित्र में मूल की प्रतिकृति से इतना अन्तर रखा गया है कि नायिका उद्यान के सुनसान में नहीं अपितु अपनी ही अटारी के आंगन में खड़ी वीणावादन कर रही है तथा वन-मृग मन्त्र-मुग्ध उस के चरणों में खड़े हैं। राजा भरपूर सिंह ने ग्वाल का समुचित सत्कार किया तथा उन्हें मीर हसन की लोक प्रसिद्ध मसनवि "सहरुलब्यान" का हिन्दी रुपान्तर करने की आज्ञा दी। यह रचना १८६० में पूरी हुई। इसी वर्ष ग्वाल ने 'गुरु-पचासा' तथा 'दृग शातक' नाम की दो छोटी-छोटी रचनाएं और राजा भरपूर सिंह जी के लिए लिखीं थीं। 'सहरुलब्यान' का हिन्दी रूपान्तर १८६२ में लाहौर से गुरुमुखी लिपि में महाराजा की आज्ञा से प्रकाशित भी हुआ था।[४२]

१८६२ में ही ग्वाल मथुरा लौट गए जान पड़ते हैं क्योंकि इसी वर्ष उन्होंने अपने 'भक्ति-भाव' के छोटे-छोटे ग्रन्थों का संकलन "भक्त भावन" नाम से संचित किया था। १८६४ में अपनी हवेली के पास ही ग्वालेश्वर नाम से एक मन्दिर बनवाया जिसमें शिव लिंग के साथ ही दरवाज़े के सामने आराधना मग्न गौरी की संगमरमर की मूर्ति तथा दाहिने और बाएं हनुमान और गणेश की मूर्तियां स्थापित की हुई हैं। मन्दिर के शिला पट पर यह दोहा स्थापना का सम्वत प्रकट करता है :

"उनईस सत इकबीस धरि शिवरात्रि भृगुवार।
पधराये प्रभु ग्वाल कवि गवरि संभु सुख सार॥"

और साथ ही यह भी अंकित हैं :

"जगन्नाथ हस्ताक्षराल ग्वालेश्वर शिव नाम।"

यह जगन्नाथ जी सम्भवत: शिलापट लिखने वाले थे।

---

४२. -देवेन्द्र सिंह विद्यार्थी-इशक लहर दरियाव: कवि ग्वाल की नवोपलव्य रचना-सप्त सिंधु, पटियाला।

नवाब यूसफ खां के पीछे नवाब कलब अली खां रामपुर की गद्दी पर बैठे तो एक बार फिर उन्होंने कवि ग्वाल को बुलवाया। यद्यपि ग्वाल इन दिनों वृद्ध हो गए थे और नज़र की कमज़ोरी की वजह से कहीं जाना आना नहीं चाहते थे नवाब साहब के आग्रह को टाल न सके और रामपुर पहुंच ही गए। आपको महमानदारी के अतिरिक्त सौ रूपए माहाना वज़ीफा के मिलने लगे।[४३] कवि ग्वाल के रामपुर में सम्मान का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि रामपुर दरबार इतना ही वज़ीफा उर्दू के कवि गालब को देता था।[४४] यहीं पर एक वर्ष ९ महीने तक राजाश्रय भोग कर ग्वाल का देहावसान हो गया।

नवाब कलब अली खां १८६४ में रामपुर की गद्दी पर बैठे थे। ग्वाल उनके आश्रय में १ साल ९ माह रहे थे और अमीर मीनाई द्वारा दी गई सूचना के आधार पर ग्वाल की मृत्यु अगस्त १९६७ में हुई थी, इस हिसाब से ग्वाल नवम्बर १८६५ के आस-पास रामपुर गए होंगे।

मृत्यु

कवि ग्वाल की मृत्यु कब और कहां पर हुई थी इस विषय में भी मतैक्य नहीं है। नवनीत जी ने उनका निधन सम्वत् १९२५ माना है[४५] और मीनाई साहब द्वारा दी गई तिथि के अनुसार भाद्रपद शुक्ला ११, सम्वत् १९२४ को ग्वाल का देहपात हुआ था।[४६] किन्तु राम नरेश त्रिपाठी जी ने, न जाने किस आधार पर, उनकी मृत्यु सम्वत् १९२८ में लिखी थी[४७] पीछे श्री राम

---

४३. -इन्तिखावे यादगार-पूर्वोक्त

४४. -इन्तखावे यादगार-पुर्वोक्त।

४५ -विशाल भारत, अप्रैल १९२९।

४६ -इन्तखावे यादगार-पूर्वोक्त।

४७ -प्रयाग हिन्दी भवन-१९५६, खण्ड २, पृ० १००।

बहोरी शुक्ल तथा श्री भगीरथ मिश्र ने अपने ग्रन्थ "हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास में [४८] तथा डा. किशोरी लाल जी गुप्त ने अपने द्वारा अनुवादित ग्रीर्यसन रचित ग्रन्थ की ग्वाल सम्बन्धी टिप्पणी में [४९] त्रिपाठी जी के मत का अनुकरण किया है। श्री प्रभु दयाल जी मीतल[५०] तथा डा. महेन्द्र कुमार[५१] नवनीत जी के मत का अनुसरण करते हैं जबकि श्री रामनाथ अग्रवाल[५२], श्री कृष्णदत्त बाजपेयी[५३] और श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र[५४] जी मीनाई साहब के साथ सहमत हैं। हम मीनाईं साहब के मत से भिन्न मत रखने का कोई कारण नहीं देखते। मीनाई साहब उन दिनों रामपुर में थे, जिन दिनों ग्वाल की मृत्यु हुई अत: उन्होंने जो कुछ लिखा है वह निज के अनुभव से लिखा है। १९२५ वि. को ग्वाल के देहावसान का सम्वत् मानने वालों की भूल, सम्भवत:, ईसवी या हिज़री सम्वतों से बिक्रमी सम्वत् की गिनती समय उपजी है और जब तक त्रिपाठी जी वाले सम्वत् का आधार न पता चले उसकी परीक्षा नहीं की जा सकती। हो सकता है यहां भी हिज़री साल से मेल बिठाने में ही धोका लगा हो। कुछ भी हो अब तक प्राप्त सूचना के आधार पर १९२४ ही ठीक बैठता है।

ग्वाल की मृत्यु कहां पर हुई थी इस बारे में भी अब तक मतभेद चला आया है। नवनीत जी ने स्पष्ट तो नहीं लिखा किन्तु उनके इस कथन से कि

---

४८ हिन्दी साहित्य का उद्भव विकास

४९. हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास-टिप्पणी, पृ० २३४।

५० -ग्वाल कवि, १९६३, मथुरा-पृ० ३७।

५१ -वृहद इतिहास-ना.प्र.सभा-२०१५ बि.-भा. ६-पृ० ३७९।

५२ -देशवन्धु-मथुरा-जनवरी १९५६।

५३ -सरस्वती, प्रयाग-जनवरी १९५६।

५४ -हिन्दी अनुशीलन, प्रयाग, धीरेन्द्र वर्मा-विशेषांक-जनवरी-जून-१९६०, पृ० ३३१।

"अब बाहर आना जाना बन्द कर ग्वाल अपना समय शिवाराधना में बिताने लगे। १९२५ में उनका देहान्त हो गया[५५]" सिद्ध यही होता है कि वह ग्वाल का देहान्त मथुरा में ही हुआ मानते थे। श्री कृष्णादत्त बाजपेई जी के लेख से भी इसी प्रकार की ध्वनि निकलती है।[५६] सरदार बहादुर भाई कान्ह सिंह,[५७] शमशेर सिंह अशोक,[५८] तथा श्री सत्यपाल गुप्त[५९] ने इनका देहान्त नाभा में ही हुआ माना है। इस विषय में भी हम मीनाई जी की सूचना को सही मानेंगे। हैं।

---

५५ -विशाल भारत-अप्रैल १९२९।

५६ -पूर्वोक्त

५७ -पैप्सू में हिन्दी की प्रगति सत्यपाल गुप्त सम्पादित शमशेर सिंह अशोक रचित पैप्सू का प्राचीन हिन्दी-साहित्य लेख-पटियाला-१९५६-पृ० ४४।

५८ वहीं

५९ -पंजाब का हिन्दी साहित्य-पटियाला-१९५९-पृ० १०५।

कवि ग्वाल : रचनानुक्रम

कवि-ग्वाल ने अपनी सभी प्रमुख रचनाओं का रचना काल दिया है अत: उन की क्रमिक सूची बनाने में अधिक कठिनाई नहीं पेश आती। कुछ छोटी रचनाएं, तो उनके संग्रहों में सम्पादित हैं उनका भी रचना-सम्वत मिल जाता है, शेष अष्टकादि रह जाते हैं या एक दो ऐसी रचनाएं, जिनका उल्लेख दूसरी रचनाओं में आ जाने से उन्हें एक निश्चित तिथि से पूर्व की रचना माना जा सकता है।

ग्वाल की सब से पहली रचना कौन सी थी इस विषय में अब तक सभी लोग जमुना लहरी को ही प्राथमिकता देते आए हैं और इसमें सन्देह के लिए कम गुंजायश है। जमुना को ब्रजवासी जनता उसी प्रकार पूजती है जिस प्रकार अवध तथा उत्तर भारत के अन्य नागरिक गंगा को पूजते हैं। आश्चर्य नहीं कि कवि ग्वाल ने विद्या-निपुन हो कर अपनी रचना का आरम्भ देवार्चन, के रूप में यमुना की महिमा के १०८ कबित्तों की माला अर्पन कर के ही किया हो। इस ग्रन्थ की रचना सम्वत १८७९ वि० की कार्तिकी पूनम को हुई थी। रचना कहां पर हुई थी इसका कवि ने कोई उल्लेख नहीं किया।[१]

इसी वर्ष होने वाली एक अन्य रचना, "रसिकानन्द" में ग्वाल ने अपने एक पूर्व रचित ग्रन्थ "नेह निबाह" का एक सवैया दिया है[२] अत: नेह निबाह का रचना सम्वत भी १८७९ ही मानना होगा।

तीसरी रचना "रसिकानन्द"[३] भी १८७९ की चैत्र वदी द्वादशी को हुई।

---

१. "सम्वत निधि रिषि सिधि ससि कार्तिक मास सुजान।
पूरनमासी परम प्रिय राधा हरि को ध्यान॥१
भयो प्रकट ताहीं सुदिन जमुना लहरी ग्रन्थ।
पढ़ै सुनै आनन्द मिलै जान परे रस पन्थ॥"२ (यमुना लहरी, द्वि० सं०, १८८१)

२. रसिकानन्द, ह० लि०, २४/५

३. "सम्वत निधि रिषि सिधि ससि स्याम पक्ष मधुमास।
आदितवार सु द्वाद्वशी रसिकानन्द प्रकास॥" रसिकानन्द-३७/१

यह ग्रन्थ नाभा के राजा जसवन्त सिंह के आश्रय में उन्हीं के आदेश से लिखा गया।

"हमीर हठ" की रचना अमृतसर में १८८१ वि॰ को हुई थी।[४] कुछ विद्वान इस ग्रन्थ का रचना सम्वत १८८३ वि॰ भी मानते हैं[५] किन्तु हमारे मत से १८८१ अधिक समीचीन है। शुक्ल जी ने भी (हिं॰ सा॰ इ॰, पृ॰ ३१३)-१८८१ माना है।

"श्री कृष्ण जू को नख शिख" की रचना सम्वत् १८८४ के दशहरा के त्यौहार पर हुई थी।[६]

"कवि दर्पण" की रचना १८९१ वि॰ को हुई।[७] एक प्रति के अनुसार इसकी रचना मजीठा के सरदार लहणा सिंह के आदेश पर हुई थी।[८]

"रस रंग" की रचना के पूर्व कवि ग्वाल एक और ग्रन्थ की रचना का पता देते हैं जिसका परिचय हिन्दी साहित्य संसार को हमारे द्वारा ही दिया गया था।[९] यही ग्रन्थ है विजय विनोद, जो महाराजा दलीप सिंह के आश्रय

---

४. "संवत गुनि सिध सिध ससी कातिक कुहू बखान।
श्री हमीर हठ प्रग्टयो अमृतसर सुभ थान॥"
हमीर हठ, छ. स. २३९।

५. ब्रजनारायण सिंह, डा. कविवर पद्माकर और उनका युग, कानपुर, १९६६-पृष्ठ १९८।

६. "वेद सिधि अहि रैनकर संमत आश्विन मास।
भयो दसहरा को प्रकट नष सिष सरस प्रकास।"
नष सिष, ह. लि., १९२७ वि॰ छं॰ १०।

७. "संवत ससि निधि सिधि ससि आश्विन उत्तम मास।
विजय दसमि रवि प्रकट हुवौ कवि दरपन प्रकास।"
कवि दर्पण, ह॰ लि॰, छं॰ ४।

८. वही पं॰ विश्व नाथ प्रसाद मिश्र की प्रति, छ॰ सं॰ १४/२।९.

९. सप्त सिन्धु वर्ष ३, अंक १२, पृष्ठ ४३, ५४।

में लाहौर में रह कर रचा गया था[१०] इस की रचना १९०१ वि॰ को हुई थी। इसकी एक प्रति जो सम्भवत: ग्वाल के निर्देशन में लिखी गई थी, सिक्ख रैफ्रैंस लायब्रेरी, अमृतसर में १९८४ में नष्ट हो गई।

"रस रंग" १९०४ वि॰ की चैत्र शुक्ला पंचमी को हुई थी। यह ग्रन्थ कहां रचा गया था इसका पता कवि ने नहीं दिया।[११] विजय-विनोद की रचना के पीछे था "रसरंग", फिर "साहित्यआनन्द", बीच में किसी समय "बलबीर विनोद" की रचना हुई जान पड़ती है। यह ग्रन्थ मण्डी के राजा बलबीर सेन के लिए रचा गया था, इस ग्रन्थ की अभी तक कोई प्रति नहीं मिली, केवल "साहित्यानन्द" में उल्लेख भर मिलता है।[१२]

"साहित्यानन्द" की रचना १९०५ वि॰ में हुई बताई गई है[१३] किन्तु ऐसा लगता है कि इस ग्रन्थ की रचना का क्रम कई वर्ष तक चलता रहा क्योंकि इसका उल्लेख ग्वाल ने एक स्थान पर रस-रंग में भी किया है[१४] जिसकी रचना १९०४ में सम्पन्न हो चुकी थी। साहित्यानन्द वास्तव में इनका सब से बड़ा ग्रन्थ है जिसके १६ खण्डों में से ५ खण्ड तो इस समय कही नहीं मिल

---

१०. "सम्वत ससि नभ निधि ससि सावन सुकल समोद।
तिथि सु अष्टमी भौम को उपजयौ विजय विनोद॥"
विजय विनोद, गुरुमुखी, सम्पादक शमशेर सिंह अशोक-अमृतसर, १९५०, पृष्ठ ११२, छं॰ सं॰ ७।

११. "सम्वत वेद सु "ख" निधि माध्व सित पख संग।
पंचम ससि को प्रकट हुये ग्रन्थ सु यह रस-रंग॥"
रसरंग, ह॰ लि॰, श्री कन्हैया लाल पेद्दार जी की प्रति, मथुरा चं॰ ७/१।

१२. "साहित्यानन्द, ह॰ लि॰, प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर की प्रति देखिए छं॰ सं॰ ९७/३, १११/३, ११५/३, १२७/३, तथा १३०/३ इसके अतिरिक्त १४ वें उल्लास में भी छं॰ सं॰ २४ पर एक दोहा उद्धृत मिलता है।

१३. "संवत सर नभ निधि ससि क्वार सुकल सरद चंद।
ता दिन प्रगट भय सु यह ग्रन्थ साहित्यानन्द।"
साहित्यानन्द, ह॰ लि॰-प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर की प्रति छं॰ सं॰ ७/१।

१४. रस-रंग, ह॰ लि॰, कन्हैया लाल पोद्दार जी की प्रति, छं॰ सं॰ ९५/२।

रहे। गुरु पचासा की रचना १९१७ वि॰ के कार्तिक कृष्णा तृतीया को नाभा के महाराजा भरपूर सिंह जी के आदेश पर हुई है।[१५]

फुटकर छोटी रचनाओं में से जो "भक्त भावन" में संग्रहीत मिलती है केवल एक रचना कृष्णाष्टक के विषय में अनुमान भिड़ाया जा सकता है कि वह अवश्य महाराजा रणजीत सिंह के निधन काल १८९६ वि॰ के पूर्व की रचना है क्योंकि पारिवारिक श्रुति के अनुसार ग्वाल को टौंक में महाराजा द्वारा यह पता लगाने भेजा गया था कि सैयद अहमद मजाहद के वे अनुयाई (जिन्हें नवाब अमीर खां ने अपने आश्रय में बसा लिया था) अब क्या कर तथा सोच रहे हैं। नवाब अमीर खां १८७४ से १८९१ तक टौंक के शासक रहे थे अत: यह अनुमानित अवधि १८९१ वि॰ से कुछ पूर्व ही ठहरती है।

महाराजा भरपूर सिंह जी के ही आदेश पर १९१७ की माघ शुक्ला त्रयोदसि को ग्वाल कवि ने मीर हसन की प्रसिद्ध मस्नवि 'सहरुलब्यान' का हिन्दी रूपान्तर "इश्क लहर दरियाव" नाम से किया।[१६]

महाराजा भरपूर सिंह के आश्रय में ही ग्वाल ने अपने भक्ति-भाव के फुटकर ग्रन्थों को "भक्त भावन" नाम देकर आषाढ़ शुकुला, २, सम्वत १९१९ को सम्पादित किया।[१७] और फिर इसी वर्ष फागुन शुक्ला दुतिया को, इन्हीं राजा के आदेश पर अपनी अंतिम रचना दृग-शतक[१८] को जन्म दिया।

---

१५. "सम्वत् रिषि ससि निधि ससि कातिक कृष्णा पच्छ।
त्रितिया गुरु को प्रकट हूवै गुरु पचासा स्वच्छ।"
गुरु पचासा-ह॰ लि॰-डा॰ गण्डा सिंह, पटियाला की प्रति-छं॰ सं॰ ७।

१६. "संवत रिषि ससि निधि ससि माघ चांदनी चाव।"
त्रयोदस ससि को प्रकट भी इश्क लहर दरियाव।"
इश्क लहर दरियाव-गुरुमुखी, छं॰ ४७।

१७. "संवत निधि ससि निधि ससि मास अषाढ़ बखान।
सित पख दुतिया रवि विषै प्रगटयौ ग्रन्थ सुजान।"
भक्त भावन-ह॰ लि॰-गोबिन्द-कवि चतुर्वेदी, मथुरा की प्रति-अन्तिम छन्द।

१८. "संवत निधि ससि निधि ससि फागन पच्छ उजियार।
दुतिया रवि आरम्भ किय दृग शत सुख को सार।"
दृग शतक-ह॰ लि॰ छं॰ सं॰ ६ डा॰ गण्डा सिंह, पटियाला की प्रति।

विजय विनोद : वस्तु विस्तार

कवि ग्वाल रचित प्रबन्ध काव्यों में विजय-विनोद दूसरा ग्रन्थ है। इस ग्रंथ की चर्चा हिन्दी साहित्य क्षेत्र में नहीं के बराबर ही हो सकी है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख हमने किया था[१] फिर मथुरा निवासी श्री प्रभु दयाल मीतल ने इसका नोटिस लिया[२] और इसका अंतिम उल्लेख डा॰ ओम प्रकाश शर्मा द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के तत्वाधान में हुई एक गोष्ठी में पढ़े गये एक निबन्ध में किया गया है[३]। यह ग्रन्थ गुरुमुखी लिपि में लाहौर दरबार में प्रस्तुत किया गया था।

डा॰ ओम प्रकाश ने विजय विनोद को "विशाल आख्यान काव्य" माना[४] है। यह रचना महा-काव्य की कोटि में आ सकती थी यदि इसमें शास्त्रीय पद्धति से संवद्ध रचना विधान तथा रस परिपाक की पूर्णता का निर्वाह हुआ होता। इस में एक उच्च्व कुलीन महत्वाकांक्षी परिवार के प्राक्रम की कथा है जो पूरे मनोयोग तथा क्षिप्रगति से अंकित की गई है। अत: इसे खंड-काव्य की सीमा में सुकेड़ना अन्याय होगा। हम इसे खंड काव्य और महाकाव्य के बीच की अनाम कड़ी मान लेना चाहते हैं और आचार्य विश्वनाथ तथा पंडित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र द्वारा प्रतिपादित एकार्थ-काव्य[५] की कोटि में रखेंगे।

विजय-विनोद की रचना खालसा राज्य के मुख्य मन्त्री राजा हीरा सिंह डोगरा के दीवान पंडित जल्हा मिश्र के आदेश पर हुई थी[६]। इसमें राजा

---

१. हिन्दी साहित्य सम्मेलन पंजाब की पत्रिका रेखा वर्ष १, अंक ३, जुलाई, १९५८, पृ॰ ५०-५३।

२. कवि ग्वाल, पृ॰ ६६-७०।

३. गुरुमुखी लिपि में लिखित हिन्दी वीर काव्य-गोष्टि विवरण, १९६० पृ॰ ६७।

४. वही।

५. इन्द्रपाल सिंह "इन्द्र", डा॰ रीति काल के प्रमुख प्रबन्ध काव्य, आगरा, १९६५, पृ॰ १९-२०।

६. विजय-विनोद, गुरुमुखी, छन्द सं॰ ४-७।

ध्यान सिंह डोगरा के प्रधान मन्त्री पद पर नियुक्त होने से लेकर उसकी हत्या प्रयन्त हत्यारों से बदला लिये जाने की घटना तक के समाचार वर्णित है। शैली में रचना को अधिक बना संवार कर प्रस्तुत करने के स्थान पर इतिवृत्तात्मकता तथा क्षिप्र-गतिमयता का अधिक ध्यान रखा गया है। लम्बी नामावलियां गिनाने और यत्र तत्र अंलकारों का जमघट जमाने की चालू प्रवृत्ति से बहुत कुछ किनारा किया गया है तो भी गूदड़ का अभाव नहीं। कथा में वर्णित तथ्य सरकारी रिकार्ड की साक्षी पर, बड़ी हद तक, खरे उतरते हैं। कवि ने बहुत सी घटनाओं को आंखों देखा था अत: स्वाभाविक है उन के वर्णन में तात्कालिक पक्षपात की पर्याप्त गन्ध मिल गई हो। समूची रचना को देख कर यह कहना होगा कि ग्वाल कवि ने सत्य का अतिक्रमण बहुत कम किया है।

विजय-विनोद की कथा वस्तु सम-सामयिक घटनाओं पर अवलम्बित होने से उस में कल्पना के पुट के लिए कुछ अधिक स्थान नहीं था। कवि ग्वाल का ध्येय ऐसे काव्य की रचना करना मात्र था जिस से उसके आश्रय दाता की कीर्ति अमर हो और उसके यश मे वृद्धि हो। ग्वाल इतिहासकार नहीं था और इतिहास लेखन उसका लक्ष्य भी नहीं था अत: उस से शत-प्रतिशत इतिहास के तत्वों के अनुकरण की आशा नहीं की जा सकती थी। घटनाएं सर्व-विदित थीं अत: उन्हें अपने अनुकूल करने के लिये अधिक तोड़ा-मरोड़ा भी नहीं जा सकता था। यह जान कर सन्तोष होता है कि ग्वाल ने ऐसा करने का बहुत प्रयास भी नहीं किया है।

साधारणत्य: ग्वाल द्वारा वर्णित घटनाएं इतिहास-सम्मत हैं।[७] जो घटनाएं कवि के आश्रयादाता के यश की घातक हो सकती थीं ग्वाल ने सप्रयास उन्हें अपनी रचना से दूर रखा है। कुछ के स्थानों पर ऐसी घटनाओं का उल्लेख

---

७. देखिए - लतीफ, हिस्ट्री आफ पंजाब, पृ. ४१४, ४४०, ४४१, ४६५, ५०५, ५०७, ५१५, ५१६, ५२०, ५२२, ५२४, ५२७, ५२८, ५३०.

अवश्य हुआ है जो किसी अन्य ग्रन्थ में देखने को नहीं मिलतीं अन्यथा उन की अपनी रचना के लक्ष्य के अनुकूल ज़रूर हैं। इन्हें एक दम कवि-कल्पित नहीं ही कहा जा सकता, दृष्टिकोण अथवा सूचना का अन्तर भर कहा जा सकता है।

ग्वाल की इस रचना से एक बात अवश्य स्पष्ट हो जाती है कि तत्कालीन पंजाब में एक प्रकार की राजनैतिक तथा सामाजिक जागृति आ चुकी थी। हर कोई अपनी-अपनी सूझ-बूझ के अनुरूप राज्य व्यवस्था की स्थापना चाहता था, भले ही वह शेर सिंह था या रानी चन्द कौर थी या वे सन्धावालिए थे अथवा डोगरे, लेकिन इन आपस के विरोधी दृष्टिकोणों ने सेना नायकों को अधिक से अधिक सन्तुष्ट करने के प्रयास में उन के मन से स्वामी-भक्ति का भाव सर्वत: मिटा कर स्वार्थ-लोभ का संचार कर दिया था, और एक समय ऐसा आया जब किसी के लिये भी उन्हें सन्तुष्ट रखना संभव न रह गया। अन्त में, यही वह अनुशासन-हीन मुंह-ज़ोर सेना थी जिसने कुछ ही दिनों में एक शानदार राज्य की स्थापना कर दिखाई थी, अब न केवल आत्मघात कर बैठी अपितु पंजाब की स्वतन्त्रता को भी ले डूबी।

विजय-विनोद की गणना पंजाब में सिक्ख-राज्य के इतिहास के सूत्रों में की जा सकती है। इस कड़ी की दूसरी लड़ियां जिन की रचना तत्कालीन दरबारी कवियों ने की थी, कवि गणेश दास रचित "फतह नामा गुरु खालसा जी का" तथा कवि साहिब सिंह मृगेन्द्र रचित "राजेन्द्र मती चरित्र" हैं। राजेन्द्र-मती चरित्र की रचना जींद के राज-घराने के आदेश पर हुई थी और उस में अंग्रेज़ के इशारे पर कुछ ऐसे लांछन भी रानी पर लगाये गये हैं जो अनुचित तथा वास्तविकता से दूर हैं अत: जिन से उस रचना की ऐतिहासिकता तथा सात्विकता पर आंच आती है।

फतह-नामा, महाराजा रणजीत सिंह के उत्थान की कहानी है तो विजय-विनोद में सिक्ख राज्य के पत्नारम्भ का चित्रण है और राजेन्द्र मती

चरित्र में यह पतन अपनी पराकाष्ठा को प्राप्त हुआ मिलता है। एक बड़े दुःख की बात यह है कि इन दरबारी कवियों ने अपने सम-सामयिक कवियों के विषय में पूरा-पूरा मौन साधे रखा है। यदि गोपाल सिंह "नवीन" ने सुधासागर, भगवान सिंह वनूड़ी तथा दल सिंह ने भारती-भंडार एवम् साहब सिंह मृगेन्द्र ने "कबित्त कुसुम बाटिका" संग्रह काव्य-कोष के रूप में न रचे होते तो कितने ही कवियों की नामावली तक सुलभ न रह गई होती।

विजय-विनोद का कथा-कलाप

पहले तीन छन्दों में सारदा, श्री राम चन्द्र अतः गुरु गोबिन्द सिंह का मंगल गान है। ग्वाल ने गुरु गोबिन्द सिंह जी के यश का जो छन्द विजय-विनोद में दिया है वही छन्द 'गुरु-पचासा' में भी दिया है।[७] फिर ग्रंथ रचना कारण तथा रचनासम्वत दिया गया है। छन्द संख्या ८ से २४ तक महाराजा रणजीत सिंह के प्राक्रम का यश वर्णन किया गया है। छन्द संख्या २५-४२ तक ध्यान सिंह डोगरा को वज़ीर का पद मिलना और उसके द्वारा राज-काज का सुचारू रूप से चलाया जाना अथवा राजा पद प्राप्ति का वर्णन है। छन्द संख्या ४३-६१ तक ध्यान सिंह के पुत्र हीरा सिंह का जन्मोत्सव वर्णन किया है। हीरा सिंह जब छः मास का हो जाता है तो महाराजा रणजीत सिंह उसे मंगवा कर गोद में लेते तथा खूब प्यार करते हैं और खूब दानादि देकर उत्सव करते हैं, उसे अपनी गोद में खिलाते तथा उसका लालन पालन करते है।[८] सात वर्ष का होने पर हीरा सिंह को राजा की उपाधि प्रदान की जाती है। यह कथा छन्द संख्या ६२-७८ तक चलती है। छन्द संख्या ७९-११० तक महाराजा रणजीत सिंह का स्वर्गारोहण तथा क्रियाकर्म का वर्णन है। छन्द संख्या १११-११७ तक महाराजा खड़ग सिंह की गद्दी-नशीनी और वज़ीर पद पर

---

७. गुरू पचासा-ह० लि०, गुरुमुखी, छंद संख्या ५०-डा० गंडा सिंह के संग्रह की प्रति।

८. स. शमशेर सिंह अशोक ने लिखा है कि महाराजा का दुलार दरबार के सभी सरदारों की सन्तान के प्रति था। हीरा सिंह उसे कुछ अधिक ही प्यारा था। वह मुख्य मन्त्री का पुत्र जो था।

राजा ध्यान सिंह का बना रहना वर्णित है। महाराजा खड़ग सिंह साधु स्वभाव के थे, राजा होकर भी रामनाम में ही रुचि रही। राजा ध्यान सिंह ने राज-काज की देखभाल के लिये उन के सुपुत्र कंवर नौनिहाल सिंह को, जो उन दिनों पेशावर में हाकम थे, बुलवा लिया। यह कथा छन्द संख्या १२३ तक चलती है। महाराजा खड़ग सिंह सोलह मास चौबीस दिन राज-गद्दी पर रह कर स्वर्ग वासी हो गये। उसी दिन पिता का दाह कर्म भुगता कर लौटते समय कंवर नौनिहाल सिंह पर एक छज्जा टूट पड़ा जिस से कंवर जी (नौनिहाल सिंह) काल-बस हो गये। यह वर्णन छन्द संख्या १२४-१२९ तक समाप्त होता है। राजा ध्यान सिंह ने कंवर साहब को उठवा कर किले में पहुंचा दिया और प्रकट यही किया कि चोट आई है अथवा अब कुछ आराम है। कंवर शेर सिंह, उस समय मुकेरियाँ (अपनी जागीर में) शिकार[९] खेल रहे थे, उन्हें बुलाने के लिये सवार भेजे गए। कंवर शेर सिंह समाचार मिलते ही अविलम्ब आए, तब कहीं नौनिहाल सिंह के मृत शरीर का दाह कर्म हुआ। राजा ध्यान सिंह ने बहुत चाहा कि राज का उत्तराधिकारी कंवर शेर सिंह को बनाया जा सके किन्तु अतर सिंह, लहना सिंह तथा अजीत सिंह संधावालिया इस बात के पक्ष में नहीं थे। उन्होंने कंवर नौनिहाल सिंह की माता चन्द कौर को तख्त पर बिठाने का प्रयास किया। राजा ध्यान सिंह ने रानी चन्द कौर को समझाना चाहा मगर वह नहीं मानी और उसने शेर सिंह को कहला भेजा कि वह अपनी जागीर में चला जावे। कुंवर शेर सिंह के पूछने पर राजा ध्यान सिंह ने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि भाग्य ने साथ दिया तो राजा अवश्य तुम ही बनोगे। यह कथा छन्द संख्या १३०-१४८ पर है। रानी चन्द कौर गद्दी पर बैठ गई। राजा ध्यान सिंह ने शेर सिंह को वचन दिया कि, जैसे तैसे होगा, तुम्हें ही राजा बना कर रहूंगा। यह कथा छंद संख्या १५० तक जाती है।

---

९. यह बात अजीब सी लगती है कि महाराजा खड़क सिंह की अंत्येष्टी पर कंवर शेर सिंह को सूचना नहीं दी गई थी और वह इस शोक के समय शिकार खेल रहा था। असे मात्र नौनिहाल सिंह के मरने की खबर भेजी गई थी।

राजा ध्यान सिंह ने कंवर शेर सिंह को परामर्श दिया कि अब हम दोनों ही शिकार के बहाने राजधानी से बाहर चले जाएं और कुछ दिन बाहर रह कर फिर लाहौर पर चढ़ाई कर के किले पर अधिकार कर लेंगे।[१०] जो अहलकार आए उन्हें राजा ध्यान सिंह ने हदायत की कि वे अपने आप को रानी का नहीं कंवर शेर सिंह का सेवक मानें, आप लोगों की सहायता के लिये मैं अपने पुत्र और भाई को यहां छोड़े जा रहा हूं। यह कह कर राजा ध्यान सिंह कंवर शेर सिंह को साथ लेकर शिकार खेलने चले गये। यह कथा १० छन्दों में, छन्द संख्या १५१-१६० तक, वर्णित है।

उधर लाहौर में सरदारों की एक मण्डली कौंसल नाम से राजकाज चलाने लगी किन्तु उन की आज्ञा का पालन कोई नहीं करता था। रानी भयभीत हो रही थी, स॰ अतर सिंह तथा अजीत सिंह आदि चिंता-ग्रस्त बांवरे से हो रहे थे। अतर सिंह को कुल्लू का प्रबन्ध, बल पूर्वक, सुधारने के लिये भेजा गया था। लोग एक स्त्री के हाथ में तथा कौंसल के हाथ में राज्याधिकार आने पर दु:खी थे। सेना के लोग अतर सिंह को दुर्वचन बोल रहे थे और कहते थे कि ध्यान सिंह के बिना अब सेना नहीं रह सकेगी। उनका मत था:-

"रह्यौ न हुकम एक मालक हमारो।
कुमन्त्रीन ने यन्त्र यह है बिगारो।
सन्धावालियों ने जु कौंसल करी है।
निहायत बुरी है बुरी है बुरी है॥१६९॥"[११]

व्योपारियों ने दुकानें बन्द कर दीं थीं, संध्या समय अब लाहौर में कोई दिया तक न जलाता था- छन्द संख्या : १६०-१७३।

---

१०. अहलकारों को रानी के स्थान पर कुंवर शेर सिंह का साथ देने की हदायत की यह प्रवृत्ति भी अजीब दिखाई देती है। राजा ध्यान सिंह का षडयन्त्र साफ सिद्ध होता है, और ग्वाल ने इसे छुपाया भी नहीं।

११. ऐसी ही मनोस्थितियों के जगाए जाने का फल यह निकला कि सेना अपना संयम खो बैठी और नियंत्रण जाता रहा। अन्तत: राज्य: शक्ति क्षीण होकर अंग्रेज़ों के हाथ आ गई।

अफसरों ने राजा ध्यान सिंह को लिखा "आप के बिना हमारा जीवन नहीं है।" शेर सिंह को लिखा "आप शीघ्र पधारें; हम आप के लिये लड़ेंगे।" शेर सिंह दिन रात जम्मू में ध्यान सिंह के साथ पत्र व्यवहार करता रहता था। ध्यान सिंह ने शेर सिंह को लिखा: लाहौर किसी को भेज कर सेना-अधिकारियों से धर्मग्रन्थों पर हाथ रखवा कर, प्रण ले लो और उन से कह दो कि शेर सिंह शीघ्र ही यहां आने वाले हैं तुम लोग उनकी सहायता करने के वचन पर सुदृढ़ रहना। अत: गंडा सिंह कुंजाहिया लाहौर भेजा गया। वह समाचार लेकर लौटा कि "सब हमारे साथ हैं।" फलत: राजा ध्यान सिंह को जम्मू सूचना भेजी गई और चढ़ाई के लिये उपयुक्त मुहूर्त भी लिख भेजा गया। राजा ध्यान सिंह ने आदेश दिया कि इसी मुहूर्त पर धावा बोल दिया जावे। छन्द संख्या १७४-२००।

दूत के लौटते समय सभी शकुन शुभ हुए। सभी देवता मना कर सेना को आक्रमण की आज्ञा दे दी गई। अजीत सिंह यह समाचार सुनते ही डर कर भाग निकला। रास्ते में शेर सिंह से सामना हो गया तो कहा कि घर एक दो रोज़ एक ज़रूरी काम चला हूं फिर आऊंगा किन्तु घर पहुँचते ही, अपनी सम्पत्ति सम्हाल कर, सतलुज पार चला गया। लाहौर पहुंच कर शेर सिंह ने बुद्धू के आबे के पास सेना का डेरा किया। रानी ने किले के द्वार बन्द करवा दिये। अतर सिंह बढ़-बढ़ कर अपनी वीरता की डींग मारने लगा। शेर सिंह युद्ध के लिये उचित स्थान तलाश करने लगा। -छन्द संख्या २०१-२१३।

राजा गुलाब सिंह, (राजा ध्यान सिंह के भाई) ने शेर सिंह को खत लिख भेजा "मुलक आप का है, राज्य आपका है, किला आपका है, आपकी भावज जो इस समय शासक बनी हुई है, वह भी आप ही की है किन्तु जब तक राजा ध्यान सिंह नहीं आ जाते, जब तक नीति रीति के अनुकूल लेन-देन नहीं होता - हम आप को किले में घुसने नहीं देंगे।[१२]श्री गुलाब सिंह का पत्र

---

१२. 'नीति रीति के अनुकूल देन लेन' की बात सारा रहस्य खोल देती है।

पढ़वाया गया मगर सेना नहीं मानी, दूत फिरा और कहा कि युद्ध छिड़ने वाला है, वहां, राजा शेर सिंह के कैम्प में रस की बात कोई नहीं दिखती। श्री गुलाब सिंह और राजा हीरा सिंह सोच में पड़ गए कि राजा ध्यान सिंह जम्मू से अभी आए नहीं। हम लोग किले में हैं यह सब जानते हैं, फिर अबला रानी शरण्य है सो भी प्रण पालना है। चले तो जाते किन्तु अब तो लड़ना ही उचित है क्योंकि अब किले से जाने में अपयश होगा। आक्रान्ता (शेर सिंह) महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र हैं जो हमारा स्वामी था। फिर राजा ध्यान सिंह की इच्छा यही है कि शेर सिंह गद्दी पर बैठे, रानी का राज उन्हें मान्य नहीं है[३]। पहले दोनों कारणों से तो लड़ना चाहिये और अंतिम दोनों कारणों से लड़ना उचित नहीं है। इस लिए ऐसा कुछ न किया जाय जो मन को जंचे नहीं। गुलाब सिंह ने हीरा सिंह को परामर्श दिया कि जब तक ध्यान सिंह न आ जावे तब तक जंग करना ही चाहिए। वह आ जावे तो किला उसे सौंप दें, फिर वह जो चाहे सो करे। छन्द सं॰ २१४-२२२।

युद्ध आरम्भ हो गया। शेर सिंह ने परेड की ओर से हज़ूरी बाग की दीवार पर तोपें चढ़ा दीं किन्तु उस ओर किला के भीतर भी खाऱ पर तोप लगी हुई थी। वह दाग दी गई जिस से शेर सिंह के बहुत से घोड़े और आदमी मारे गए। इतने में, रानी की सेना के एक जरनैल धौंकल सिंह ने आकर शेर सिंह से कहा कि मसजिद के बाहर एक खिड़की मेरे अधिकार में हैं आप उस रास्ते किले में दाखिल हो जाएं।[१४] ऐसा ही किया गया। नगर की फसील पर मोरचे लगा लिए गए। सभी सरदार शेर सिंह से मिल गए। किले के अन्दर से अतर सिंह चिल्ला रहा था 'कोई निशाना बांध कर शेर सिंह को गोली मारो सारा झगड़ा मिट जाए'। युद्ध के आरम्भ में वही कहता

---

१३. राजा ध्यान सिंह नहीं चाहते थे कि खड़क सिंह की रानी शासक बने, बाकी सब नाटक था। राजा शेर सिंह इस लिए भी शासक नहीं बनाए जा रहे थे कि महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र थे अपितु इस लिए कि उन्होनें 'देन लेन' की बात पक्की कर ली थी।

१४. जब सेना के जरनैल ही दगा दें तो रानी बेचारी क्या कर सकती थी!

था 'मैं शेर सिंह को भगाए बिना पानी तक न पिऊंगा' किन्तु अब अन्दर से मन डोल चुका था। गुलाब सिंह और हीरा सिंह निशाना बांध-बांध तोपें चलवा रहे थे। किले के आंगन में गोलों की वर्षा सी हो रही थी। रानी चन्द कौर यह देख कर कह उठी "गुलाब सिंह! किला सौंप दो, बात कुछ बिगड़ी सी दिखाई देती है"। वह बहुत घबराई हुई थी। मगर गुलाब सिंह और हीरा सिंह हंस-हंस[१५] कर कह रहे थे कि क्षत्रियों का हठ कभी पीछे भी हटा है? रात दिनो में गोलों के अनेक दाव चले। तभी ध्यान सिंह आ गए। छन्द सं० २२३-२३९।

किसी ने शेर सिंह से कह दिया ध्यान सिंह आ गए। शेर सिंह ने बुलाया। ध्यान सिंह ने कहा सवेरे आएंगे। प्रातः मुलाकात हुई। शेर सिंह ने कहा 'अपने भाई और पुत्र को भी साथ रखो, यह राज समाज सब तुम्हारा है। मैं तो नाम का भूखा हूं।' ध्यान सिंह ने किले में कहला भोजा हमने तोपें बन्द कर दी हैं आप भी लड़ना बन्द करें। अतर सिंह से कहा कि अब बाहर आ जाओ। किले पर कबज़ा कर लिया गया। फिर गुलाब सिंह और हीरा सिंह ने नज़रें भेंट करवाईं। शेर सिंह ने कहा 'क्या हुआ जो तुम लड़े थे अन्ततः हमारे हो'। चन्द कौर से शेर सिंह ने कहा 'तुम अब भजन किया करो'। बसन्त पंचमी के दिन शेर सिंह तख्त पर बिठा दिए गए। छन्द सं० २४०-२५०।

राणा हमीर देव के समान राजा ध्यान सिंह का प्रण-पाल के नाते यश चारों ओर छा गया। महाराजा शेर सिंह ने सेना को आज्ञा दी कि वे सब अपनी-अपनी छावनी में डेरा करें। अतर सिंह अपने डेरे जाने के स्थान पर बेदी विक्रम सिंह के डेरे जा रहा। महाराजा ने अतर सिंह को बुलवा कर कहा कि तुम को घबराने की कोई बात नहीं जैसे तुम बड़े महाराज के समय रहते थे उसी प्रकार, निश्चिन्त हो कर, रहो। तुम्हारा किला, कोट, इलाका जो कुछ

---

१५. गुलाब सिंह और हीरा सिंह का यह हंसना शेर सिंह के साथ उनकी मिली भुगत का सूचक ही तो था।

था अब भी ज्यों का त्यों तुम्हारे अधिकार में रहेगा। जो कुछ तुमने किया कहा उसे भूल जाओ। अतर सिंह नहीं माना। उसने कहा "तुम्हारे अधीन हो कर नहीं रहूंगा जो कुछ लूंगा अपने बूते प्राक्रम से लूंगा"। महाराजा ने कहा "तुम्हारी इच्छा"। अतर सिंह बेदी साहब के साथ पहले ऊना को और फिर वहां से सतलुज पार चला गया।-छन्द सं० २५१-२५९।

महाराजा ने सुना कि अतर सिंह सतलुज पार जा कर अजीत सिंह से मिल गया है राजा सांसी (अतर सिंह की जागीर में) सेना भेज कर हुकम दिया कि किला ध्वस्त कर दिया जावे, माल असबाब सरकार के कबज़े में लेकर, जागीर में सरकारी थाना बिठा दिया जावे। महाराजा शेर सिंह का एक पुत्र कुंवर प्रताप सिंह बटाले में था उसे लाहौर बुलवा लिया गया। कुछ फौज उसके अधिकार में दे दी गई। लहणा सिंह जो कुल्लू में फौज के साथ गया हुआ था, भागना चाहता था। फौज को उसकी इस चाल की सूचना मिल गई। वे उसे पकड़ कर लाहौर ले आए। महाराज ने आज्ञा की कि इस पर चौकसी से निगरानी रखी जावे। जब पता चला कि वह वहां से भी भागने की सोच रहा है तो बेड़ियां डलवा कर किला लोहगढ़ में कैद कर दिया गया। अतर सिंह ने सुना तो अंग्रेज़ी सरकार से सहायता लेने कलकत्ता गया। अंग्रेज़ों ने उसकी सहायता नहीं की और कहा कि महाराजा से हमारा मित्रता का संबंध है, तुम भला चाहते हो तो महाराजा शेर सिंह की शरण चले जाओ। उसने यह सारा हाल कुरुक्षेत्र में अतर सिंह से आ कहा। बहुत दिन सोचते रहे कि किस प्रकार लाहौर लौटने का उपाय बने। अन्ततः बेदी बिक्रम सिंह को पत्र लिख कर प्रार्थना की "हमें महाराजा से मिला दीजिए"। बेदी साहब ने वह पत्रिका महाराजे को भेज दी। राजा ध्यान सिंह ने सिफारिश की तो महाराज ने उन्हें वापिस बुलावा भेजने की अनुमति दे दी। वे लोग बेदी साहब के पास पहुंच गए और उन से अनुनय विनय की कि आप हमारे साथ लाहौर चलें। बेदी साहब के साथ संधावालिए आए महाराजा की आज्ञा से बेदी साहब का यथायोग स्वागत हुआ। संधावालियों ने महाराजा तथा ध्यान सिंह के पांव

पकड़ कर अपने किए पर बहुत पश्चाताप किया। महाराजा ने उन्हें अभयदान दिया। छन्द सं० २६०-३००।

कुछ दिन पीछे ध्यान सिंह से अजीत सिंह ने विनय करी कि हमारा चाचा लहना सिंह तथा ताये का पुत्र केहर सिंह जेल में कैद हैं उनकी भूल क्षमा करवाईए। ध्यान सिंह ने महाराजा को प्रेरणा दे कर इस बात पर भी राज़ी कर लिया। फिर खर्च के लिए एक लाख रुपया मांगा, वह भी मिल गया। पिर अपनी हवेली के लिए प्रार्थना की और अन्त में कहा आज्ञा हो तो हम ताये को भी बुलवा लेवें। यह आज्ञा भी दिला दी गई। अब महाराज ने पास बिठा कर कहा: अपना घर बार संभालो, फौज रखो और पुरानी शान से मौज से रहो। कुछ दिन उन्होंने बड़ी लगन से सेवा की। सरकार का मन भी रीझ गया। ध्यान सिंह को भी विश्वास हो गया। छन्द सं० ३०१-३२२।

अब सन्धावालियों को निश्चित हो गया कि उन्होंने महाराजा तथा राजा ध्यान सिंह का मन जीत लिया है, तब एक दिन उन्होंने महाराजा से कहा कि 'हम अपनी सेना दिखाना चाहते हैं'। महाराजा ने अनुमति दे दी। अजीत सिंह ने सेना को उनके अगले कार्यक्रम के बारे में सावधान कर दिया। फौज को लेकर शाह बिलौर (जहां महाराजा थे) आ पहुंचे। अजीत सिंह ने महाराजा से कहा कि "हज़ूर चल कर बारहदरी में एकांत हो बैठें और हमारी सेना की तैयारी देखें'। महाराजा के बारहदरी में आते ही सेना ने हाज़री के बहाने महाराजा को घेर लिया। सेना के सिपाही सामने से होकर निकलने लगे। अजीत सिंह ने कहा: मेरे एक सिपाही की कुछ प्रार्थना है आज्ञा हो तो उसे बुला लिया जाये। महाराजा ने कहा: 'बुला लो'। एक आदमी महाराजा के पीछे आकर खड़ा हो गया। फिर अजीत सिंह ने कहा "महाराज यह एक दुनाली बन्दूक लन्दन से आई है, इसे देखिए"। महाराजा ने जब हाथ बढ़ाया तो उसने गोली दाग दी। पीछे खड़े आदमी ने तलवार से महाराजा का सिर काट लिया। उधर लहणा सिंह ने कंवर की हत्या कर दी। दोनों अपना-अपना काम करके किले की ओर चले। रास्ते में राजा ध्यान सिंह मिल गए।

सन्धावालियों ने जो किया था बताया। सुन कर राजा ध्यान सिंह को क्रोध आया। वे हत्यारों को किले के भीतर ले गए। मन में आ रही थी कि इन पापियों को क्या-क्या दण्ड दिया जावे। अजीत सिंह ने एक आदमी को संकेत किया उसने राजा को गोली मार दी। हत्यारे दालाम में जा बैठे और राज-प्रबन्ध सम्हालने की सोचने लगे। वहीं गुरुमुख सिंह ज्ञानी और बेलीराम मिश्र आ गए। गुरुमुख सिंह महाराज रणजीत सिंह का कृपापात्र रहा था। यह शेर सिंह के पुत्र कंवर प्रताप सिंह का अभिभावक रहा था। कंवर को पाहुल भी उसी से दिलाई गई थी अत: बेली राम मिश्र महाराजा रणजीत सिंह के समय से तोशाखानिया (कोषाधिकारी) चला आ रहा था। महाराजा शेर सिंह ने उस पर अपार कृपा का भाव बनाए रखा। राजा ध्यान सिंह ने उसे कंवर नौनिहाल सिंह की कैद से निकाल कर फिर तोशेखानिया बनाया था। गुरुमुख सिंह कड़ाह प्रसाद और मिसरी बांट रहा था। सन्धावालियों को फूलमालाएं पहना रहा था। मिश्र उनको पहनाने के लिये खज़ाने से आभूषण लाया था। वे दोनों खुशियां मना रहे थे और कह रहे थे कि सन्धावालियों को प्रभु पद पर पाकर वे धन्य हो गये हैं। लोग इन नमक-हरामों को धिक्कार रहे थे। संसार में होनहार के खेल न्यारे हैं, इसके आगे ज्ञानी, बली, बुद्धिमान सभी हारे हैं।

- छन्द सं॰ ३२३-३५५।

राजा हीरा सिंह इस समय 'बुद्धू के आवे' की बारहदरी में थे। किसी ने समाचार जा दिया 'सन्धावालियों ने महाराजा और कुंवर की हत्या कर दी और फिर यह भी सुना कि राजा ध्यान सिंह को भी स्वर्गधाम भेज दिया गया है'। यह समाचार पाकर राजा हीरा सिंह उदास हो गए। बोले "विश्वास में दगा भई।" जो जो बातें राजा ध्यान सिंह के मन में हत्यारों को दण्ड देने की आई थीं वे सभी राजा हीरा सिंह के मन में भी आईं। हीरा सिंह बोले 'अब हत्यारों की मौत आई है'। सेना के अधिकारियों को बुला कर उन्हें समाचार से अवगत कराया और पूछा: तुम्हारी क्या राय है? सब ने कहा 'आप का हाथ सिर पर हो तो हम बदला ले के दिखाएं'। हीरा सिंह ने प्रण किया कि

"जब तक दुश्मनों का सिर नहीं हाथ आता पानी नहीं पिऊंगा"। सभी ने इसी प्रकार कहा 'हमारी भी यही प्रतिज्ञा है'। फौज को लड़ाई का सामान बंट गया।

छन्द सं० ३५५-६५।

गणेश और राम की पूजा कर के तथा शकुन विचार कर युद्ध जीतने को चले। रास्ते में सभी प्रकार के शुभ शकुन सामने आए। राजा ध्यान सिंह के साथियों में उनके तोशाखानिया मिश्र लाल सिंह थे, जिन्हें चाव चढ़ गया था, कि अब अवसर आया है जब वह अपने स्वामी के प्रति अपनी भक्ति का प्रदर्शन कर पाएंगे और सरकारी दफ्तरों के मुखिया राजा दीना नाथ भी थे। तोप के गोलों ने किले की एक दीवार गिरा दी। घमासान का युद्ध होने लगा। लहणा सिंह को गोली लगी, वह एक भोहरे (भूमिगृह) में जा छिपा। अजीत सिंह को सूचना मिली कि उन की फौज मारी गई है और लहणा सिंह घायल हो गया है तो वह कमन्द लटका कर किले के पिछवाड़े से भागने का प्रयत्न करने लगा। भाग्य अनुकूल नहीं था, रस्सा टूट गया। गिरते हुए अजीत सिंह का सिर नजीबों-(मुसलमान सिपाहियों) ने काट कर राजा हीरा सिंह के आगे ला रखा। राजा हीरा सिंह ने उन्हें बहुत कुछ इनाम दिया और आदेश दिया कि लहणा सिंह का सिर भी लाया जाए। फौज पहले ही किले में शत्रुओं की खोज़ कर रही थी। किसी ने भोहरे में छिपे लहणा सिंह का पता बता दिया। कई वीर सिपाही बढ़ कर भोहरे में जा घुसे और लहणा सिंह का सिर भी काट लाए। दोनों की लाशें कीच में खिंचवाईं गईं। ध्यान सिंह के रनवासे में जब समाचार पहुंचा कि हीरा सिंह पिता का बदला ले कर आया है तो सब ने अनेक प्रकार से आसिष दी। महाराजा ध्यान सिंह के मृत शरीर का अन्तिम संस्कार चन्दन की चिता बना कर किया, पंद्रह रानियां सती हुई।" तब हीरा सिंह ने जलपान किया। -छन्द सं० ३६६-४४९।

महाराजा रणजीत सिंह के तीसरे पुत्र दलीप सिंह का राज्यभिषेक हुआ। राजा हीरा सिंह प्रधान मन्त्री नियुक्त हुए। हीरा सिंह ने हुकम दिया कि सरदारों

के मृतक शरीर नगर के दरवाज़ों पर लटका दिये जावें। मसती दरवाज़े पर लहणा सिंह और दिल्ली दरवाज़े पर अजीत सिंह का धड़ लटकाया गया। कुछ दिवस बीते पर दलीप सिंह का जलूस करवाया गया।

छन्द सं॰ ४५०-४५६।

किसी ने अतर सिंह को अजीत सिंह और लहणा सिंह के कुकृत्य की सूचना दी तो वह सतलुज पार भाग गया। सात महीने कुरुक्षेत्र में उदास भाव से बिताए। फिर उस पर मौत का भूत सवार हुआ तो फौज इकट्ठी करने लगा और कुछ दिन पा कर सतलुज के इस पार आ उतरा। राजा हीरा सिंह ने सुना तो कहा, "बद अंग देने आया है" उसे मारने को मियां लाभ सिंह भेजा, वह युद्ध कर के अतर सिंह का सीस काट लाया। छन्द सं॰ ४५६-४६२।

आगे राजा हीरा सिंह के दीवान जल्हा पंडित तथा राजा हीरा सिंह की महमा १६ छन्द तथा अन्त में एक छन्द छन्दों की गिनती का देकर कथा समाप्त कर दी गई है।इस रचना में १८० कबित्त, २ सवैये, १८८ दोहे, ३२ सोरठे, १ अमृतध्वनि, १९ प्रमानिका ३२ भुयंग प्रयात, ६ शंखनारी, ३ पद्धरी, २ बिद्युन्माला, २ मल्लिका तथा कुल ४८७ छन्द प्रयुक्त हुए हैं।

राजा ध्यान सिंह की हत्या हो जाने तक कथा केवल इतिवृत्त के रूप में अग्रसर होती है। आगे चलकर उसमें कुछ भावना का पुट आ जाता है किन्तु यहां कवि संतुलन बनाए नहीं रख सका। लाख सभी घटनाएं कवि के आंखों देखते घटित हुई हों उसे युद्ध का निजी अनुभव नहीं है। ग्वाल वैभव का कवि है। यहां भी उसकी रुचि साज-सामान गिनाने की अधिक है। उसमें उत्तेजना जगाने की वह शक्ति नहीं जो वीर कवि तथा सफल वीर काव्य के सफल रचयिता कवि से अपेक्षित है। उसका नायक नीति-निपुण अधिक है और योद्धा कम। हां वह समय आते युद्ध से भागता नहीं। वह कायर नहीं है। अपना दायित्व जानता है। वह उद्धत आक्रांता नहीं हैं किन्तु आत्म रक्षा

तथा आत्म-सम्मान की रक्षा में सफलता सहित युद्ध का खूब संचालन करना जानता है। एक बात और भी है कि आमने-सामने वीरों को व्यक्तिगत शौर्य-प्रदर्शन का अवसर देने वाली युद्ध प्रणाली का युग बीत चुका था, जहां आज हम युद्ध के संक्रमण-निष्ठ वर्णन के अभाव में समझते हैं कि परम्परागत ढंग से वीर रस का पूर्ण परिपाक दृष्टिगत नहीं होता, अगर कल्पना का ही सहारा लेकर कवि ऐसा वर्णन करता भी तो वह काल के अनुकूल न होने से आडम्बर सा ही दीखता! यह स्थिति ऐसी है कि जिसके लिए कवि को दोष देना अनुचित्त है। जब कि साहित्य को हम गतिशील उद्बोधन मानते हैं तो फिर एक ऐसे युग में जब युद्ध एक सामूहिक क्रिया हो गई थी किसी कवि से वीरों की आमने-सामने की लड़ाई के खून खौला देने वाले वर्णन की आशा करना वस्तु-स्थिति का अतिक्रमण भर होता। वे नए मानदण्ड, जो नई स्थिति का वास्तविक चित्रण, नई प्रणाली से आँक सकें तथा उसे श्रेय दे सकें, अभी सामने नहीं आ पाए थे। ऐसी दशा में हमें युद्ध-स्थली में मार-मार अथवा धांय-धांय की पुकार और धुंकार के चित्रण की खल-भल पर ही सन्तुष्ट होना होगा।

ग्वाल ने स्वयं लिखा हैं कि विजय-विनोद की रचना पंडित जल्हा के आदेश पर हुई है[१६]। जल्हा पंडित को इस ग्रन्थ की रचना करवाने की आवश्यकता क्योंकर हुई इसका उत्तर दो प्रकार से दिया जा सकता है। एक तो डोगरा परिवार उन सब को ठिकाने लगाने में सफल हो गया था जो उनके रास्ते का कंकर हो सकते थे। इसे वह अपनी नीति की सफलता मान सकते थे अत: चाहते ही होंगे कि उनका यश कवियों की वाणी पा कर अमर हो सके। दूसरे, यह भी कारण हो सकता है कि उन की नीति पर लोगों में खास कर सिक्ख सरदारों में असंतोष फैलना शुरू हो गया हो और वे लोग अपने

---

१६. विजय विनोद-छं० सं० तथा ४८५।

पक्ष का समर्थन पाने के लिये जनता के सामने अपना दृष्टिकोण रखना चाहते हों जिसमें राजा हीरा सिंह को समय का मसीहा तथा राजा ध्यान सिंह को सर्व हितकारी शासक सिद्ध किया जा सके। जहां तक पहले ध्येय का प्रश्न है किसी हद तक रचना को सफल प्रयत्न कहा जा सकता है किन्तु दूसरा भाव अधिक सफल नहीं हो पाया क्योंकि थोड़े ही दिनों में वही सेना जो राजा हीरा सिंह पर जान छिड़कती दिखाई गई थी उसकी जान लेवा सिद्ध हुई।

वस्तुत: सत्य यह है किं इस रचना के कवि से इतिहास तथा इतिहास से जुड़ी किसी सैद्धान्तिक भावना की आशा रखना फज़ूल है। ग्वाल ने अपना कथा-पात्र और वातावरण अवश्य ऐतिहासिक चुना था किन्तु वह अपने एक प्रतिपाल की प्रशस्ति मात्र लिखने बैठा था जिसे उसने यथा अवसर तथा यथा शक्ति इतिहास के चौखटे में सजा कर निबाहा है और बस ----

अथ बिजै विनोद ग्रंथ लिखयते

मंगलाचरण

कबित॥

मुनि मनता के मोदता के दैन हारे दिव्य,
दस नख चंन्द्र की प्रभा के पुंज पाके हैं।
सुमत मता के गुन ज्ञान गुरता के दैन,
ऐन करूना के नैन शशात्र संहिता के हैं।
गवाल कवि छबि के छता के कलसा के नग,
शब्द सिंधु ताके सोधी बोधी बसुधा के हैं।
सौरस सता के मृदुता के मञ्जुता के छाके,
ताके बंदि चरण सरोज सारदा के हैं॥१॥
दशरथ नन्द तैं बुलन्द लंक गढ तोरयो।
बैरी बाल बृन्दता के भयो अति दाह है।
रोदन की धारै तै तरारैं चढि छाइ गईं
आईं है कि आईं पास, पाओगे न थाह है
ग्वाल कवि यातै कछु कीजिए उपाय।
नई नाव की न वाह है, जहाज की न राह है।
परबत का पुल हु पलक माहि टूट जै है
ऐसो तेज तोउ, दास पानी को प्रवाह है।२।
बेद व्यास वाक्य तै अद्वैतता प्रगट कीनी
ना तो जग जीवन को द्वैतताई जटती।
चार हूं बरन किये एक ब्रह्म दरसाय
भेस ब्रह्मचर्य दियो, जो न होए घटती।

ग्वाल कवि कहै पंथ खालसा अखंड मंडयौ,
लालसा को पूरण करैया है सु झटती।
होते जो न ऐसे श्री गोबिंद सिंह महाराज,
तौ न कलि काल की करालताई कटती।३।

ग्रंथ रचना का कारण

दोहरा॥

हीरा सिंह महाराज की लखि इच्छा अनुरूप।
श्री जल्हा महाराज ने, कियो विचार अनूप।४।
श्री जल्हा महाराज ने हुकम दियौ खुश हाल।
जे लाहौर लीला भई ते वरनों कवि ग्वाल।५।
श्री पंडित को हुकम सुनि, उपज्यौ हिय मैं मोद।
तब हवाल जाच्यौ सकल, राच्यौ बिजै बिनोद।६।
संबत ससि नभ निधि ससि, सावन सुकल सुमोद[१]।
तिथि सु अष्टमी भौम[२] को, प्रगट्यो बिजै बिनोद।७।

महाराजा रणजीत सिंह का राज-तेज

कबित॥

बाढ़ी मन आली आठो दिस गाढ़ी गाढ़ी
पाप पांति चाढ़ी तब दाढ़ी भूमि बिकलान।
जब हरि जु नै निज अंस प्रग्टायो भाये
रणजीत सिंह नाम पायो आयो सो जहान भान।
ग्वाल कवि कहै बिप्र, बेद, गौ, तुलसी, पिप्र[३]।
छिप्र भयो तिन हुं के रक्षक प्रतच्छ मान।

---

१. १९०१ बिक्रमी २. मंगलवार ३. पीपल

तेजवान ओ जवान ज्ञयानवान बुद्धिमान
दान औ कृपान को बहादुर मेहरबान।८।

ज्यौं ज्यौं बैस बाढ़ै त्यौं त्यौं बढ़त प्रताप आवै
पितु ही के आगै किते मारे दुष्ट ग्राह से।
आस पास कैयन नरिंदन के बृंद हुते
तिनै फंद डार किये बंद हर राह से।
ग्वाल कवि कहै महा सिंह के सुपूत पूत
रणजित्त सिंह नाम आम हुए वाह वाह से।
जहां जहां जस की खटाई की अवाई धाई
तहां तहां शत्रु फाटे दूध के कडाह से।९।
काबल सों कई बेर कतल करैया आए,
अतल[४] हूं हाल्यो चाल्यो यह दैव का करी।
दिल्ली ते चकत्ता कत्ता बांध बांध आए पर
काहुं सौं न भये सर, सभ की निसा करी।
ग्वाल कवि कहै महाराजे रणजीत सिंह
तिन को सहज जीति जीति कै कृपा करी।
ठाकुरी न काहुं की रहन दीनी पर्बत मैं
बाईस हुं धार[५] से कराई नित चाकरी।१०।
महाराज राजन के बीर रणजीत सिंह
प्रथम पंजाबी औ पहाड़ी जीते सगरे।
अटक पिशौर, कशमीर, मनकेरा अरु
मारी मुलतान कियो सभ डगमग रे।
ग्वाल कवि कहत नवाबन बिआब किये
मौत सों खराब किये लाखन सौं अगरे।

---

४. पताल लोक ५. बाईधार के पहाड़ी राज्य

जार दिये, फार दिये जल हुं मैं डार दिये,
भांति भांति मार दिये जे मलेछ सगरे।११।

दोहरा॥

बादशाह संज्ञया प्रसिद्ध, भई जगत सभ ठौर।
जा को सौही जंग को रहयो, न दूसर[६] और।२।
खैबर ते जे पर[७] रहैं, का नवाब का शाह।
तिन की नारी यौं कहैं, सुनो हमारे नाह।१३।

कबित॥

शेरन पै जानै शमशेर घालियां हैं वही
रणजीत सिंह जू की अहो फौजैं आवैं चालियां।
कालियां अकालियां की पंक्ति दूर दीसै कंत
जायंगी समहालियां न फेर ततकालियां।
ग्वाल कवि चाहत खुशालियां बिशालियां जो
राखनी हैं मुख पर लालियां बहालियां।
मेवन की डालियां तुरंगन की पालियां लै
मिलो मुकतालियां[८] दे नजर उतालियां[९]।१४।

दोहरा॥

ऐसै सुनि सुनि तियन तै, देस देस के ईस।
नजराने भेजन लगे, हाथ जोर नत सीस।१५।

कबित॥

काबली कंधारी सेब सरदा अंगूर दार्यो[१०]
तुरकी हजारों लागे, पठवन जे जचै।

---

६. बागड़ियां वाली प्रति में दूजो पाठ है। ७. पार पहाड़ी इलाके में।

८. मुकता अरथात मोतीओं की। ९. उतावली १०. दाड़िम, अनार

बलख बुखारे ते अजायब अनेक चीजैं
चीनवारे भेजैं कलदार तोप तुपचे।
ग्वाल कवि महाराज रर्णजीत सिंह जू को
भेजैं हद हद तुहफे सिंधु हद परचे।
जिन कियों वैर तिनि फैर मुख डेरा कियो[११]
खैर के चहैया दै नजर दीन ह्वै बचें।१६।
सहज सभा मैं महाराजे रणजीत सिंह
दोऊ अनी मूछ की मरोरतपरचै है।
तब कुछ ऐसी फैल जात है तसीर तेज
तिब्बत तमाम है अतिब्ब आम नचै हैं।
ग्वाल कवि कटै आस पास के महीप और
दीप बिन काटै राति बात को न रचैं हैं।
लचै हैं धरनि धूम मचै है जहान बीच
खिचै फन सेस ओ बराह ग्रास तचैं है।१७।
परम प्रतापी महाराजै रणजीत सिंह
केते केते रंक किये भूप भूपैं रंक सरजी।
चोर धाड़वीन की न राखी है निशानी काहुं
शेर गाइ पानी पियैं मेल इक मरजी।
गवाल कवि कहै जामैं, सभ गुन दैव के से
कौन कर सके जाकी नैक हुं कुमरजी[१२]।
जाके तेज, त्रास ते गर्भ गिरैं, गर्भनि के
द्वारे खड़े दूत लै ईरानिन की अरजी।१८।
लैनें तोपखाने की अरिन प्राण लैने करैं
दुष्टन अचैने करै जाको तेज ताव है।

११. फैर मुख डेरा कियो का भाव है, जिसने महाराजा रणजीत सिंह से वैर कीया, वह गोली से उड़ गया।

१२. इच्छा के प्रतिकूल

दीप दीप दीपत महीपति जहाज सम
आगै बढ्यो चाहें, पर दीसत कुदाव है।
ग्वालि कवि बादशाह रणजीत सिंह जू के,
फहरैं निशान ताकी उपमा बनाव है।
सद्द ह्वै सिंकदरी हिलावत अनेकों हाथ
आओ मत ईहां काल कहर दरियाव है।१९।
सैना को समाजैं साजैं अम्बर अडम्बर हैं
फिरका अनेक वहैं पवन सड़ाके सौं।
सयाह सयाह उरदी सिपाहन की घटा घनी
बोलियां कंपायन की गरज गडाके सो।
ग्वाल कवि बादशाह रणजीत सिंह आगै
जागैंगे अभागे कौन भूप के झडाके सौं।
कौन पै परैंगें ये पहियन के काल चक्र
कौन पैं परैगी तोप तड़िता तड़ाके सों।२०।

दोहरा॥

जेतो कछु प्रताप, तेतो कह्यो न जात।
कहिबे ते सौवों गुनों, जानों जगत बिख्यात।२१।
मार मार तरवार लिए, बहु गढ़ देस समाज।
कियो हजारन कोस मैं, महाराज नै राज।२२।
अफसर बहु सरदार बहु, पास मुसाहब ढेर।
तऊ जारज[१३] महाराज को, राखैं निस दिन घेर।२३।
लख्यों न कोउ सबन मैं, ऐसो साहिब होश।
जो समान राखे सकल,बिना रोष निरदोष।२४।

१३. हरामी

राजा ध्यान सिंह की आमद

कबित॥

कीनी याद बादशाह रणजीत सिंह जू ने
अर्जुन जू को अवतार भूमि आयो है।
रघुकुल माहि ध्यान आन उन पायो नाम
काम सभ मेरे को करैया जी सुहायो है।
पहले हुं कृषण अवतार मे सखा हो मेरो
ऐसे उरधार अति आदर बुलायो है।
भायो भयो मन को लगायो कण्ठ डारि बाहि
पास लै बिठायो छायो सुख सरसायो है।२५।

दोहरा॥

बादशाह उतशाह सौं, सौंप दियो सभ काम।
"बंदोबसत सभ राज को, तुम जानों बुध धाम।२६।
यौं सुनि स्वामी को हुकम, हाथ जोरि सिरु नाइ।
नित हित चित बृत दै लगे, करन काज समुदाए।२७।
ध्यान सिंह जू को सकल, गुण को सकै सम्हाल।
पै कुछ कुछ बरनण करैं यथा बिहित कवि गवाल।२८।

और उन का राज प्रबन्ध

कबित॥

कीनी तजवीज है तसील की असील ऐसी
ढील बिन आवे द्रव मुलक तै सदा रहै।
टूटे जिमीदारन को बिना बयाज रूपया दैं
रियायत कै लैनों दे दिलासा बार बार हैं।
फसल फसल मैं, हिसाब को चुकाए लैनों
बाकी नहीं राखनी सुबुधि को बिचार है।

दिन दिन मास मास बर्ष बर्ष देस देस
बिसवा बढ़े तै बढ़ी आमद अपार है।२९।
मुनशी दिवान सरदारन हजारन ते
दफतर ऐसो बनवायो जयों आईना है।
हर एक देसन की हाढ़ी अरु सावनी को
जुदो जुदो परचा हिसाब जामै चीना है।
फौज असवारी की नयारी नयारी फरदैं बनी
पैदल सिपाहन को जुदो ही करीना है।
लाखन की खबर हमेशा राखे रपटों तै[१४]
आमद खरच दीसैं छाप जयों नगीना है।[१५]। ३०।
तोपन की तयारी तखत पहिया औ पेटी लैस
घोड़ा मजबूत देख देख के लगाए हैं।
बारों मास गोलन की गौलैं अनतोले बनैं
बनत गुबारे नयारे भारै भारै भाए हैं।

---

१४. रिपोरटों से।

१५. कवि गवाल का यह कथन गलत हैं कि राजा धआन सिंह ने शेरे पंजाब की हकूमत का माली और मुलकी प्रबंध नई आईनसाज़ी कर के चलाया था। ध्यान सिंह से पहले दीवान भवानी दास जो काबुल में था, माल का आहला अफसर रहा था। शेरि पंजाब की मुलाजमत में सन् १८०८ में दाखल हुआ था। उस के बाद सन् १८१३ में दीवान गंगा राम को बुलाया गया। इस दीवान ने महिकमा फौज में हिसाब किताब को सम्भाला था। देखो: कोहली, रणजीत सिंह (पंन्ना ११९, १६३) इस के इलावा गवाल का यह कथन वैसे हिसाब से भी गलत है। ध्यान सिंह सन् १७९६ ई में जन्मा था और सन् १८०८ में १२ साल का और सन् १८१३ में १७ साल का था। साथ ही वह सन् १८०८ के बाद महाराजे के पास बतौर घोड़ सवार नौकर हुआ था। और सन् १८१९ से पहले दरबार लाहौर में वह कोई गिण्ती का सरदार नहीं था। सन् १८१९ में जमादार खुशहाल सिंह की जगह जब वह डिउढ़ी अफसर बना तब उस का रूतबा बढ़ा था। इस लिए इस से पहले उस से किसी माली या मुलकी प्रबंध की आशा रखनी बेबुनियाद है। देखो पानिक्कर, गुलाब सिंह, सफा १५,२६,२७

मौलियां अनंत अट जबर जबूरन के
गिनती न आवै दीसै परबत सुहाए हैं।
लाखन करोड़न मनों के प्रमाण दारू।
कई कोस कुप्पन के गंज सरसाए हैं।३१।
पथरी[१६] अनन्त हुं कै बोरे भरे भोहरेन[१७]
जामगी जमानत की पांति अति भारी हैं।
घाह ढ़ेर, चरी गरी लाखन लगाए दीनी
नाजर के खास भरे कैयक हजारी हैं।
और घीऊ गुड़ आदि कहां लैं गिनाऊं चीजैं
घने ही मसाले धरी औषधि हुं नयारी हैं।
सौ हुं बर्ष जंग मैं न भंग परे काहुं अंग
इतनी जमैयत श्री ध्यान सिंह धारी हैं।३२।
दिस दिस देस देस किले अर कोटन पै
मद्दत लगाई बनै पुखत जु जैसे हैं।
कूलैं काटि खड्डे काटि, नदी काटि, नहरैं लै
खाई भरवाई ठौर ठौर तट तैसे हैं।
बुरजन पै जहां तहां तौपैं चढ़वाए दीनी
यथा योग किलों पै सिपाही राखै वैसे हैं।
राहि राहि नाके नाके चौंकी यों बिठाए दीनी
धाड़वी औ चोर दुष्ट आवै कहु कैसे हैं।३३।
सुनै फर्याद का गरीब कहा गब्बर की
राखत अटक्कर सभी की अयारी नयारी हैं।
जैसो जाको झगरो है वैसो इन्साफ साफ
दंड देत देखि तकसीर हौली भारी हैं।

---

१६. चकमाक पत्थर १७. तहखानो में

ता मैं एक अचरज बड़ों ही निहारियत
दोऊ थोक राजी होत नर कहां नारी हैं।
सभ कहैं धन्न धन्न ध्यान सिंह तेरो जनम।
राखी प्रजा ऐसे जैसे राखत महितारी हैं।३४।
जैसों जिस लाइक है तैसो सनमान करै
जीवका दैं पालन करत सभ ही को है।
फौज राजी प्रजा राजी मुनशी दिवान राजी
होए अति राजी आवै पाहुनो कहीं को है।
बंधु राजी सुत राजी सभै सरदार राजी
मालक कहत राजी होए सखा जी को है।
ही[१८] को है बिमल सुबुद्धि को है गंभीर भारी
धयान सिंह टीको जस लागै सभै नीको है।३५।
जंग माहि अरजुन सों धारत धनुख बान
बीर ध्यान सिंह तेज भान सों तूलयो रहै।
रोस जाकै पास हू न आवै कोस कोस लग
छमा को समुद्र सो तो हिय अतुलयो रहै।
ग्वाल कवि कहै बुद्धि गनपत सम जाकी
काम कैसो रूप सो अनूप प्रफुलयो रहै।
देख न सकत दीन लोगन के दूखन को
दिल मैं दया को दरवाजो सो खुलयो रहै।३६।
महांबीर सारखो प्राक्रमी श्री ध्यान सिंह
प्रगट भयों है बीरता को एक गुट ही।
जहां जहा जुरी जंग सिंह पातशाह जु सों
तहां तहां सम ते अगारी जाइ जुट ही।

---

१८. हृदय का

तीरन तै तुप्पक तैं तोपन तैं तचैं तचैं

जचैं जचैं अगन हु को बानन को छुट ही।

कुटु ही अरिनि मारै चुटु ही चपाइ कर

लुटु ही लपकि माल तिन के अटुट ही।३७।

चित्त ही है चोर और को न शोर कहूं

धाड़वी त्रिया के द्रिग दौरत दरुसत है।

पौन ही परम विभचारी जहां देखियत

सूरज को तेज अनाचारी उदै असत है।

गवाल कवि कहै जहां दीप फल ही को खून

लरत मनोरथ ओ अलि पुजिं मसत है।

धन्य रघुकुल धन्य धयान सिंह महाराज

जानै कियो देस देस ऐसौ बंदोबसत हैं। ३८।

राजा ध्यान सिंह को वजीरी

दोहरा॥

धयान सिंह जू की लखी, बादशाह सभ रीति।
रोम रोम आनंद कै करी खरी पुनि प्रीति।३९।

कबित॥

सिंह बादशाह जू ने लायक वजीरत कै

जानि सुख दायक सु कियों जिहि तौर है।

एक औ पचास पारचेन[१९] को खिलत दियो

राजा पद दै कह्यो वजीरत की ठौर है।

१९. ५१ दुशालों का खिलअत दिया।

राजा ध्यान सिंह तूं ही रच्छुक निदान मेरो
तूं ही प्राण मेरो तूं ही छत्र अर चौर है।
सूबा सरदारन को राजन हजारन को
मुलक अपारन को कियो सिरमौर है।४०।

दोहरा॥

ध्यान सिंह महाराज को, जस छायो छिति[२०] माहि।
आदर नित दूनो करत, बादशाह चित चाहि।४१।
इह बिधि अति आन्नद सों करत रहै नित राज।
बादशाह रणजीत सिंह, महि राजन सिर ताज।४२।

राजा हीरा सिंह का जन्मोत्सव

कबित॥

राजा ध्यान सिंह जू को पुत्र को जनम भयो
कियो नाम करन हीरा सिंह[२१] मन भायो है।
शुभ दिन शुभ घरी सुभदा नछत्र योग
सुन्दर लगन राजयोग सरसायो है।
नौबत घुरन लागी, सलकैं छुटन लागी
सभ नर नारिन कै मोद उपजायो है।
बिप्र पढ़ैं बेद मंत्र, जोतिषि जनम पत्र
जुदो जुदो गृहन को सुफल सुनायो है।४३।

सवैया॥

केलन के खरे थंभ खरे दुहुं ओर दिवारन के दरसाए।
मोतिन सों मिली बंदन बार तिलोंन के ता मध गुछ सुहाए।

---

२०. पृथवी में दुनिया पर। २१. हीरा सिंह का जन्म सन् १८१६ ई॰ में हुआ था।

पांच हुं पल्लव युकत धरे कलसा भर स्वर्न के जे छबि छाए।
रोचन[२२] के कई थापे थपे अर पान वतासन सों चिपकाए।४४।

सोरठा॥

मोतिन चौक पुराए, नौहूँ ग्रह पूजन कियो।
रघु कुल राम मनाए, गुरु प्रोहित पद सिर धरो।४५।

दोहरा॥

होत आरतो रतन मय, गावत मंगल गीत।
नयोछावर मुहरैं करैं, बांटत करि करि प्रीति।४६।

कबित॥

श्री महीप ध्यान सिंह बैठे अति आन्नद मैं
विप्रन के पग पूजि देत मन भायों है।
मोतिन की मालैं जिगा जटित मसालैं बालैं
कंगन दुशाले पहिरावत सुहायो है।
केतन को हाथी देत हौदन समेत साज
केतन को घोडे साज सरस लगायों है।
केतन को भूमि देत, केतन को गाम देत
केतन को धाम देत देत न अधायो है।४७।

छंद भुयंग प्रयात॥

करैं विप्र भोजन तिलक छाप लाए।
बिबिध भांति के है सु लडुऐ सुहाए।
कई रूप बर्फीन कें हैं परोसे।
धरी हैं जलेबी अमृती समोसे।४८।
बहुत सेत[२३] फेनी सुखजला खरे हैं।

---

२२. गोरोचन रोचन नाम हलदी और केसर का भी है। २३. सवेत, सुफेद।

बिदाने सु पेड़े जु खुरमा धरें हैं।
धरी लौज बादाम की नोकदारैं।
भरे दूध के हैं कटोरे अपारैं।४९।
कचौरी बनी खूब खसता अतुल्ली[२४]।
सु पूरी मुलायम गरम गोल फूली।
मिली मंजु मेवा कड़ाहो मैं खासी।
खिलावट तरावट पकावट प्रकाशी।५०।

दोहरा॥

तरह तरह तरकारियां पापड़ बहुत अचार।
सिखर्न सुंदर राइते, धरे मुरब्बे चारु।५१।
लेहु लेहु हूजो तृपत, विप्र मंडली सर्ब।
पान लाईची दैं बहुत, दई दच्छना दरब।५२।

छंद भुयंग प्रयात॥

नचैं अपसरा सी जु पातुर नवीनी।
महां रूप रंगी उमर मैं नवीनी।
करैं वे कटाछैं सु आछे अनेकं।
नई ही नई लत गति एक एकं।५३।
बतावैं अदाएं कभुं दाएं बाएं।
कभू हट पिछारी कभू बढ़ि अगाएं[२५]
नये ते नये भाव गति मैं कढैं है।
मनो मोहनी मंत्र से वै पढैं हैं।५४।
बजैं हाल तबले सरंगी सुहाई।
तिनों में यही एक धुनि है सुनाई।
बधाई बधाई बधाई बधाई।
सही एक आवाज चहुंधा[२६] हैं आई।५५।

---

२४ अतुल्य २५. आगे २६ चारो तरफ से।

किते ही कलावंत जहां हैं सुहावैं।
लियैं वे तंबूरा सु मंगल जु गावैं।
अनेकों तरह के बजे है सु बाजे।
फिरैं लोग उतशाह के साज साजै।५६।

महाराजे की ओर से उत्सव में अधिकता

दोहरा॥

बादशाह रणजीत सिंह, सुनि यह परम अनंद।
करी रौशनी नगर मैं दिस दिस दीप अमंद।५७।

कबित॥

जाइ जाइ दूर्बा[२७] बादशाह को अनेकैं दई
कई बकसीस दै असीसैं चले घर को।
फूलि फूलि आवैं सरदारों के समूह जहां
सोभित भई है सभा, करै कौन सर को।
ग्वाल कवि कहै जहां, होत है तमाशे बहु
पातुरैं करत नृत्यकारी भाव भर को।
केती तान तानि लेत, गति आनि आनि लेत
जानि जानि लेत मंद मुसकान बर को।५८।
छूटत अनारों की हजारन कतार जहां
फूटत धमाके शबद होत हैं धड़ाके के।
आसमान जान की है बान जामैं ऐसे बान
लाखन चलत चढ़ैं तारे सो तड़ाके के।
मंजु महिताबन की चांदनी चमक रही
चादर छुटे है जामैं पुंज है पड़ाकै के।

---

२७. दूब-पुत्र के जनम की खुशी में हरे हरे घास की दूब टांगने का हिंदुस्तान में आम रिवाज है।

फूलझरी झरी परै, चरखी चकरी परै
सूती बिखरी परै भू-चपा है सड़ाके के।५९।

दोहरा॥

आतशबाजी, और हूं, बिधि की छूटंत।
उडत बुरज सो लखत हैं, कर कंतन कै कंत।६०।
इह बिध खुशी मनाइकै, करत रहे नित राज।
अति उतशाह चढ्यो हियैं, तिह देखन के काज।६१।

हीरा सिंह महाराजे की हज़ूरी में

कबित॥

बीते खट मास तब बादशाह फरमायो
राजा ध्यान सिंह जू मंगाओ सुत भयो जो।
तब महीपाल निज लाल मंगवायो जायो
जाए सरकार को दिखायो रूप नयो जो।
देखतही बादशाह गोद लै लियो है लाल
करि करि प्यार मुख चुंबे दैव दयो जो।
रूप ही को रूप है कि काम को सरूप है
के मोहन अनूप है, अनंद ऐसे छयो जो। ६२।
केतक मंगाए तोड़े रूपयों के सिर वारे।
केतक मंगाए घोड़े दिए वाही वार हैं।
हाथिन के हलके सजाए स्वर्ण हौदन सौं
बांट दिये हाथों हाथ सजित शिंगार हैं।
हीरन के मोतिन के, लालन के पन्नन के,
हार बार देत कितनी कतार हैं।
खेसन की, चोगन की, कहै को दुशालन की,
देत न अघात छाए आनन्द अपार हैं।६३।

कैयक हजारन मनों की अन्न ढेरी लाए
छ्वाई छ्वाई हाथन सों तुरत बंटाई है।
घृत मिसरी ते आदि बिबिध साम्रगी हूं
वैसे ही अनेकन को अधिक लुटाई है।
गऊअन की अवली शिंगारन सों साजि साजि
तैसे ही छ्वाई हाथ बिप्रन गहाई है।
खूह दिये, गाम दिये और जिन मांग्यो आए,
सोई ताहि दयो खुशी रोम रोम छाई है।६४।
तास बादलेन सों किनारिन सों साटन सों।
लसह पीरी सबज पुषाकें पैह्न आई है।
जगमग जेतैं होत जिन की जवाहर सी
जौहर जमात कंचनीन की सुहाई हैं।
गाइं गाइ तानन बनाए भेद भाइ भाइ
दाइ दाइ दिल की हरन सरसाई हैं।
मंद मंद मुसक्यात हसि जाति मुरि जाति
लचि जाति नचि जाति भाखत बधाई हैं।६५।
सभ सरदारन की मंडली उमंड करि
आए सिरवारने करत जिय खोलि खोलि।
एक और भंडन के ह्वै रहे घमंड बड़े
कित हु कलावंत की गौलैं गावैं तोलि तोलि।
अतर गुलाब छिरकाव होत सभा बीच
लावैं भाल चंदन जो केसर को घोलि घोलि।
फूलन की मालैं हालैं हिय पै संभालै नाहि
भर खुश्हालैं, हंसि हालैं मृद्दु बोलि बोलि।६६।
कंपन मैं पलटन मैं बाढैं झाडैं ठौर ठौर

तोपन की होन लागी सलक सड़ासड़ी।
धौंसा की धुंकार, झनकार झांझ ढ़ोलक की
बांसरी की तैसी खनकार है खड़ाखडी।
नौबत टकौरें घोर होत शहनाईन की
दौरे द्वार द्वार मंगलीजन झड़ा झड़ी।
आपस मैं बैरी बैरी हंसि हंसि सैरी करैं
छाए खुशखैरी नहिं बोलत बड़ाकड़ी।६७।
किले में कगूरन पै, बुरज फसीलन पैं
बारहदरी पै बंगला[२८] पै रौंस दौर मैं।
जाहर ही जगा होत बाहर नगर माहिं
बारन अटारन मैं, छज्जन मैं पौर मैं।
कूचन मैं, हाटन मैं, बिदत बजारन मैं
कोट हुं के द्वारन मैं, दिप ठौर ठौर मैं।
मानहु दिवारी सैकडों की इकैठी आज,
आइ भई रौशनी अजायब लाहौर में।६८।

दोहरा॥

भयों बिबिध बिधि और हूं अति उतसव सरकार।
सभ गणना कर को सकै, लखयो बडो दरबार।६९।
जयों जयों बप दाढ्यों करी, तयों तयों बाढयो खेल।
तेज रूप बाढ़त रह्यो, बढयो सुखन को मेल।७०।

---

२८. यहां बंगले से भाव वह चांदी का बंगला है जो महाराज रणजीत सिंह ने लगपग ६०००० रूपये की लागत से बनवाया था। हरेक साल दुशहरा दरबार के मौके पर यह बंगला अमृतसर लेजाया जाता था। सिख राज कें अंत होने पर यह बंगला दरबार के और सामान के साथ ही अंगरेजों के हाथ आया और रूपये ढालने के लिए टकसाल में बंबई भेजा गया।

महाराजे की ओर से हीरा सिंह का पालन-पोषण

कबित॥

हीरा सिंह जू को बादशाह लै खिलायो करैं
गोद ले हिलावै दुलरावें भावें हैं।[२९]
झुंजना बजावैं कभुं फिरकी फिरावैं
कभुं लै बादामन की लौज को चटावैं हैं।
कभूं हंसि गलि लावैं, कभुं बात बतरावै हैं
कबहूं पिलावैं दूध मिसरी खिलावैं हैं।
संग लै सुलावैं कभुं छाती पे लिटावैं
कभुं बोलन सिखावैं, कभुं चलन सिखावैं हैं।७१।
रधुकुल भूखन श्री अवधेश दशरथ
जिन कै भए हैं जैसे राम जु दुलारे हैं।
जैसे बृज महाराज नंद जु के नित्य
मोहन जु आठो याम आंखन के तारे हैं।
ग्वाल कवि जाहर जहूर जग जोईयत
जैसे सिंधु जू के चंद अति सुखकारे हैं।
तैसे बादशाह रणजीत सिंह जु कैं अब
धयान सिंह नंद हीरा सिंह प्राण प्यारे हैं।७२।
एको पल पास ते न न्यारे होन देत जिनैं
खान पान श्यन हूं मैं पास ही सुलावै है।
आवै सतरावै तुतरावै बतरावै जाए
कभुं इतराए कतराए फिर धावै है।
हां करत हूं करत तां करत तुं करत
खेलत हसत किलकित लपकावै हैं।

---

२९. यहां सिर्फ हीरा सिंह के साथ ही नहीं, बलकि रणजीत सिंह का स्वभाव था कि वह और सरदारों के लड़को के साथ भी ऐसे ही प्यार रखता और उन का लालन पालन करता था। मैकरकीगर ने इस की तसदीक की हैं। यह तो प्रधान मन्त्री का पुत्र था।

जैसे बादशाह को न इन बिन भावै तैसे
इनहु को उन बिन पल न सुहावै है।७३।
मूंगन की, मोतिन की, हीरन की मालैं लालैं
मुंदरी जडाऊ कड़े सोने के सुहावैं हैं।
घोड़ा हाथी रथ खासे बग्घी पालकी औ गऊ
बासन अनेक चांदी स्वर्ण के धुरावैं हैं।
खेस औ दुसाले कीमखापादिक वसत्र बने
नगद अनेक तोड़े तुला लै तुलावैं हैं।
जेते दान कछु आप करे सरकार सदा
तेते ही सु दान हीरा सिंह पै दिवावै हैं।७४।

हीरा सिंह को पदवी

दोहरा॥

राजा-राजा कहि सदा, बोलैं करि करि प्यार।
यही सुखन को सार सभ, समझयो जिय सरकार।७५।
सात बरस के जब भऐ, हीरा सिंह महीप[३०]।
तप सरकार विचार, जोड़े सब अवनीप।७६।

कबित॥

दियो सरकार नै खिलत हीरा सिंह जू को,
राजा पद दै कर बनायो फरजंद है।
आपने बराबर ही कुरसी जडाऊ डालि।

---

३०. हीरा सिंह को राजगी का खिताब १२ साल की आंयू में पिता मीआं धयान सिंह के साथ ही सन् १८२८ ई॰ को बैसाखी के पर्व पर दिया गया। अमर नाथ, जफरनामा रणजीत सिंह, पन्ना १८४; सीता राम कोहली, रणजीत सिंह, पन्ना २६२; सैयद मुहमद लतीफ के कथनानुसार हीरा सिंह उस समय १२ साल का था। देखो, हिसटरी आफ पंजाब, पन्ना, ४४० इस लिए कवि गवाल द्वारा उस समय की सात साल की उमर लिखना गलती है।

ता पर बिठायो तायो अधिक अनंद है।
फौज फौजदारन तै, भूप सरदारन तै
नजर दिवाए कियो हुकम बुलंद है।
जहां मेरो राज वहां रसम हीरा सिंह जू की
जगत चकोर को कियो मैं एक चंद है।७७।

दोहरा॥

या प्रकार सरकार नित करयौ करै अति पयार।
राज काज धारयौ करै, धरम दान संचार।७८।

महाराजा रणजीत सिंह का स्वर्गवास

कबित॥

यांही बिधि बहुत दिनां लौं जौ सुख राज भोग्यो
कियौ तब हिए मैं बिचार सरकार है।[२८]
आयो हो धरा पैं भूमि भार के उतारबे को
पालबे को गऊ ब्रिप्र बेद के प्रचार है।
सो जब सकल काम कर चुक्यो भांति भांति
अब भव-सिंधु ते उतर चलों पार है।
ऐसै उरि धारि माया मोह सिर छार डारि
किये भली बिधि दान बहुत प्रकार है।७९।
तिल धान आदि दै जो खोड़स बखानियत
दियो कई खोड़स दुजन पूजि मान सों।
चांदिन के हेमन के थाल आदि पात्र घने
दिये पात्र देख देखि परम प्रमान सों।
सूती बसत्र बिबिध बहुर पशमीनन के
सित ओ रंगीनन के पुंजि दै विधान सों।

२८. दरअसल इस समय सन १८३९ के महीना जून में महाराजा सख्त बीमार हो गया था।

खासे खासे खासे दिये, खेम युत खेमे दिये,
खुशी सो खजाने दै तृपत किये खान सों।८०।

दोहरा॥

गउ दान गज दान दै अस्व दान भू दान।
मानक मुकताहल अमोल, हीरा पन्ना दान।८१।

कबित॥

कढत किले ते बिप्र जे जे दान लै लै
तेते जाने न परत, देखि भूलैं घर बार के।
घोड़ा चढ़ें हाथी चढ़ें पालकी ओ खासे चढ़ें
रथ चढ़ें आवें लखि चकित बजार के।
धारि धारि बसन बिचित्र झलाझली के
दारिद दलादली के भूखन सुधार के।
तजे आवैं चिंता चित, रज्जे आवैं भांति भांति
सजे आवैं बजे आवैं बाजर बहार के।८२।
राजा ध्यान सिंह जू को पास ले बिठायो आप
जुदे जुदे भेद राज काज के बिचारे हैं।
सब समझाइके खजानों ओ मुलक सौंप्यों
फौज किले कोट सब सौंपत सुखारे हैं।
पुत्र सौंपि, नाती सौंपि बहुर संगाती सौंपि
पालन प्रजा को सौंपि मुदित निहारे हैं।
राज व्यवहार तज्यौ क्रम सों अहार तजयो
बानी को उचार तजयो[२९] हरि ध्यान धारे हैं।८३।
कुंड बनवाइ गंगा जल सों भराए ता मैं
पालथी लगाए मूंद लिए दृग द्वारे हैं।

---

२९. अर्थात सख्त बीमार होने से जबान बंद हो गई।

मंद मंद खुलैं मुदैं अधर सबर या ते
मालूम भयों है राम नाम ये उचारे हैं।
ऐसे कछु बार लौं प्रकार रहयौ देखबो को
फेर कछू पीछै तन सिथल निहारे हैं।
सिंघ बादशाह रण्जीत सिंह जू के प्राण,
फोर ब्रहमंड[३०] ब्रहम लोक को पधारे हैं।८४

शेर ए पंजाब का अन्तिम संस्कार

सोरठा॥

भई खबर रनवास, बादशाह हरि पुर गए।
रानिन कियो निकास, हम संग सतियां होइंगी।८५।

कबित॥

धिग धिग जिंदगी जहान बीच जोयन[३१] की।
बिना प्राणनाथ दुख गाथ जाम जाम मैं।
खान पान भूखन की भूख न रही है नैक
बसन बस न सकैं तन अभिराम मैं।
जाही संग सुवर्न सेजन पै सोवत थी
ताही संग रचै हैं आग सुवर्न ठाम मैं।
पति जू को संग लै कै चिता को जरै के फेर
छेऊं लोक फोर कै बसैंगी ब्रहम धाम मैं।८६।

दोहरा॥

ऐसै चित विचार करि, गंग जलि करि सनान।
दान बिधान लागी करन, सुमरि सुमरि भगवान।८७।

---

३०. ब्रहम रंध्र।

३१. पतिनियों की।

कबित॥

श्रृंग सुवर्न के रजत खुर ताम्र पृष्टि
पुच्छ माहि मोतिन के गुछ लटकाए हैं।
और बसत्र भूखन सकल साजि साजि कर
दिये बहु गऊ दान सरस सुहाए हैं।
निज निज भूखन जवाहर जड़त जेते
तेते उह बेर बिन ही लुटाए हैं।
द्रव्य दई, दासी दई रथ दिये, धाम दिये
लै लै हरि नाम सीस सबन निवाए हैं।८८।

दोहरा॥

नख सिख तै सोभा सजी, निकली हैं इक तार।
मानों सुवर्ग देवीन की, आई उतर कतार।८९।
खड़ग सिंघ पुत्रादि बहु जदपि हैं ह्वां पास।
तदपि हीरा सिंह को, दई असीस प्रकास।९०।
प्राण नाथ को प्राण प्रिय, जानत ही इह हेत।
नृप हीरा सिंहहि दई आशिष बुधि निकेत।९१।
जीओ जागो जगत मैं जगमग जोति अपार।
यो असीस दै दै चली करि करि कृपा सु प्यार।९२।

कबित॥

चंदन चिता मैं जाई बैठी हैं, बिधान करि
बयाहिता सिरहाने अनबयाही पग ओर हैं।
चार सात[३२] बालान को मंडल चहुंघा बन्यो
सत्य को प्रताप तेज बाढ्यो बहु जोर है।
बादशाह जू के ज्येष्ट पुत्र श्री खड़ग सिंह

---

३२ ग्यारां

आइ आग दीनी भयो जै जै शब्द शोर है।
सीता राम सीता राम, राधा कृष्ण राधा कृष्ण
वाह गुरू वाहगुरू माची घनधोर है।९३।

दोहरा॥

चिता माहि मुखि तियन के, अति कर रहे प्रकास।
अचरज देखयों आग मैं, कमलन कियो बिकास।९४।
अठारां सै छिआनवें, सम्मत जानो जान।
मास आषाढ़ तु कृष्ण पक्ष, पड़वा[33] भयो पयान[34]।९५।

कबित॥

आएं है अमर अमरावती ते अमृत लै
आगे दै नजर, कही तेरे हम चेरे हैं।
पुनय के प्रताप आप चाहो हुयां अलाप सुनों
चाहो सतय लोक माहि करियै बसेरे हैं।
ग्वाल कवि नंदन मैं बिहरो अनंदन सों
अपसरा स्वछंदन के बृंद बहुतेरे हैं।
कीजो अब राज रणजीत सिंह महाराज
भाज्यौ इंद्र आज ए समाज सब तेरे हैं।९६।
ऊरध चढ़त रणजीत सिंह महाराज।
लख कै सुरन आय आय कही बात है।
तुरी[35] करी[36], परी ह्वां तिहारे ऐसी है कि नहीं?

---

३३. प्रतिपदा, एकम।

३४. शेरि पंजाब महाराजा रणजीत सिंह का देहांत अषाढ़ वदि १, १८९६ बि: तथा २८ जून १८३९ ई० को हुआ।

३५. घोड़ी   ३६. हथिनी

बोले पातशाह साचे बचन बिखयात हैं।
हवां ते ह्यां सरस सभ ठीक है तो सही पर
मेरे तऊ न काम को कोऊक दरसात है।
सुघर सुसीली बनी सत की सता मैं ऐसी
सती सत्य लोक को सिताबी लिये जात है।९७।
स्वर्ग सिधारत ही सिंह पातशाह जू के
राजा जमराज भाज जिय मैं जले गए।
नरकी समाज परे झगर सु बयाज करि
आइ महाराज पै फिरादी[३७] उछले गए।
सतिन को रोक सरकार नों समझ सब
कीनो इनसाफ साफ झगरे दले गए।
केते बिधि लोक मैं सु केते बिसनु लोक माहि
राखि हरि लोक सत्य लोक को चले गए।
जम के भगै ते तम नरक वसैयन को
सम के समझि धाम बादशाह ढारे हैं।
कोटिन कंगालन कुबेर कोठरीन भरे
कौडे के करारन को कान लोक फारे हैं।
सेस भेस डसत महेस के महल पेस
जले जले जनन जलेस देस डारे हैं।
सुख लै सवारी लै सवाब के समाजन लै
सतिन लै आप सत्य लोक को सिधारे हैं।९९।

दोहरा॥

यह कोऊ मत जानियो, सतियन के आधीन।[३८]

३७. फर्यादी (यहा शुरग लोक में)

३८. यह कोई मत समझो कि महाराज रणीजत सिंह जी सतीयों (स्त्रीयों के) अधीन था।

गए मर्यादा रखन हित, सत्य लोक प्रबीन।१००।

कबित॥

सतिन के संग पति सत्य लोक ही को जात
जै जै सिंह पातशाह सनमुख तयार है।
भूमि हूं पै काहु के न वस मैं रहैं हैं कभु
त्यों ही पुन्य पुंज तैं उहाऊं अख़्तयार है।
गवाल कवि कहै अलका मैं, अमरावती मैं
नंदन मैं जाए कहुं करत बिंहार है।
हरि लोक, हर लोक, बिधि लोक सती लोक
चाहे जहां, जाइ तहां सड़क त्यार है।१०१॥

दोहरा॥

बाकी जो रनवास सो, रोदन कियो अपार।
जमना की सी ह्वै गई, नहर वहां द्वै चार।१०२।

कबित॥

फूलन के भेजबे को गंगा हरद्वार तीर
राजा ध्यान सिंह जू नै कीनी सब त्यारी है।
वर्दी अनेक भांति भांति की सु पहराय
पलटन पंगति निकासी यों अगारी है।
दाएं बांए दुहुंघा बराबर कतार दीसै
एक से कदम चलैं बाढै सोभ भारी है।
सिंह बादशाह रणजीत सिंह महाराज
तिन के सु फूलन की कढ़ी असवारी है।१०३।
पहुंची सवारी लुदिहाने जब जाइ कर
धाइ कर दरशन को नगर सु आयो है।

फूलन की बरखा चहुंघा ते करन लगे
जोरि जोरि हाथन अमित गुन गायो है।
जान कंपनी के बडे दोसत सभ साहिबान
आइ आइ टोपी खोलि सीस निहुरायो है।
गमी की आईन सों जु सलक सलामी करी
अमीं करी गमी सोच सभ ही को छायो है।१०४।

महाराजा खड़ग सिंह को राज-गद्दी

दोहरा॥

इति यों गंगा को गए बादशाह के फूल।
उत मैं नित क्रिया करे, खड़ग सिंह अनुकूल।१०५।
शासत्र विहित नित नित करै, चित हित पिंड प्रधान।
महां विप्र को पूज के, दिए बहुत से दान।१०६।
तुरी करी रथ पालकी, शैया अरू गोदान।
भूखन बसन सुभाव ते, चांवर छत्र महान।१०७।
ता पीछे फिर सुद्धु ह्वै करि कै बुद्धि बिचार।
सहित दक्षना द्विजन दिय, भोजन बहुत प्रकार।१०८।
दै प्रदक्षना दुजन कौ, कर जोरे सिरु न्याइ।
तब बिप्रन आशिख दई, राजौ तखत सुभाइ।१०९।
देसदेस के नृपन नै,औ निज दल सरदार।
पाग बंधाई सभन ने, जथा विहित विवहार।११०।

कबित॥

कीनो है बिचार श्री महीप धयान सिंह जू ने
अब खड़ग सिंह जू को तखत बिठाईयै।
वड़े वड़े जोतिषीन तुरत बुलाइ कही
सुंदर महूर्त को सोधि कै बताईयै।

और पूजनादिक सामग्री सभ त्यार होइ
गंगादिक तीर्थ को जल मंगवाईयै।
फरश बनै, गादी बनै, बसत्र बनै, ध्वजा बनै
छत्र बनै, चौंर बनै अति सुख दाईये।१११।

दोहरा॥

कहयो जोतिषिन जाइ के, सुंदर दिन ठहिराइ।
खड़ग सिंह जू को अबै, दीजै तखत बिठाइ।११२।
तब श्री राजा ध्यान सिंह, सामग्री सभ जोर।
दियो हुकम पुरि[३९] फौज मैं, राज तिलक है भोर॥ ११३।

कबित॥

सुंदर महूर्त बतायो जोतिशीन सब
तब ही लै रतन सिंघासन बिछायो है।
नौहूं गृह भूमि ओ सिंघासन चमर छत्र
शस्त्र आदि उचित समाज पुजवायो है।
बेदन के मंत्रन सों, तीरथादि तंत्रन सों
उक्ति युकित्त जंत्रन जलूस दरसायो है।
बेदी मिलि, सोढी मिलि, परोहित औ पंडितन
खड़ग सिंह जू को राज तिलक चढ़ायो है।११४।
खड़ग सिंह महाराज भए बादशाह अब
राजा धयान सिंह की वजीरी वही छाई है।
दिस दिस देस देस नगर नगर सब
जाहर जहूर फिरी एक सी दुहाई है।
छूटे तोपखाने तड़िता से तडड़ाइ करि
नौबत की घोर शहनाई सरसाई है।

---

३९. नगर में

चैन भयो चारो ओर खैर खैर भाखे सब
घर घर आज भई विमल बधाई है।
आदि श्री महीप ध्यान सिंह जू नजर दीनी
पाछै बहु भूप सरदारन दिखाई है।
कीनै सिरवारने सभी ने जथा-जोग तैसे
कोई लियौं करै चौर सोभ सरसाई है।
पंडित कवीसर असीस देत श्री फल दै
नाना छंद बंदन सों कीरति सुनाई है।
गावत रबाबी औ कलावंत कचहिरी मैं
बाहर ते गनका हुं गावत बधाई है।११६।
श्री वजीर महाराज ध्यान सिंह जू नै जब
यथा योग दीनो सभ ही को सनमान यौं।
केतन को घोड़े दिये, केतन को हाथी दिये
केतन को रथ दिये अर्थ महान सौं,
कड़े दिये, कंठे दिये, कलगी औ जीगा दिये
जगा दियो केतन के रूप रतनान सों।
केतन को कई पारचेन के खिलत दिये।
छ्वाई छ्वाइ खड़ग सिंह जु को शुभ पान[४०] सौं।११७।

कुंवर नौ निहाल सिंह की पिशावर से वापसी

दोहरा॥

भई भई सभ नगर मैं, भयो हमारों ईश।
ध्यान सिंह महाराज को, सभ ही देत आशीष।११८॥
खड़ग सिंह के कुवंर श्री नौ निहाल सिंह नाम।
सो वा समें पिशौर मैं, तेज हुकम बुधि धाम।११९।

---

४०. हाथ।

कबित॥

खड़ग सिंह महाराज जब ते संभारयों होश
तब ही ते राखी हुती बृति तपसीन की।
वैसी ही हिये की बृति राखी राम रटना मैं
बृति बदली न कछु तख्त नशीन की।
तब महाराज ध्यान सिंह जू बुलाए कौर[४१]
आए वे लाहौर बात भई है खुशीन की।
पिता के पगन परे उसतति[४२] हु करन लागे
श्री वजीर ध्यान सिंह भूप प्रवीन की।१२०।

दोहरा॥

ध्यान सिंह महाराज नैं, करी कौर सौं बात।
पिता तुमारे भजन मैं, रहते हैं दिन रात।१२१।

सोरठा॥

सब ही राज समाज, हाजर है तुम देखियैं।
करो उचित जो काज, जा ते प्रजा सुख रहैं।१२२।

दोहरा॥

ध्यान सिंह महाराज सों करि करि सदा सलाह।
कौर लगे कारज करन, तां ते राज निवाह।१२२।

---

४१. कुंबर नौ निहाल सिंह को पिशावर से बुलाने का यह कारण गलत बताया है। असल कारण सरदार चेत सिंह बाजवे को, जो महाराज खड़ग सिंह का प्रामर्शदाता था, मारने का प्रबंध करना था। ध्यान सिंह की सरजिशों का यहां से आरम्भ होता हैं।

४२. स्तुति

महाराजा खड़ग सिंह का देहांत

बीते सोरह मास अरु, चौबिस दिन शुभ साज।
तब धयान हरि पुरि कियो, खड़ग सिंह महाराज।

सोरठा॥

रणजीत सिंह दुति रास, जहां दाह पायो हुतो।
खड़ग सिंह तिहि पास, दाह करम पायो भलो।१२५।

दोहरा॥

रानी त्रै सतियां भईं, खड़ग सिंह के संग।
करि करि दान विधान से, पावक जारे अंग।१२६।

डोगरों की साज़िश और कौर का अंत

कबित॥

अगनि दे पिता कौ कौर साहिब उहां से चले
संग सरदारन की भई बड़ी भीर है।
हिये बडी चाह अब पादशाह पद पैहौं
तख्त बैठबे की अब जागी तकदीर है।
या बिधि मनोरथ करत,आए थोरी दूर
आगे एक द्वारदीह, आइ गयो तीर है।
आइ खरे ताके तरे सखा[४३] को पकड़ि हाथ
ह्वां त्रिलोकि नाथ करी औरों ततबीर है।१२७।

---

४३. मियां ऊधम सिंह का हाथ पकड़कर यह मियां राजा गुलाब सिंह डोगरे का पुत्र था और गुलाब सिंह राजा ध्यान सिंह का बड़ा भाई था। जब कौर ने निहाल सिंह मियां ऊधम सिंह का हाथ पकड़कर उस दरवाजे के छुज्जे नीचे खड़ा कीया तो त्रिलोकी नाथ प्रभु ने और तदबीर रच दी। किन्तु यह कथन ठीक नहीं क्यों कि असल नदबीर रचने वाला नमक हराम ध्यान सिंह खुद था। (देखो रीनिंग फैमली आफ लाहौर और गारडनर मेमायर्ज।) कौर नौनिहाल सिंह की मौत का असल कारण राजा ध्यान सिंह ही था। उस की मनोकामना महाराजा रणजीत सिंह के खानदान का नाश करके पंजाब का राज्य भाग आपने पुत्र हीरा सिंह को देने की थी। शेर पंजाब

दोहरा॥

ऊपर ते कछुक, टूट पर्यौ तिह सीस।
सहित मित्र के कौर जू गमने पुरि जगदीश।१२८।
उनिस शत सों तीन कम, सम्वत कातक मास।
शुकल इकादसि को कर्यौ, पित सुत हरि पुर बास।१२९।

के देहांत के बाद सरदार चेत सिंह बाजवे को उस ने इसी लिए मारा था कि वह इस विष्य में उस के राह की एक बड़ी रुकावट था। पीछे महाराजा खड्ग सिंह और कौर साहिब भी इस साजिश का शिकार हुए। मृत्यु से पहले महाराजा खड्ग सिंह पेचिश से बिमार था और अभी पांच एक दिन पहले अमृतसर से आया था। कौर नौ निहाल सिंह भी दशहरे के दरबार पर पिता के साथ रहा था और फतहगढ ननिहाल से होता हुआ लाहौर पहुंचा ही था। अभी उस ने दम ही लिया था कि अचानक महाराजा का स्वर्गवास हो गया। (पं:ग:री: नवम्बर १८४०)

जब महाराजा खड़ग सिंह का संसकार कीया गया तो कुंवर नौ निहाल सिंह की सेहत अच्छी नहीं थी,। दूसरी चिन्ता की बात यह थी कि उस के निमक हलाल साथी उस समय बिखरे हुए थे। सरदार अतर सिंह संधावालीआ हिन्दुस्तान गया हुआ था। सरदार अजीत सिंह और लहना सिंह संधावालीआ कुल्लू की मुहिम पर भेजे हुए थे (देखो छंद अंक १३९-४०) जनरल वैंनतूरा कमला गढ़ मंडी में जंग कर रहा था और महाराणी चंद कौर कुंवर साहिब की माता फतहगढ़ माइके से लौट रही ती। ध्यान सिंह ने यह अवसर जान कर कुंवर साहिब को मार डालने का पूरा पूरा प्रबंध कर लिया। और किले के साथ डोगरों के पहरे लगा दिए गए। कुंवर साहिब के दिल में ध्यान सिंह की चलाकी को ताड़ कर शंका गुज़री थी और महाराजा के संसकार के बाद उस ने सीधा किले में जाना चाहा पर कुछ दरबारीओं ने, जो दिल से ध्यान सिंह के साथ मिले हुए थे, कुंवर साहिब को रोक कर हजूरी बाग के दरवाजे से निकलने पर मजबूर किया। यह देखकर कुंवर ने मियां ऊधम सिंह का हाथ पकड़ लीया और हजूरी बाग की तरफ चला गया। अभी बाग का दरवाजा निकल कर खडा ही था कि ऊपर से छज्जा आ गिरा जिस की चोट से मियां ऊधम सिंह तो उसी समय मर गया और कुंवर जी जख्मी हुए उनको डोले में डाल लीआ, जो पहले से मंगवा रखा था। किले के अंदर जा कर उस का खातमा कर दिया गया। (देखो: रेइनिंग फैमली आफ लाहौर, अलैगजैंडर गारडनर मेमुआइर्ज और पंजाब ग:री:सन् १९४७ सम्मत १९०० से तीन घट अर्थात १८९७ बि:।)

कुंवर शेर सिंह को ध्यान सिंह का बुलावा

कबित॥

देख के बचित्र यह चरित्र भूप ध्यान सिंह,
कौर को उठायकै छिपाइ राख्यो महलैं।
चोट लगी भारी सेंक होत बहु बारी पर-
अब है अराम "कही सभ सों यौं सहिलैं।
काहुं को न छल यह मालुम शताब भयौं
ऐसो बन्दोबस्त कियो जो न कोऊ दहलैं।
कौर को जो मीत सो भतीजो ध्यान सिंह जू को।
ताहि संसकारित कराय दियो पहलैं।१३०।
सिंह पातशाह रणजीत सिंह बीर जू के
दूजे सुत शाहजादा शेर सिंह नाम है।
सो हुतो मुकेरियां मैं आपनी जागीर बीच,
खेलत शिकार शेर आदिक मुदाम है।
तह्यां महाराज ध्यान सिंह जू सवार भेज्यौ
लिख के गुप्त अहवाल जो तमाम है
यहां आप आओ, अब बादशाह कहिवाओ
काहु को न दाओ आप ही को धन धाम है।१३१।

सोरठा॥

पहुंच्यो जाई सवार, जह शिकार खेलत हुते।
कह्यों जो सबह प्रकार, अरजी दीनी हाथ मैं।१३२।

दोहरा॥

बंचवाई अरजी तुरत समझायो सभैं ह्वाल।
डाक पहल बैठी हुती, तां पैं चढैं उताल।१३३।

सोरठा॥

पहुंचे आइ लाहौर मिले ध्यान सिंह भूप सों।
मृतक निकार्यों कौर, दाह कर्म कियो जबै।१३४।

संधावालीए सरदारों की आमद शेर सिंह से विरुद्ध मता

दोहरा॥

ध्यान सिंह महाराज नै, कीनों बहुरि उपाए।
शेर सिंह जू को तख्त, देहुं सु अब बैठाइ।१३५।
इतने में कछु और ही, भयों डौल बेडौल।
सो अब कहियत है कछु, बुधि जन लैं हैं तौल।१३६।
रणजीत सिंह महाराज के, कुल संबंधी भ्रात।
संगया संधावालीआ, है जग मैं बिख्यात।१३७।
अतर सिंह इक जानिए, लहना सिंह दुअ भ्रात।
एक भतीजा दुहुन को, अजीत सिंह बिख्यात।१३८।

कबित॥

खड़ग सिंह जू नै, रणजीत सिंह जु के हेत
गया को अतर सिंह भेजयो हो खुशहाल सों।
सो वह गया को जाइ मुड़ करि आवत हो
पहुंचयों अंबाले रहयों रात रंग जाल सौं।
ताही समें पाई सुधि खड़ग सिंह और कौर
दोऊ भए मृत एकै दिन थोरे काल सौं।
सुनत प्रमाण अंग्रेजी डाक माहिं पर
पहुंच्यो लहौर आइ अधिक उताल सौं।१३९।
तिह को भतीजो जो अजीत सिंह नाम कह्यो
सोऊ हुतो कुल्लू बीच बर्फी पहार के।
ताहुं ने खबर सभ सुनी अखबार बीच

फौज कटवाई औ फंसाई बीच धार के।
छोड सब सैना लैना दैना हुं न कियो कछु
निमक हराम भाज आयो जहां हार के।
सोऊ आइ पहुंच्यौ लहौर करि दौरा दौर
देख्यौ सभ तौर पर्यो बीच है बिचार में।१४०।

राणी चंद कौर का लाहौर पर अधिकार

दोहरा॥

भए इकट्ठे तीन हूं, कीनी एक सलाह।
शेर सिंह को मत करो, मालक तख्त पनाह।१४१।
नौ निहाल सिंह की जननि, चंद कौर जिह नाम।
ताको मालक कीजिये, हम सब कर हैं काम[४४]।१४२।

सोरठा॥

ऐसे चित्त विचारि गए सु राणी पास वे।
सुन्यौ सभै प्रकार सुनि उनहू के चित बसी।१४३।

दोहरा॥

ध्यान सिंह महाराज के, भ्राता सगे विशाल[४५]।
श्री गुलाब सिंह आइगे, जंबु ते सु उताल।१४४।

---

४४. ग्वाल कवि का कथन गलत है क्योंकि पं:ग:री: बु:१५६ के अनुसार सरदार अतर सिंह संधावालिया १४ नवम्बर को लाहौर पहुंचा था और स: अजीत सिंह इसके बाद २४ नवम्बर को, इस लिए महाराणी चंद कौर के बारे में यह कहना कि संधावालिये उस को सिखा कर सिख राज का मालक बनाना चाहते थे। यह कथन बिलकुल ही घटना से उलट है। असल बात यह थी कि कौर नौ निहाल सिंह की राणी साहिब कौर गिलवाली गर्भवती थी। महाराणी चन्द कौर इसी कारण पहले ही चाहती थी कि उस की बहू के बच्चा पैदा हो ले, तब तक वह पंजाब का राज प्रबन्ध करे ताकि राज-गद्धी का हक्क जो कानूनी तौर पर उस के पुत्र का था, हाथ से ना जाए।

४५. बड़े।

इनहु सुनी सलाह इह, राणी के चित माहि।
तब इन राणी सों कही, "तुमै उचित यह नाहिं।" १४५।
आगे मरजी रावरी, सोई करो उताल।
यह कह आप टिके रहे, अति ही बुधि बिसाल।१४६।
हीरा सिंह महाराज जू, जब यह सुनी सलाह।
चित ते अलग सु ह्वै रहे, ऊपर रीत निबाह[४६]।१४७।

कबित॥

राणी चंद कौर जब ऐसे कहिलाए भेजी
"जाओ शेर सिंह जहां तुमरी जगीर है।
मेरी जिन्दगी मैं और मालकी करै सु कौन,
राज मैं करूंगी टार सकै को अमीर है"
ऐसे सुनी बात शाहजादे शेर सिंह जब,
ध्यान सिंह जू सों कही, कहा ततबीर है?

---

४६. अर्थात महाराणी चंद कौर की सलाह सुन कर हीरा सिंह डोगरा दिल से तो अलग ही रहा। परन्तु राणी का मन रखने के लिए, वास्तव में धोखा देने के लिए, उसका दम भरता रहा। इस प्रकार गुलाब सिंह भी महाराणी के पक्ष में जुड़ गया। अलैग्जैण्डर गार्डनर ने जो पहले दरबार लाहौर तदोप्रान्त गुलाब सिंह डोगरे का नौकर रहा था डोगरों की कुटिल नीति की हकीकत इस प्रकार खोल कर बताई है।

With the intention of eventually destroying both claimants, the dogra family now pretended to be divided among themselves, Raja Gulab Singh and his nephew Hira Singh espoused the cause of the Queen while Raja Dhyan Singh declared for the party of Sher Singh (Memoirs of Alex. Gardner Page 228)

अर्थात डोगरों ने बादशाही के इन दावेदारों को पूर्णत्य: नष्ट कर करने के इरादे से अपने आप को दो भागों में बटे होने का पाखण्ड रचा। राजा गुलाब सिंह और उसके भतीजे हीरा सिंह ने महाराणी का पक्ष अपना लिया, जब कि राजा ध्यान सिंह ने शेर सिंह की पार्टी में होने का एलान कर दिया।

तब महाराज ध्यान सिंह जू बिचार कही
"तुम ही करोगे राज जो पै तकदीर है।"१४८।

सोरठा॥

चंद कौर महारानि, गादी पर बैठी उतै।
बडी शलक सर्रानि, जग जानी राणी प्रभु।१४९।

राजा ध्यान सिंह की प्रतिग्या

कबित॥

राजा ध्यान सिंह जू नै कही शेर सिंह जू सो
"प्राची तजि भानु चढ़ै और ही दिसान मैं।
गंगा आदि प्रबल प्रवाह उलटाइ बहैं
दूध कामधेन को सुखाइ काहु आन मैं।

जैसे इधर राजा ध्यान सिंह शोर सि़ह को अपने वफादार होने का सबूत दिलाता था। वैसें उधर उस का पुत्र हीरा सिंह डोगरा महाराणी चंद कौर के पास अपनी निमक हलाली की बड़ हांकता था। ईसट इन्डिया कंपनी का एक रिपोट्र हीरा सिंह चंद कौर के बारे में खबर देता हुआ लिखता है:-

The Mai (Chand Kaur) asked Hira Singh what side he would chose if his father Dhiyan Singh adhered to Konwur Sher Singh. He replied with his hands joined that from his infancy, he had been brought up in Maharajas house that he is thus a child of sarkar" that he considers the Maee as his mother and was ready to sacrifice his life for her, she promised him the grant of a jagir.

माई (चंद कौर) ने राजा हीरा सिंह को पूछा कि यदि उसका पिता धयान सिंह कंवर शेर सिंह के साथ मिल जाए तो वह किस का पक्ष लेगा। उत्र में उस (हीरा सिंह) ने हाथ जोड़ कर कहा कि वह बचपन से ही महाराज के घर में पला है इस लिए वह सरकार का बच्चा है। वह माई चंद कौर को अपनी माता की तरह समझता है। और उस के लिए अपनी जान तक कुरबान करने के लिए त्यार है। महाराणी ने यह सुनके उस को जागीर देने का वायदा कीया।

रंकता कुबेर को जो होइ आवै कहुबेर
सूख जाएं सातों सिंधु निज निज थान मैं।
तऊ ना मैं संग तजों, प्रण को न अंग तजों
रावरो र रंग तजों कही जो ज़बान मैं। १५०।
अतल बितल अर सुतल तलातल हुं
बहुर महातल रसातल महावरो।
सातवें पाताल हूं लों उलट पुलट होइ
सातों लोक उपर ते होइ तर तावरो।
कूरम बराह तजै, तजै जु बराह शेष
शेष, तजै भूमि अरू मार खाइ डावरो।
ऐसे ये ढरैंगें तउ हम न टरैंगे अब
लरैंगे मरैंगे यों करैंगे राज रावरो।१५१।

कुंवर शेर सिंह तथा राजा ध्यान सिंह की वापसी

सोरठा॥

शेर सिंह महाराज सुनि प्रतिज्ञा के बचन।
कही "ध्यान सिंह राज तुम ही मेरे प्राण प्रिय।१५२।

दोहरा॥

कीनी दुहन सलाह पुनि, अब चढ चलैं शिकार।
कछुक दिनां मैं आइ फिर लैं हैं गढ़ को मार।१५३।

सोरठा॥

खेलन चले शिकार जब भूपति श्री ध्यान सिंह।
अफसर कई हजार तब आए भै भीत ह्वै।१५४।
हाथ जोरि सिर नाइ, कही सभिन हम दास हैं।
दीजै जो फरमाए करैं वही हाजर हुकम।१५५।
रहयो न तुम बिन जाइ, चलैं संग तेरे सबै।
तब नृप कही धीराइ, सुनों सकल मेरे बचन।१५६।

कबित॥

बोले महाराज ध्यान सिंह, तुम धीरे रहो
जौ लौ मैं ना आवौं तौ लौं काटो दिन तंगी के।
मो सों कहु पहिले जो आइ जाइ शेर सिंह
तो सब हुकम मान लीजो खेल जंगी के।
बादशाह मानों मन माहि शेर सिंह जू को
हुकम न मानियो अतर सिंह ढंगी के।
बंधु[४७] सुत[४८] आपनो मै ईहां राखे जात सिरफ
खातर तुमारी तुम रहो नीति चंगी के।१५७।

दोहरा॥

ऐसे सभ उपदेश कर, ध्यान सिंह महाराज।
शेर सिंह को संग लै, चले शिकारहि काज।१५८।
हर्ष हजूरी बाग ते, गए सु रावी कूल।
प्रथम दिना खेलत रहे, ताहि शिकार अनुकूल।१५९।
दूजे दिन नृप ध्यान सिंह, जंबू को चल दीन।
नगर बटाले को गए शेर सिंह परबीन।१६०।
अब कहियत इत की कथा जो जो भयो प्रकार।
सुनो विदुष सभ कान दै, लवपुर[४९] को व्यवहार।१६१।
कई एक सरदार मिलि, करैं, राज को काज।

---

४७. राजा गुलाब सिंह डोगरा।

४८. राजा हीरा सिंह। साफ पता चलता है कि राजा गुलाब सिंह और हीरा सिंह राजा ध्यान सिंह की सलाह से ही धोखा देने के लिए महाराणी चंद कौर के पक्ष-घर बने थे।

४९. श्री राम चंद्र के पुत्र लव का वसाया होने से लाहौर का पुराना नाम लव पुर है।

कौंसल[५०] संगया प्रसिद्ध किय जानी सभैं समाज।१६२।

कबित॥

जो जो करैं हुकम, चलै न सो सो फौज मांहि
काहुं की न मानैं कोऊ, हुकम बह्यो फिरैं।
बाढ़्यो उतपात दिन रात बात बात माहि
कोउ न डरात, कहां ह्वै है जो कह्यो फिरैं।
राणी भय मानी जानी दुखद निसानी यह
मति थहरानी प्रन कैसे कै गह्यों फिरैं।
चक परै बक परै उचकि अतर सिंह
हिय मैं अजीत सिंह अधिक दह्यो फिरै।१६३।

दोहरा॥

संधावालिया लहिना सिंह, पठयो कुल्लू ओर।
"बंदोबसत वा देस को, करि आओ बल जोर"।१६४।

छंद भुयंग प्रयात॥

महाराज के जाइबे की सुनी ज्यों।
महा दुख के सिंधु डूबी दुनी त्यौं।
सभी पलटने बात मानी बुरी हैं।
तिया[५१] को भयो राज सभ को छुरी है।१६५।

---

५०. कौंसल अर्थात राज प्रबंधक सभा १७ नवम्बर सन् १८४० ई को बनी और इस के मैंबर नीचे लिखे थे।:-
१-कौर शेर सिंह प्रधान २-राजा ध्यान सिंह ३-भाईराम सिंह ४-जमादार खुशहाल सिंह ५-स: लहना सिंह मजीठिआ ६-अतर सिंह संधावालीआ ७-फकीर अजीजुदीन ८-फतह सिंह मान ९-दीवान दीना नाथ १०-शाम सिंह अटारी वाला। ११-मंगल सिंह कौर शेर सिंह और राजा ध्यान सिंह, इस कौंसल के मैंबर बनने के पीछें, दसंबर के शुरुमें लाहोर छोड़ गए (सबूत लिए देखो प:ग:री: बु:नं:१५६)

५१. त्रिया, स्त्री

कुमेदान कपतान ओ सूबदारं।
भरैं आहि नाले करैं सोच भारं।
रसाले बिसाले कुसाले मनाए।
सभी रजबनैं दुख मनां मैं बिताए।१६६।
कहैं सिंह सभ ही, भई बात खोटी।
अतर सिंह है यह महा नीच कोटी।
कहैं दुरबचन लाल कर करके नैना।
बिना ध्यान सिंहों रहैगी न सैना।१६७।
कहो फौज की मौज का अब सु लैहै।
हसै कौन लखि लखि इनामं सु देहै
अबैं कौन की हम सवारी मैं दौरैं।
फतै कोन को जा बुलावेगें भोरैं।१६८।
रह्यो न हुकम एक मालिक हमारो
कुमंत्रीन ने यंत्र यह है बिगारो।
संधावालियों नै जु कौंसल करी है।
निहायत बुरी है, बुरी है, बुरी है।[५२]।१६९।
जहां देखिये हैं तहां यही बातैं।
घुल्यो घोर घोर घर घर घली मनों घातैं।
छुटी भूख नीदैं भए सभ उदासी।
संधावालिओं की कबै ह्वै बिनासी।१७०।
प्रजा माथ कूटैं सबै पुरख नारी।
भयो सोच भारी, दई का विचारी।
हमारी खबर को रखैगो शहर की?
करै को अदालत धर्म के लहर की।१७१।

---

५२. देखें छन्दांक १९१ का फु॰ नो॰

बजाजा सराफा इतर जो व्योपारी।
कर्यो बंद ब्योहार हो कै दुखारी।
कियो आयबो माल को बंद सभ नैं।
भया ह्यां अंधेरा जु घेरे गजब नैं।१७२।
दिवस हुं मैं हाटैं चढ़ी[५३] सी हजारैं।
न संध्या को कोउ दिया हु को बारैं।
उदासीन मुद्रै धरैं माथ फोड़ै।
धरा पै न होते, लिखैं लेख जोड़ैं।१७३।

दोहरा॥

यह बिधि फौज प्रजा सबै, व्याकुल भई अपार।
ध्यान सिंह नृप कब मिलै, ध्यान धरयो करतार।१७४।

सिख फौजों की माध्यम से साजिश

अफसर सभ अरजी तिखी, ध्यान सिंह महिराज।
तुम आओ तो हम जियैं, यही हमारो काज।१७५।
शेर सिंह जू को लिखी, ध्यान सिंह लै संग।
आओ आप शिताब ह्यां हम सब कर हैं जंग।१७६।
शेर सिंह कौ पास ते, जंबू लौं दिन रात।
डाक रहै जारी सदा भयों करैं नित बात।१७७।

कबित॥

लिखी ध्यान सिंह जू ने शेर सिंह जु को ऐसै
लिखि लिखि भेजत अरज सैन[५४] सारी है।
तां तें तुम कोउ भलो मानस पठायो उहां
जाइ सुन आवै कौन कौन का विचारी है।

---

५३. बन्दसी

सिखन को हाथ ग्रंथ साहिब पै धरवावैं
लेंय मुसलमान सौं, कुरान सौंह भारी है।
पक्की कर आवैं बात ,पक्के रहो तुम सभ
शेर सिंह जु के यहां आइबे की त्यारी है।१७८।

दोहरा॥

ध्यान सिंह महाराज नै, लिखयो बंचायो हाल।
शेर सिंह जू नै जबैं समझ लिया सभ ख्याल।१७९।
गंडा सिंह कुंजाहीया, भेज्यौ तब महाराज।
जाहो अबैं लाहौर को, लखि आवो सभ साज।१८०।
ध्यान सिंह नृप तौ लिखयो, सो तुम समझो चित।
सही हुकम धरि सीस पै, करो काम अति हित्त।१८१।
सीस नाइ कर जोर कै, चलयौ चतुर अति दूत।
पहुंचयो जाइ लाहौर मैं, जहां फौज मजबूत।१८२।

छंद प्रमानिका॥

मिलयो जु एक एक सौं। लियो सु धर्म टेक सों।
लख्यो न झूठ फौज मैं। भयो सु चित मौज मैं।१८३।
लेख सु एक चित[५५] ही। चमू भई अभित्त ही।
सभी सलाह एक है, धरी खरी सु टेक है।१८४।

दोहरा॥

यों लखि गंडा सिंह नै, कही फौज सौ बात।
टर मत जैंयों धर्म तैं खबरदार हम जात।१८५।

---

५४. सेना ५५. एक इरादे के

सोरठा॥

बोल उठी सभ फौज ध्यान सिंह नृप जो कह्यो।
वही हमारी मौज, शेर सिंह के संगि सभ।१८६।

छंद भुयंग प्रयात॥

कही फौज ने तब, सुनै बात हमरी।
नहीं दोइ रसना रची सौंह सब ही।
टरैं मेरू आदिक जो परबत धरा ते।
धरा हु टलै शेष फन के परा ते।१८७।
टलै शेष जू की फनाली बिसाली।
टलैं सिंधु की नींह जो है निराली।
टरैं ध्रुव कदाचित दई जोग[५६] करकै
टलै सूर रथ ते सो पथ ते विसरकै।१८८।
तउ धरम के वाक हम ते न टर हैं।
गुरू की कृप्या सो नहीं सोई कर हैं।
रखो आप खातर जमा, सत्य जानों।
नृपति[५७] शाहजादे[५८] दुहं बेग आनों।१८९।

दोहरा॥

फिर गंडा सिंह सो कही "दौलत बुरी बलाए।
राणी तुमरो लोभ सौं, दैहे धरम बहाइ।१९०।

छंद भुयंग प्रयात॥

कढी खालसानन[५९] सभी ते सु ऐसे
नहीं मेरू हुं को छुऐ धूर जैसे ।

---

५६. निरभय या अरोक। ५७. राजा ध्यान सिंह ५८. कौर शेर सिंह।

५९. खालसे ने एक जबान हो कर वचन दिया।

रतन के डब्बे केतड़े औ पठावैं[६०]।१९१॥
नृपति ध्यान सिंह जी जो बखश देइ पैसा।
पैसा वहीं हम को जवाहर है जैसा।
परलै हुं की पवन चलै तो न हल्लैं।
लड़ैंगे भिड़ैंगे अड़ैंगे न चल्लैं।१९२।

दोहरा॥

यह बिधि पक्की बात कर, गंडा सिंह चल दीन।
शाहजादे पै जाय कै, फतह बुलाई पीन।१९३।

छंद प्रमानिका॥

कह्यो हवाल हो जितो। सुनयो जु कान दै तितो।
बिचार बात चित मैं। भए खुशी सहित मैं।१९४।
कही बुलाय ब्राहमनैं। बताए चंद सामनै।
महूर्त सोधकै कह्यो। सुबुधि विप्र जो लह्यो।१९५।

दोहरा॥

ध्यान सिंह महाराज को, लिखयों जु सबै
संग महूर्त हूं लिख्यो, शेर सिंह वर भाल।१९६।
भलमानस पठ्यो सु इक, सिखै सवाल जवाब।
आगै अब जो तुम लिखो, सो हम करैं, शिताब।१९७।
कागद लै वह मातबर, चल्यो कूच कर हाल।[६१]
पहुंचयों जंबु जाइकै, नृप सों मिल्यौ उताल।१९८।

---

६०. सिख फौजों में महाराणी के विरूद्ध सब प्रचार राजा ध्यान सिंह ने किया था। देखो Beveridge, History of India, III, P. 486

६१. वेग से

ध्यान सिंह महाराज को, हाथ जोरि सिर नाइ।
कागद दै मुख सो कह्यो, जो प्रभु दियो बुझाइ।१९९।

कबित॥

कागद बंचायो भूप ध्यान सिंह महाराज
सुन्यौं जो सुनायो है जबानी हुं बताय कै।
समझ हवाल होए चित्त मैं खुशहाल खासे[६२]
बिदा कियो दूत दियो कागद लिखाय कै।
लिखयो शेर सिंह जू कै, "कढ्यो जो महूर्त है
ताही पै पधारो इष्ट अपनों मनाय कै।
मोरचे लगाओ, जंग जोर सों मचाओ
यहां खबर पठाओ, तब ऐहैं हमूं धाय कैं।२००।

कुंवर शेर सिंह की लाहौर पर चढ़ाई

दोहरा॥

दूत लेइ कागद चल्यो, पहुंचयो स्वामी पास।
कागद बंचवायो तुरत, हिय मै बढ्यौ हुलास।२०१।
गवन अटल गढ ते कर्यो, रहे बटाले आइ।
फौज आपनी साज कै, चलै प्रात उठि धाय।२०२।

छंद प्रमानिका॥

गुबिंद सिंह ध्याइ कै। बिनायकैं मनाई कैं।
सु अंबिका को दरस कै। सु कंञ्जिका परस कै।२०३।

---

६२. व्याप्त

खड़ग हाथ सज्ज कै। भए सवार गज्ज कै।
तबैं कहू सु यों कही। फते फते फते सही।२०४।

कबित॥

ऐसे शेर सिंह जू तहां से करि कूच आयो
भाज्यो लवपुर ते अजीत सिंह डर के।
पुल[६३] मैं अक्समात ह्वै गयो मिलाप तब
कही यों अजीत सिंह, आयो काम घर के।
द्वै कु दिनां मैं फेर आइ हौं तिहारे पास
ऐसे कहे चार पांच बचन मकर के।
शेर सिंह जू नै कही: जाओ, भला होय, आओ
गयो महा नीच बीच नेम सौंह कर के।२०५।

दोहरा॥

राजे सांसी जाय के, काढ्यो माल अपार।
रात दिनों मैं दौर कै, सतरूद्र[६४] भयो पार।२०६।
ह्वां ते चलि श्री शेर सिंह, आयो शाला बाग।[६५]
बुद्धू के आवे[६६] निकंट, डेरा किय अनुराग।२०७।
आइ आइ अफसर मिलै, हाथ जोरि सिर नाइ।
हुकम दियो महाराज ने, उतरो ह्यां सभ आइ।२०८।
सभै फौज डेरा कियो हुकम बमूजब आइ।
सांझ[६७] समय शलकैं करीं, तोप तड़ित तड़ताई।२०९।
मुंदवाए रानी तबै, किले नगर के द्वार।
मजबूती चहुंघाकरी, लडौ सभै सिरदार।२१०।

---

६३. पुलकंजरी, अटारी जिला अमृतसर ६४. सतरूद्र सतलुज

६५. शालामार बाग। ६६. लाहौर में एक ठिकाना छावनी का

६७. संध्या समय।

ऐंठ ऐंठ के अतर सिंह, अकडि अकडि अंगड़ाइ।
किलकि किलकि गरबत बचन, सभ को कहै सुनाइ।२११।

कबित॥

मारियो कई वार मै पिशौर के पठानन को
कई वार खट्टकी[६८] उखारे ओ उखारौंगो।
ऐसो को मही पै आहि दूसरो सुभट आज
जोइ मोहि जीतै, अति सूर तां सवारौंगो।
तौही मैं अतर सिंह जग मैं कहाऊं नाम
साका[६९] सुनवाऊं प्रन पाका मैं पसारौंगों।
या तो शेर सिंह को वटाले मोड़ भेजौं हौं मैं
या बन फकीर खाक सीस निज डारौंगों।२१२।

दोहरा॥

प्रात होत श्री शेर सिंह, आए सैना संग।
लगे करन तजवीज तहि, जाहिं हो किला उतंग।२१३।

कबित॥

श्री गुलाब सिंह शेर सिंह जू की तरफ लिख्यो
आए आप भली करी मुलक तिहारो है।
राज हुं तिहारो अरू किला हु तिहारो यह
भावज[७०] तिहारी पर भविष्य करारो है।
ध्यान सिंह आवै जब नीति रीति[७१] लेउ देउ
हम को न काम तुम जानौ जौ विचारो है।
बिना ध्यान सिंह के न देइंगे धसन यहां
बस न चलैगो जोऊ[७२] संग दल भारो है।२१४।

---

६८ खट्टक जाति के लोग ६९. यशगाथा ७०. भाबी, महारानी चंद कौर।

७१ तै किया हुआ नियत उपहार ७२. यद्यपि

दोहरा॥

पहुंचत ही कागत तहां, बंचवायो महाराज।
कढी खालसा मुखन तैं, हम न मान हैं आज।२१५।

सोरठा॥

दियो न कछु जवाब, दूत बेग आयो तबै।
कर है जंग शिताब, उहां न रस की बात कछु।२१६।

कबित॥

श्री गुलाब सिंह अर भूप हीरा सिंह दोऊ,
करत बिचार धरम संकट अबै भयो,
जंबू ते न आए श्री महीप ध्यान सिंह अभी,
कौन सा करौं उपाय, सोच यह है नयो।
एक तो किले के हम भीतर जगत जानै
दूजे परी अबला सरन पन सो छयो।
जाते तौं जरूर अब लड़बो उचित हमै
कढ़बो न चाहिये किले ते, नाम ह्वै गयो।२१७।
आए शेर सिंह सो तो पुत्र सरकार के हैं,
जाहर जहूर जग करत मनैं नहीं।
दूजै भूप ध्यान सिंह जू की मरजी है यही
बैठें ये तख्त, राज रानी को गनैं नहीं।
जैसे उन देऊ रीति लरबो बनत हमैं
तैसे इन दोउ रीत लरबो बनैं नहीं।
यां ते जो विशेख पक्ष होइ सोई कीजै काम
करनों कभुं न जो कि आवत मनै नहीं।२१८।

छोड देइं किला और अबला गरीबनी को[७३]
तौ रहे न धर्म छिति छत्री रघुबंसी हैं।
ताहुं मैं जनम पाए, राज कुल माहिं आए
जंबूपति कहवाइ बंस अवतंसी हैं।
फेर जग जाहर हैं, बैरिन के नाहर हैं
बाहर हो रण ते भयो न, रवि अंसी हैं।
बल कर पूरन हैं, तेग मार तूरन[७४] हैं।
सरासर सूरन मैं सरस प्रसंसी हैं।२१९।

दोहरा॥

श्री गुलाब सिंह सों कही, हीरा सिंह[७५] श्रुति देहु।
"ध्यान सिंह आवै नहीं, तौ लो जंग सु लेहु"।२२०।

सोरठा॥

ध्यान सिंह आ जाइ, जब उन को सौपैं किला।
वे हमरे प्रिय भाई, जो मन आवै सों करैं।२२१।
कर सलाह यह साज, हीरा सिंह महाराज सों।
श्री गुलाब सिंह राज, करी त्यारी जंग की।२२२।

कबित॥

तोपैं दमदमन पै चड़ाईं चहु ओरन सों
चार हुं तरफ की सफील[७६] पै सिपाही हैं।

---

७३. यह फरेब था कि राजा गुलाब सिंह और हीरा सिंह ने शरनागत समझ कर कभी महाराणी चंद कौर की सहायता करने का प्रण कीया था। वे तो वास्तव में धोखा देने के लिए महाराणी के साथ शामिल हुए थे। (देखो छंदांक १४७, १५० के नोट।)

७४. तेजी से तेगें मारने वाले। ७५. कान दे कर सुनो।

७६. फसील का अशुद्ध उच्चारण

बांट दई दारू अर गोली झोली अनतोली

बोली मारि[७७] कही देखें कौन से उछाही हैं"।

किले की कमाल मजबूती ओ अभूति[७८] करी

कूती[७९] नहीं जाए ठौर ठौर चित चाही है।

आप श्री गुलाब सिंह भए ब्रम्ह व्यापक से

देखो जहां जाए दीखैं तुरत तहां ही हैं।२२३।

दोहरा॥

द्वार हजूरी बाग को, है परेट[८०] की ओर।

प्रथम तहां तौपें कछु शेर सिंह दियो जोर।२२४।

तोप हुती भीतर तहां, छर्रा भरी तयार।

सो उन दागी औचकां[८१] दिये तुरंग, नर मार।२२५।

इतने में आयो तहां, धौकल सिंह[८२] सरनाम।

अरज करी कर जोर के, कीजै अब यह काम।२२६।

है मसीत के बाहर एक, खिरकी बाहर ओर

सो मेरो कबजा तहां, धस चलियै बल जोर।२२७।

पलटन है मेरी जहां, तहां बिराजो आप।

नगर दुहाई फेरियै, मिटै प्रजा की ताप।२२८।

कबित॥

सुन के बचन ऐसे शेर सिंह महाराज

ह्वै कर प्रसन्न कही नीकी तुम कही है।

सैना ले सिधाए उन खिरकी खुलाए पट

भीतर धसाऐ जहां पलटन रही हैं।

---

७७. कटाक्ष से ७८. अभूज पूर्व ७९. आकी ८०. परेड का मैदान ८१. अचानक ही

८२. एक प्रसिद्ध जरनैल

जाते ही नगर मैं दुहाई फिरवाय दीनों
फेर कीने मोरचे सफीलन सों सही है।
नगर हुं की तौपैं सभ हाजर हुकम भई
अमिलियो[८३]रह्यो न कोऊ दैवी[८४] पौन बही हैं।२२९।
आदि ही से श्री शेर सिंह जू की हर तरफन सों
किले को तड़ाक तोप तेज तड़ड़ानी है।
फौज के गरट्टू वे कपट्टू लै लै लरैं झटू।
चट्टू गोले चालैं भूमि दहिलानी है।
दौरे फिरें अफसर कसर न राखैं कछु
सर करबे की चाहि अधिक उठानी है।
जोर करैं शोर करैं घन की सी घोर करैं
तौर करैं बाढ़न की गाढ़ि गहरानी हैं।२३०।
अंदर किले के एक ओर ही अतर सिंह
कूद कूद कहै, मारि मारि टार देहु रे।
जहां शेर सिंह तहां सिसत[८५] बांध मारो कोई
ठट्टू सभ सैना को सरक जाइ पै दुरे।
मेरी है प्रतज्ञा शेर सिंह सरकार बिन
पानी हुं पीओ ना, चाहे छूट जाइ देहु रे।
ऊपर से बात की करत पच्छ अच्छ अच्छ
भीतर खराब होत कच्छु सिर खेह रे।२३१।
श्री गुलाब सिंह अर भूप हीरा सिंह दोऊ
शिसत बांधि बांधि तोप चलावै पुनि पुनि।
बाढ्यो है उछाह हिये देख के समर बर[८६]
आवैं जो अमर तऊं भजैं सीस धुनि धुनि।

---

८३. न मिला हुआ। ८४. देव कृपा की ८५. निशाना बांध कर ८६. युद्ध की बढ़ौती

जयों जयों बहु भीर बाहरीन[८७] की नजर आवैं
तयों तयों धीर बीरता बढ़त आवै गुनि गुनि।
कठिन कतारैं राजपूतन की वारैं पारैं
माचैं भरमारें एक एकन को चुनि चुनि।२३२।
बाहर ते तोपन की कीनी तजवीज ऐसी
भरन न देइ थैली रहि जाए हत्थ ही।
दूजे आए भरी ते न सुंघा सरकावै कोऊ
सुंघा हुं लगयो तो गोला गिरे उरे पत्थ ही।
गोला हुं कदाचित पहुंच गयो तोप माहि
तो न महिताब देत दागन अकत्थ ही।
जौ पै गई दग तो उलट लग जाइ उनैं
गोला पर गोला मार मारै मत्थ मत्थ ही।२३३।
किले के समीप काहुं आवन न देत तहां
आगे कढ़यो दीख्यो कै तड़ाक मारयो गयो।
कीनी सभ पलटने बिहाल बदहाल हाल
ऐसो जंबु-वाल भूप जो अनूप भयो है।
देख रही रजमन धज मन राखै तजै
तज मन धीर रहै, यह युद्ध नयो है।
खान नहि देत, नहि करन जल पान देत
जान नाहि देत काहू जादू सीख लयो है।२३४।

सोरठा॥

लखि लखि युद्ध समाज, श्री गुलाब सिंह कहि उठे:-
हीरा सिंह जू आज मोहि उठत रण की लहर।२३५।

---

८७. बाहर के लोग।

कबित॥

बिना ध्यान सिंह आए कैसे मैं किले ते कढौं
नहीं तो चखाउं इन्हैं तेग रजपूती की।
मेरे साथ चलैं ए भजैगें साथ छोडि छोडि
माथ काटि काटि माल करैं मैं बिभूती[८३] की।
जदपि है सैना सभ बीरन की धीर भरी
तदपि हटाऊं पै हटाऊं इक सूती की।
हिम्मत अकूती की ओ किम्मत सपूती की
यों सूरन मैं दीख है अभूती मजबूती की।२३६।

दोहरा॥

बाहर ते बहु तोप के, बंधे जंजीरे आए।
किले माहि गोलान की, बरखा सी दरसाइ।२३७।

कबित॥

कहे चंद कौर राजा साहिब जू लरो मत
किला देइ डारो अब बात बिगरी सी है।
श्री गुलाब सिंह हंसि हीरा सिंह कहैं दोऊ
खत्रिन की अड़ी कहुं पीछे ही हटी सी है।
सुनत प्रमाण सनी सूखी सी सकी सी भई
तरपे चिरी सी, अति कखी सी थकी सी है।
चौंकी सी चकी सी। उचकी सी औ चपी सी खीसी
चूकी सी चिरी सी चूर चिंता मैं चकी सी है।२३८।

---

८३. शिव जी की।

राजा ध्यान सिंह की आमद और लाहौर पर कब्ज़ा

दोहरा॥

दिवस रात कैई चलै, गोलन के समुदाय।
इतने मैं दाखल भए, ध्यान सिंह नृप आय।२३९।

कबित॥

राजा ध्यान सिंह आय उतरे दरिआउ तट
कही शेर सिंह जू सों काहु यों सुनाइ कै।
सुनत प्रमान कहवाय भेजी आऊ ईहां
भूप कही-भई रात ऐहैं प्रात भाय कै।
प्रेम के प्रवाह पूर हिय मैं अथाह उठ्यो
ज्यों ज्यों कटी रात भयो भोर शोर पाई कै।
धाइ कै हजूर आप जाय कै लिवाइ लाए
कंठ सो लगायकै, हियो मैं सुख पायकै।२४०।
कही सरकार ध्यान सिंह जू सों आए भले
बंधु सुत आपने पत्याय राखो पास है।
मुलक खजाने राज साज यह रावरो है
फौज मौज और सभ तेरे ही बिलास है।
मोहि तो सिर्फ एक नाम ही सों काम अरू
तो सों मिल बैठबे को अधिक हुलास कै।
तूं ही आस पास तूंही भूमि औ अकाश मोहि
तोही पै विश्वास को खवास मेरो खास हैं।२४१।
आनंद करैया श्री महीप ध्यान सिंह जू नैं
कही महाराज शेर सिंह जू सों बातें हैं।
तुरत कहाइ भेजी किले मैं लरो न कोई
ईहां हूं कराईं बंद तोपन की पांतैं हैं।

फेर बंधु सुत को बुलाइ पास अतराए
अतर सिंह हुं को कही कढ़ आओ ह्वातें हैं
किले को कराइ खाली थाने को पठाइ हाली
दोउ को खुशाली चित्त भई भांति भांतैं हैं।२४२।

दोहरा॥

श्री गुलाब सिंह नै किला, ध्यान सिंह को सौंप।
उतरे जाइ दरियाव तट[८४] हटी ना रन की चौंप।२४३।
फेर नृपति श्री ध्यान सिंह, बंधु पुत्र लै जाइ।
श्री हजूर सों मेल दिय, दया द्रिशटि करवाइ[८५]।२४४।
कही श्री हजूर ने "गुलाब सिंह भूप सुनो।
जैसे नृप धयान सिंह तैसो तुम पयारे हो।

---

८४. इस मौके पर गुलाब सिंह डोगरे ने मोती मंदिर का सारा खजाना लूट लिया और किला छोड़ने से पहले कुंवर शेर सिंह से वायदा लिया कि उस की फौज की तलाशी नहीं ली जाएगी। सरदार पाणीकर के कथन अनुसार इस समय गुलाब सिंह के हाथ इतनी दौलत थी:

Sixteen carts were filled with Rupees and other silver coins while 500 horsemen were each entrusted with a bag of Gold Mohars, with this vast treasure he returned to Jammu. (Gulab Singh P. 48)

८५. जब राजा ध्यान सिंह ने राजा गुलाब सिंह और हीरा सिंह की भूल बखचई तो महाराज शेर सिंह प्रसंन्न देख कर गुलाब सिंह ने शिकायत की कि खजाना मोती मंदिर की गारद के सिख सिपाही न तो महाराणी चंद कौर के वफादार है न ही कुंवर शेर सिंह के, और उन को सजा देने के लिए आज्ञा मांगी, कुंवर साहिब उस की यह शिकायत सुन के कुछ न बोले और गुलाब सिंह ने खामोशी नीम रजा समझ के उस गारद के सिपाही पकड़ कर तोपों से उड़ा दीये और उन के स्थान पर शेर सिंह की गारद खजाने ऊपर दी गई। (कलकता जर्नल, १८४१ अंक ५७ पन्ना ११९)। वासत्व में वह गार्द के मजलूम सिख, जिन को यह सजा दी गई, कौर नौ निहाल सिंह और महाराणी चंद कौर के वफादार नौकर थे। उन्हों ने सरकार के खजाने पर गुलाब सिंह का हाथ बढ़ता देख कर उस को रोका था। साथ ही वह उस लूट के माल से, जो गुलाब सिंह ने किले के खजाने से उन की रूबरू लुटा था, अच्छी तरह विज्ञ थे, जिस लिए उनही को निमक हलाली का बदला प्राण दण्ड मिला।

कहां भयो करी जंग अंत तो रह्यो है रंग
अंग तुम मेरे सदा संग प्रणधारे हो।
हीरा सिंह जू सों हसि हर्ष हजूर बोले
"भाई सगो मेरे तुम होत कैसे नयारे हो?
वारे हो दुलारे हो, सु प्राण हुं ते प्यारे हो
जु पूर पखवारे हो, हमारे रखवारे हों।२४५।

दोहरा॥

एसौ सब सों मेल करि, श्री हजूर सुखदाय।
डेरा कियो परेट मैं, फौज पास उतराय।२४६।
चंद कौर सो जाइ कै, कही हजूर सुजान।
भजन करो, भोजन करो, करो दान, हरि ध्यान।२४७।

महाराजा शेर सिंह की गद्दी-नशीनी

कबित॥

श्री महीप ध्यान सिंह जू ने तजवीज करि,
ज्योतिषि बुलाए मन भाए जो सुहाए हैं।
पूछ के महूर्त जलूस की त्यारी करी।
नये नये साज भांति भांति बनवाए हैं।
श्री बसंत पंचमी के पंचन मैं प्रण पूरि,
शेर सिंह जू को लाय तखत बिठाए हैं।
रत्न पैनाए, चौर, छत्र सों सजाए, आप
देखि हरषाए सरकार छबि छाए है।[८६] २४८।

दोहरा॥

नजर आप दे, सबन सों दिलवाई कर प्रीति।

---

८६. महाराजा शेर सिंह को बाबा ब्रिकम सिंह जी बेदी ऊने वाले के हाथों बसंत पंचमी संवत १८९७ बि: को राज-तिलक दिया गया। (पं ग: री:)

खुश बखती की शलक पुनि, करवाई नृप नीति।२४९।
बखसीसैं दीनी बहुत, लई असीसैं आप।
नगर खुशी सों भर गयो, दीसै प्रगट प्रताप।२५०।

कबित॥

सागर सागर नयाय नागर उजागर हैं
राजनीत आगर प्रतीति प्रगटाई हैं।
श्री हमीर देव[८७] को सो हठ औ ठसक राखी
राखी राजपूत की लसक सरसाई हैं।
ग्वाल कवि कहै श्री युधिश्टर[८८] सों सत्यवादी
जै सिंह सवाई[८९] सीस टेक नेक भाई है।
गई है जहान प्रण पालबे की कुसलाई
कीर्ति धरा पै ध्यान सिंह जु की छाई है।२५१।

दोहरा॥

धन्य धनय श्री ध्यान सिंह, नगर असीसैं देत।
प्रण पूरे सूरे सदा, रन रुरो बुधि केत।२५२।
दियो हुकम सभ फौज को, श्री हजूर बुलवाइ।
अपनी अपनी छावनी, सभ तुम उतरौ जाइ।२५३।
अतर नीचता को बड़ो अतर सिंह दुखदाय।
बेदी बिक्रम सिंह के डेरे उतरयो जाय।२५४।

---

८७. रणथंभोर का एक राजपूत राजा, जिस ने अलाउदीन बादशाह से जंग किया था।

८८. प्रसिद्ध पांडव राजा युधिश्टर। इस का हाल महाभारत में है।

८९. जय सिंह सवाई जैपुर का राजा। सन् १७०८ ई: में जैपुर पर (जहां कि औरंगजेब ने कबजा करके अपना हाकिम नियुक्त किया हुआ था।) फिर से कबजा कर लिया था।

संधावालिया सरदारों को देश निकाला

कबित।

कही सरकार यौं अतर सिंह सों बुझाय
बडी सरकार आगे जैसे बने रहे हो
तैसे रहो अबहु न कबहु उदास हुए
सभ ही के आगे कहौ, कैसे मौन गहे हो
मुलक खजानौं, किला कोट जो तिहारो सब
ज्यौं की त्यौं रहैगो बन्यो जैसो चित चहे हो।
डहे हौ कौन डाह सौं, बहे हौ कौन बाह सौं
लहे हौं कौन लाह सौं, भूलौ जो कि कहे हौ।२५५।

दोहरा।

सुन कै ऐसे अतर सिंह बोलयो बचन, कठोर।
"तेरे ताबे नहि रहौं, लै हौं अपने जोर"।२५६।
तब सरकार लचार ह्वै, कही कि खुशी तुमार।
भाग लिख्यों सो भोग हो, हमरे का अखत्यार।२५७।
बेदी बिक्रम सिंह जू, रूखसद ह्वै सरकार।
ऊना को कीन्यो गवन, साधि राज व्यवहार।२५८।
अतर सिंह हु संग ही, ऊना गयो बिचार।
कछुक दिनां ह्वां रहि गयो सतरूद्रा के पार।२५९[१०]।

कबित।

सुनी सरकार ने अतर सिंह पार गयो,
मिलयो ह्वां अजीत सिंह करै बात खार की।
तब सरकार राजे सांसी को पठाई फौज
किला ढाह देउ वस्तु लाओ घर बार की।

---

१०. स: अतर सिंह और अजीत सिंह संधावालिओं का सतलुज के पार जाने का सही कारण यह था कि ध्यान सिंह उन को किसी बहाने पकड़ कर मिटा देने का इच्छुक था।

तल्लके तिनों के माहि थाना सरकारी जाइ
कारदार आइ ह्यां सुनावै फरद कार की।
बोय गयो आगे ही अजीत सिंह आप आछैं
सींची है अतर सिंह वल्लरी बिगार की।२६०।

संधावालिओं की तबाही

दोहरा

राजे सांसी को गई, सरकारी कछु फौज।
मारि तोप ढाह्यो किला, करी फेर मन मौज।२६१।
और हुकम जौ जौ कियो, सो सो भयो यथार्थ।
लोक कहे सरदार पे, बिगरे आप अकार्थ।२६२।
इति मैं श्री सरकार सों, ध्यान सिंह महाराज।
यथा योग करने लगै, सकल राज को काज।२६३।

कुंवर प्रताप सिंह का सम्मान

कबित।

महाराजा शेर सिंह जू के एक कुंवर हुतो
नाम श्री प्रताप सिंह पाछे जो बटाले मैं।
ताहि बुलवायो, महां मंगल मनायो भायो
छायो सुख सरस शिताब हियआले मैं।
नजर सभी ते दिलवाई औ कराई शलक
दीपत्ति दिपाई, फौज, नगर, रसाले मैं।
वास को मकान दियो, खान को मुलक दियो
फौज राख दीनी कछु उन के हवाले मैं।२६४।

सरदार लहिना सिंह को कैद

कुलू जो गयो थे संधावालिया लहना सिंह[९१]
उहां ते तहां ही पार जायबो बिचार्‌यो है।
फौज हुती संग सरकारी तिन जानी यह
कैद कर लियो ताहि पहरे मैं पार्‌यो है।
काम करि ह्वां को फौज संग ताहि लेय आई
पूछि सरकार सों किले मैं लै उतार्‌यो है।
कही सरकार राखौ चौकसी चहूघा याकी
खान पान करन देहु चित अनुसार्‌यो है।२६५।

दोहरा

यह बिधि कछु दिन लौ रहयो, कैद किले के माहि।
ह्वां हुं ते ततबीर की, भाजन की कित चाहि।२६६।
बादशाह को खबर यह काहुं दीनी आए।
हुकम कियो बेड़ी परै, रखो अटल गढ़ जाए।२६७।
सोइ सभ ततबीर है, रह्यो अटल गढ़ जाय।
ह्वौं हूं चित करबो कर्‌यो, भाजन को सु उपाय।२६८।

सरदार अजीत सिंह की कलकत्ते चाराजोई

कबित।

पार[९२] यह खबर अतर सिंह हूं ने सुनी जब,
तब ही अजीत सिंह बोल्यो अकुलाय कै।
जाऊं कलकता अरज करि करि कौंसल मैं,
लाट गौरनर जू को लाऊ मैं बुलाइकै।

---

९१. सरदार लहना सिंह के साथ उस वकत सरदार केहर सिंह संधावालिया सरदार अतर सिंह का पुत्र था, जो उस के साथ ही कैद किया गया था।

९२. सतलुज पार

कर कै सलाह गयो ठौर ठौर भटकत,
जाय कलकता भये दाखल सु धाय कै
कौंसल मै, कीनी फरियाद जो मुराद हुती।
अरजी आईन सों गुजारी लिखवाय कै।२६९।
सिंह बादशाह रणजीत सिंह साहिब कै
भाई कुल के हैं औ मुसाहब सदा के है।
सो अब तख्त पर बैठे शेर सिंह, उन
काढ़ दियौ हमै, बेकसूर ता के हैं।
ताया[९३] कुलखेत मैं परा है मुलक आपके मैं,
चाचा[९४] किया कैद ह्वां रखत ताहि फाके हैं।
किला ढाहि दियो, लियो मुलक सब ही छीन
माल औ खजाना लूट लेत नाहि थाके हैं।२७०।

सरकार अंग्रेजी का इनकार।

दोहरा

आप फौज जो दीजियै, मदद कीजियै संग।
तो फिर चलि लाहौर कौ, शुरु करों मै जंग।२७१।

कबित

सकल जहाज सिर ताज सभ राजन के
ऐसै लाट साहिब हवाल सुन लियो हैं।
दियो है जवाब आप कंपनी बहादुर सों
सिंह बादशाह सों मिलत रह्यो हियो हैं।
दोसती सदा से चली आई जग जाहर है
तां मैं फरक डारयो चाहैं तैं का नशा पियो है?

९३. सरदार अतर सिंह संधावालीआ।

९४. सरदार लहना सिंह।

शेर सिंह महाराज जू के जाय पांय परो झट
जो पै जग माहि तुं चहित कछु जियो है।२७२।

अजीत सिंह की कुरखेत्र वापसी

सोरठा।

यौं जब मिल्यो जवाब, तब वह नीच चल्यो सु फिर।
रही न मुख पर आब, चित्त निरास उदास हुए।२७३।

कबित।

प्रबल प्रताप खालसा जी को है प्रगट पूरो
जाको तकसीरी होइ आयो कलकत्ता सौं।
मद्दत करी न और करी न सिपार्ष हुं
खातर करी न काहि दोइ एक पत्ता लौं।
छहौं हुं विलायत मैं करतो फरियाद जाइ
तौऊ झख मारि फिर आवतो अवत्ता लौं।
कंपनी बहादुर सों नादर जो दोसती है
खालसा के वैरी को न खैरी छिति छता लौं।२७४।

दोहरा।

अतर सिंह के पास वह, आ पहुंच्यौ कुरखेत।
सभ हवाल कहि सुन चुक्यो, दोऊ भए अचेत।२७५।

कबित।

बैठ्यो कुरखेत माहि अधम अतर सिंह
पातकी अजीत सिंह नीचौ सिर डारे हैं।
मारे से, मरे, अध मरे से सिरे से भयो
चिरे से, चपे से, बनचरे से निहारे हैं।

प्रेत पकरे से, रेत खेत खिचरे से अरु
सूखे से श्रमें से ज्यौ उपान्ह के लतारे हैं।
बूडे से, बहे से बेसऊरन से, बांवरे से
जरे से, बरे से, पर गए मुख कारे हैं।२७६।
आयो कलकत्ता ते अजीत सिंह घूम करि
रोम रोम ताके आग ही सी बर गई है।
रस की न बस की न कस की चली है बात
अति उपजस की कमानी अर गई है।
काहु के न पास रह्यो न जी हुलास को जु
हिय[९४] भयो निरास को अकल जर गई है।
चिंता चक चूर भयो, बडो बे सहूर भयो
कूर भयो नूर पर धूर मुख पर गई है।२७७।

सरदार अतर सिंह से अजीत सिंह की सलाह

दोहरा

या बिधि बहुत दिनान लै दुहुं रहै इक ठौर,
किस बिधि सौं, किहँ बीचदै, चलियै तखत लहौर।२७८।

सोरठा।

माफ करै तकसीर, शेर सिंह महाराज जो।
तो फिर सभ ततबीर, राज काज की याद मुहि[९५]।२७९।

---

९४. हृदय

९५. यहां कवि ग्वाल ने महाराणी चंद कौर के मारे जाने का हाल जान बूझ कर छोड़ दिया है। संधावालीए असल में महाराणी की मौत से पीछे सब जगह से निराश हो कर ही महाराजा शेर सिंह की ओर झुके थे। यदि महाराणी जीवित होती तो उन्हों के लौटने की बात नहीं थी।

बेदी बिंक्रम सिंह के सहारे महाराजे से मुआफी

दोहरा।

बेदी बिक्रम सिंह पै, अरजी दई पठाइ।
शेर सिंह जू सौं हमैं, दीजै आप मिलाइ।२८०।

कबित।

कर तकसीर आए, भए हैं, खराब हम
घूमि आए चहुं और कहुं पेश ना परी।
अब हम दीन ह्वै अधीन ह्वै रहैंगे सदा
तन मन छीन भए अड़क बिदा करी।
आप के चरन पै औ गुरु के ग्रंथ साहिब पै
हाथ धरि खाउं सौंह अति सत्यता भरी।
ठाकुरी सदाई शेर सिंह जू की बनी रहै
हम कर जोर कै करैंगे नित्य चाकरी।२८१।

दोहरा।

बाबा बिंक्रम सिंह पै, पहुंची अर्जी जाय
जयों की तयों सरकार मैं बाचि सु दई पठाय़।२८२।
सुन्यो जबै सरकार नै, अरजी को अहिवाल।
श्री वजीर नृप ध्यान सिंह तिन को सुनियो हाल।२८३।

कबित।

सुन कै हवाल सरकार शेर सिंह जू कौ,
दूजे ध्यान सिंह जू कौ आई अति दया है।[९६]

---

९६. कवि ग्वाल का यह कथन भी असत्य है। संधावालियों को बुलवाने का असल कारण यह था कि महाराजा शेर सिंह के साथ राजा ध्यान सिंह का कुछ काल से अजोड़ था तो ध्यान सिंह महाराजे को गद्धी से उतारने के गुप्त रूप से डर देता रहता था। इस लिए उस को गले से उतारने के लिए महाराजे की नजर संधावालिओं पर पड़ी, जो महाराणी चंद कौर के स्वर्गवास पीछे डगमगा रहे थे, पंजाब लौटने के लिए पहले ही उतावले थे। बेदी बिक्रम सिंह जी दोनों के शुभचिंतक थे। इस लिए उन के द्वारा महाराजे के साथ संधावालिओं का मिलाप सहज ही में हो गया।

बोले राजा साहिब हजूर सों, कि "माफ करो
उन्हों सों कसूर पाछै भया तो न भया है"।
बोली सरकार "अच्छा लीजिए बुलाइ अब
उन्हें लिख भेजो जवाब जौन चित्त छया है"।
तब राजा साहिब ने कागद लिखाइ करि
उन्हैं पठवायो लै सवार बेग गया है।२८४।

दोहरा।

बाबा बिंक्रम सिंह नै कागद लयो बंचाइ।
लिखयो सु उनकी तरफ फिर, तुम ह्यां आओ धाय।२८५।
पहुंचयो कागद जायके, वाचयो सिंह अजीत।
ताया तै करि गुरुमता, आयो आप कुनीत।२८६।
पहुंचयो बिंक्रम सिंह पै हाथ जोरि सिर नाइ।
कही सरन मैं रावरी, मेरी करो सहाइ।२८७।
आप चलो अरु लै चलो, करके परम पनाह।
प्रबल आपनी बांह सों, पकरायो मम बांह।२८८।
श्री गुरु बेदी बंस मैं, बिंक्रम सिंह कृपाल।
कही "टिको, कर देहिगे, पूरन सभै सवाल"। २८९।

सरदार अजीत सिंह फिर लहौर आया

कबित।

कछुक दिनों मैं बेदी साहिब कियो है कूच
संग लै अजीत सिंह शरण परैया को।
मंद मंद मारग विताय, सुख पाय, आय
पहुंचे लहौर भेजयो खबर करैया को।

पावत खबर सरकार शेर सिंह जू नै
भेजे सरदार आगे जाइ लै अवैया को[९७]
पाछे और मोअतबर भेजे श्री हजूर पूर
डेरा करवाओ संग सौंप बहु भैया को।२९०।

सोरठा।

जो जो चाहिये चीज सो सो उन सौं पूछ कैं।
करि करि सब तजवीज, भले वहां पहुंचावही।२९१।

दोहरा।

जाफत के भेजे सु फिर, रुपया एक हजार।
मेवा अरू मिसरीन की, बहिंगी कई कतार।२९२।

कबित।

भेजे सरकार नै,मुसाहिब गुरु[९८] के पास
उनहु अजीत सिंह तुरत बुलायो है।
कही बेदी साहिब ने "साचे बनो इन आगै
तब यह करैंगै अरज साच वह छायो है।"
तब ही अजीत सिंह परिस[९९] ग्रंथ साहिब औ
हाथ बेदी साहिब के चरन लगायो है।
शेर सिंह जू की सदा चाकरी करैंगे हम
दगा को न लेश हुं हमारे मनि[१००] भायो हैं।२९३

दोहरा॥

जो मन मै छल होए तौ, [१०१]वगै गुरु की मार।

---

९७. जागरूक (सरदार अजीत सिंह को)

९८. बेदी, सोढ़ी बावा पुरुषों को, जिन्हों का सबंध आदि से गुरु घर के साथ है, उस समय आम लोग गुरू ही पुकारते थे। इस लिए यहां बेदी ब्रिकम सिंह को भी कवि ने गुरू लिखा है।

९९. हाथ लगा कर १००. मन में १०१. हम पर चलै

दुहूं लोक भल होइ नहि, ऐसौ शपथ उचार।२९४।
यौं जब आय, मुसाहिबन, करी अरज सरकार।
बाबा ब्रिकम सिंह बीच, कीनै सबै करार[१०२]।२९५।

महाराजे कीं ओर से अजीत सिंह को पुनः पनाह।

कबित॥

तब सरकार फरमायो है, "बुलाइ लेहु"
गयों यौं हुकम तब आयो सुख पाय कैं।
जोरि दोऊ हाथन अजीत सिंह पाए परयो
कीनो सिरवारनो सु नजर दिखाय कैं
कही "हम चाकर हैं ठाकुर हमारे तुम"
बैठ गए आपने कसूर बखसाय कैं।
छाइ कै कृपा को हम राखौ पग लाइकैं जू
जाइ कहां धाइ कै तिहारे कहवाय कैं।२९६।

दोहरा॥

बाबा ब्रिंकम सिंह ने, पकराई फिर बांह।
सरन परै जिय जान के, इतनी करो पनाह।२९७।

कबित॥

राजा ध्यान सिंह जू के पग छ्वै अजीत सिंह
हाथ जोरि बोल्यौ अब आसरो तिहारो है।
रावरी कृपया ते बन जायें सभ काम मेरे
जौ पर कसूर मेरे हिय ते बिसारो है।

---

१०२. साक्षि दे कर (आपस के दरम्यान)

आप की पनाह ही सौं ह्वै है निर्बाह मेरो,
कृपा बादशाह की को हेतु तूं निहारो है।
मेरे दोऊ हाथ दोऊ साहिब रहैंगे जब
ह्वै है बिखटक तब जीवन हमारो हैं।[१०३]।२९८।

दोहरा॥

सुने बचन जब दीन ये, तब दोऊ महाराज।
कही "रहो बेखटक तुम, ह्वै जैहै सभ काज"।२९९।
करन लग्यो नित चाकरी हाथ जोरि सिरू नाइ।
जो किछु हुकम करै प्रभु लावै वही बजाइ[१०४]।३००।

सरदार लहिना सिंह संधावालिए की रिहाई

कबित॥

कछुक दिनौं लौं ऐसैं चाकरी करत रह्यो,
फेर नृप ध्यान सिंह जू सों अरजी आ करी।
"चाचा जो हमारे कैद नाम लहना सिंह,
और ताया कौ तनुज[१०५] कैद पांय बेड़ी है परी।
तिनै छूटवाओ बादशाह सों, अरज करि
माफ करिवाओ तकसीर जो भई खरी।
यहां बुलवाओ, सरकार सों मिलाओ फेर।
चाकरी कराओ मिटै चिंता चित जो भरी।३०१।

---

१०३. बवि के इस कथन की पुष्टि नहीं होती। इस लिए यह कलपना है।

१०४. पालन करे।

१०५. सरदार अतर सिंह का पुत्र सरदार केहर सिंह संधावालिया। यह सरदार लहिना सिंह के साथ कुल्लू से पकड़ा गया था। (देखो छंद अंक २६५ की टिपणि।)

सोरठा॥

सुने जु बचन महीप अति कृपाल है शील जिंह।
श्री सरकार समीप, अरजैं, सभ कर देहिंगें।३०२।

दोहरा॥

करत रह्यो बहु दिनन लौं, राजा जू सों अरज।
बेग छुडाओ बंद तै, आप दयाल अचरज।३०३।

कबित॥

तब सरकार को एकांत राजा साहिब नै
अरजैं अजीत सिंह की सबै सुनाई हैं।
अपनी तरफ हूं ते करी समझाय करि
दीजै अब छोडि सजा नीकी उनि पाई हैं।
कही सरकार जो तिहारी खुशाी ऐसे है तो
मेरी हुं खुशी है देह कैद ते छुटाई हैं।
तबै सरकार हुकम भेज्यो है अटलगढ
त्वरित परवानों लिखवाय सही पाई हैं।[१०६]।३०४।

दोहरा॥

लाओ संधावालिये, बेड़ी दुहुं कटाइ
यों परवानों जब गयो, लियो तबै बचवाय।३०५।
ह्वां थे जो मुखत्याार सो, हुकम पाय यह रीत।

---

१०६. यह कथन भी कवि की कल्पना मात्र है इस की पुष्टि कही से नहीं होती। असल में जब बेदी ब्रिकम सिंह की मारफत सरदार अजीत सिंह का मिलाप महाराजा शेर सिंह के साथ हुआ तो सरदार लहना सिंह और केहर सिंह के छुटकारे का फैसला भी हो गया था। कवि ग्वाल ने राजा हीरा सिंह का नौकर होने के कारण ध्यान सिंह आदि की प्रशंता के लिए कई जगह ऐसी ही कल्पना की है खोज में जिनका कोई मूल्य नहीं है। पजांब रीकार्डज़ से इस बात की पुष्टी होती है। कि संधावालियों के मिलाप के लिए बेदी साहिब लाहौर आए तो उन्हों ने पहले ही सभ शरते तै की थीं।

बेड़ी काट दुहन को, लै आयो युत प्रीत।३०६।
पहुंचे जाए लहौर तट, उतरे बाहर बाग।
ध्यान सिंह महाराज सो, मिले पृथम पग लाग।३०७।
तब कृपाल श्री ध्यान सिंह, मिलए लै सरकार।
माफ कराय दई तबै भूल जु सबहि प्रकार।३०८।

कबित॥

करी सरकार सों अरज लहिना सिंह हूं ने
हमरी हवेली जो मिले तो जाय उतरैं।
जब सरकार फरमायो जो लिखाउ नाऊं
जहां जहां होइ तहां तहां हुकम पसरैं।
तब उन नाम लिखवायो गए परवाने
खाली ह्वै गए मकान सभ बिन झगरैं।
आप जाइ उतरयो, उतार दियो साथी सभ
दीन ह्वै कहन लाग्यो नीची कियै नजरौं। ३०९।

दोहरा ।

लहना सिंह अजीत सिंह, केहर सिंह जु तीन,
रहन लगे नित एकठे, मन अति आनंद कीन। ३१०।
हाथ जोड़ि हाजर रहै, दुहु समय दरबार।
करैं वही नित काम जो, फुर्मावैं सरकार। ३११।
फिर अजीत सिंह हु कह्यो, राजा जु सों जाय।
"हुकम होय तो बार, अब, ताया लैहिं बुलाय"। ३१२।

सरदार अतर सिंह की वापसी

कबित

कछु दिन पाछै श्री महीप ध्यान सिंह जू ने
कही सरकार से "जो कीनी आप दया है।

तौ इन्हूं बनाओ सरदार ज्यों के त्यों ही फेर
चाकरी करैंगे जो हिये मैं कछु हया[१०७] हैं।
दीजै जो हुकम तो अतर सिंह आवै, बार
कही सरकार: 'आवै, काहे पार[१०८] पया है"।
पाय कै हुकम को अजीत सिंह लिख भेज्यो
ताया तुम आओ, दुख दूर सभ भया है। ३१३।

दोहरा ।

पहुंचत ही कागद तहां, रह्यो बार जब आय।
बाबा ब्रिकम सिंह तट, टिकयो आय सिर नाय। ३१४।
लहना सिंह अजीत सिंह, दोऊ पास बिठाय।
फुरमायो सरकार ने, अधिक कृपा के भाय। ३१५।

कबित ।

मुलक तिहारे पास जितनो जहां को तहां
किला कोट आपने संभाल सभ लीजियै।
एती कहि बात परवानो लिखवाय दियो
दियो सिरोपाव है बहाली को अखीजियै।
घोड़े दिये, हाथी दिये, रथ दिये, खासे दिये
बसत्र दिये, शशत्र दिये, प्रेम सों पतीजिये।
जाहर जवाहरात जग जेति जगा दिये
जगा दियो रूप ताहि सर कौन कीजियै। ३१६।

सोरठा ।

कही फेर सरकार, फौज आपनी लेहु रख।
और जु है दरकार सो सो मांगो देहु मैं,। ३१७।

---

१०७. शर्म   १०८. सतलुज नदी के इस पार (अंग्रेज़ के शासित प्रदेश से)

दोहरा ।

पाय खिलत सभ चीज को, करने लगे त्यार।
दिन दिन दूनी दुति बढ़ै, जयों फुहार को धार। ३१८।

कबित ।

करी है अरज सरकार सों अजीत सिंह
आए हम टूटै हाल खरच न पास है।
"लाखक रूपैया दिलवाईयै दया करके
क्रम सों तसील मैं ते कर हों निकास है"।
सुनत प्रमाण सरकार नै दिवाय दियै
उनै मांगने को फिर परगो खवास है।
कई बेर फेर मांगे दियो जाइ सरकार
नाही निकरत नाहि, बाद्यो जिय हुलास है। ३१९।

दोहरा ।

मांग्यो सोउ दै दियो, बिन मांगै बहु दीन।
दिन दिन दैवो ही करै, ऐसी कृपा सु कीन। ३२०।

संधावालियों की साज़िश

कबित ।

कियो असबाब सब त्यार दस मास मांहि
फौज करी लैस साज बिकट बनायो है।
मन मैं कपट पट निपट लपट रह्यो
ऊपर ते हुकम जो जो भयो सो बजायो है।
मीठी मीठी बातैं करैं, प्यार की सु पातैं करैं
भेद बहु भांतैं करैं, साच दिखलायो है।

कहुं बनै दीन, कहुं बनै प्रबीन पीन

कहुं बनै बुद्धि हीन, कौतक रचायो है। ३२१।

दोहरा ॥

शेर सिंह सरकार अर ध्यान सिंह महाराज।
अति दोई मोहित भए, दैव योग के काज। ३२२।
संधावाली दुहं नै जानी जब यह बात।
हम पै अति विश्वास अब, दोनों को दिन रात[१०९]। ३२३।

कबित

कही सरकार सों, अजीत सिंह जाय कर
हाजरी हमारी लीजै फौज सभ त्यार है।
तब सरकार फुरमायो अति प्यार करि
चाहैं जब दिखलाओ, तुमै अखतयार है।
सुनकर अजीत सिंह जंगी कारतूस भरि
फौज को सिखायो सभ मंत्र को विचार है।

---

१०९. बेदी बिंक्रम सिंह के सामने स: अजीत सिंह इतनी जलदी क्यों फिर गया, इसके कई कारण थे। संधावालिओं का लाहौर दरबार में रसूख बढ़ता देखकर ध्यान सिंह ने धीरे-धीरे उन से मेल जोल पैदा कर लिया था। और अंदर ही अंदर चालें चल कर महाराजा शेर सिंह और संधावालियों के बीच में कई शंके पैदा कर दिये थे। बड़ी बात यह थी कि डोगरे कुंवर दलीप सिंह को जम्मू से लाहौर ले आए थे। ध्यान सिंह महाराजे को गद्धी से उतारने के लिए पहले से ही डर देता रहता था। अब जब डोगरों की संधावालिओं से गुपत मीटिंग होने लगी तो और भी शंका बढ़ गयी। इस बढ़ते शंके को देख कर महाराणी साहिब कौर गिलवाली की मौत, जो लाहौर ही हुई थी संधावालिओं को जोश देने के लिए कोई कम घटना नहीं थी, क्योंकि यह घटनाएं भी चाहें राजा ध्यान सिंह के ईशारे से ही हुई थी पर महाराजा शेर सिंह भी इस अप्राध में लिपट गया था। कुछ दिन पहले राणी साहिब कौर गिलवाली का भ्रूण गिराया गया था। यह सभी बातें संधावालिओं की पारटी को खतम करने के लिए की गई थीं। इस लिए जब शंके परसपर दोनों पक्षों के बीच भेद परायणता खलिल की शकल अखत्यार करने लगी तो बीच में बचाव का साधन कोई ना रहा। यह एक कुदरती बात थी, वैसे अजीत सिंह महाराजा से बिगड़ना नहीं चाहता था। लहना सिंह ने उस को मज़बूर किया था। (देखोः बीर मृगिंद, गुर बिलास)

ऐसै हम करैं, तब ऐसो तुम कीजो तहां
रहियो हुशियार मत कीजियो अवार हैं। ३२४।
फेर लहना सिंह सो कही है अजीत सिंह,
कल संक्राति दान समय जु इकंत है।
मैं तो इत जाइ शेर सिंह को करौंगा काम,
ताही छिन[११०] तुम करौ कौर को हनंत है।
फेर ध्यान सिंह जू को देख लै हैं काहू ठौर
और फेर कह्यो कौन दूजो बलवंत है।
जो हमैं संघारे प्रण पारै किला फारे मारे
धारै तरवारैं, ऐसौ कौन छिति-कंत है। ३२५।

महाराजा शेर सिंह का कतल

सोरठा

करि ऐसे संकेत, फौज संग लै दुहुं गए।
शाहि बिलौर[१११] निकेत, जहां हजूर उतरे हुते। ३२६।

दोहरा

दान विधान हजूर करि लख्यो मल्ल को युद्ध।
कंठे, कड़े इनाम दै, उठे आप अविरुध। ३२७।

कबित

आइ करि अरज अजीत सिंह कीनी जब
लीजै महाराज आज हाजरी हमारी है।
बारादरी मैं चल बैठियै इकंत तहां
देखिये बहार कैसी फौज छबि धारी है।

---

११०. क्षण   १११. शाह बिलावल के स्थान पर।

बैठी सरकार जाय जहां उन कही तहां
हाजरी के मिस[११२] घेरी बारह द्वारी है।
एक एक असवार आगे ह्वै निकारयो करैं
कराबीनियों की पांति[११३] पास करी न्यारी है। ३२८।
हाथ जोरि अरज अजीत सिंह कीनी फेर
सिंह एक मेरो ताकी अर्ज नयारी है।
कहियै तो ऊपर बुलावैं, उन कही आवै
तयों ही चढ आय ठाढौ भयो सो पिछारी है।
कही फेर नंदन[११४] ते आई है दुनाली देखो
गही सरकार जब नाली की अगारी है।
पाछै हाथ राख कै अजीत सिंह महां नीच
दाबि दुहुं घोड़ा यों दुनाली झट मारी है। ३२९।
सिंह एक पाछै आइ ठाढो जो भयो है, ता ने
ऊपर तै सिर पर मारी तलवार है।
वाही राह कूद सरकार को लै सीस संग
फौज लै त्वरित कियो किले को विचार है।
तयों ही बुध सिंह आयो चेला सरकार को जो
ताने वाही सिंह को जो सीस काट्यो डार है।
ताको फेर जीत[११५] के सिपाहिन ने आइ लियो
झट पट सीस लियो ताहुं को उतार है। ३३०।

कुंवर प्रताप सिंह की हत्या

इत मैं अजीत सिंह कियो वह नीच काम,
उतै लहना सिंह हुं नैं मार्‌यौ कौंर[११६] जायकै॥

---

११२. बहाने से। ११३. पंकति, टोली, दसता।

११४. लंडन ११५. अजीत सिंह के।

११६. कुंवर प्रताप सिंह, यह कुंवर महाराजा शेर सिंह का बड़ा होनहार पुत्र था। इस समय वह अभी १३ वर्ष का ही था जब इस की स: लहना सिंह संधावालिया के हाथों मौत हो गई।

चल्यो वह किले को सवार कछु संग लियैं
आगै चलयो जात हो अजीत सिंह धायकै।
जात ही हवेली तै हजूर पै श्री ध्यान सिंह
मिल्यो मग माहि है अजीतसिंह आयकै।
कही संधावालिया कि ऐसे काम कियो हम
सुनत महीप हिय उठ्यो है रिसायके। ३३१।

दोहरा

ध्यान सिंह नृप चित धरी, मार्यौ इनै कुमार।
यह विचार संग लै गए तिन को किले मंझार। ३३२।

कबित।

राजा ध्यान सिंह जू कौ लहिरैं अनेक उठैं
भूमैं हूं गडाय या उडाइ तोप मारों ये।
हाथिन के पाय नीचे नीचन खुंदाइ डारौं
या सरीर फारि फारि लौन भर गारौं ये।
भौंथरे हथयारन तैं बंद बंद जुदै करों
या कछुक दारू मैं झुलस डारौं खारौं ये।
चीर डारौं इन को कि तीर डारौं तनि तनि,
नीर डारौं दोअन को या जराय डारों ये। ३३३।

राणा ध्यान सिंह का कतल

सोरठा

पहुंचे किले मंझार, ताहि विचार नीचन किये।
जो नृप[११७] अब बच जाय, तौ हन[११८] है हम को अबै। ३३४।

---

११७. राजा ध्यान सिंह।

११८. उस समय असल में अकेला स: अजीत सिंह ही आपने सिपाहियों समेत था, जिस ने राजा ध्यान सिंह को घेरा था। सरदार लहना सिंह उस के पीछे फौजी दसते ले कर किले में दाखल हुआ था।

कबित ।

अधम अजीत सिंह भूप की बचाइ डीठ
करी सैंन और को कि देहु इनैं मार है।
त्यौं ही पीठ पीछै ते जो नीचन को नीच ता नै
मारी कराबीन भरी गोली की कतार है।
लगत प्रमाण ही जुबान तै श्री राम कढ्यो
तन तै जु प्राण कढयो छोडि ब्रहम द्वार है।
तहां भूप संग के सिपाही एक देखि आइ
कराबीनीआ को मार्यो मारि तलवार है। ३३५।
बिक्रमेश संबत सो उनईस शत पूरै(१९००)
अश्विन महीना, कृष्ण पक्ष पितृ बास है।
भृगुवार अरु कन्या संक्रांति हुती
प्रथम पहर दिनकर को विलास है।
शेर सिंह सरकार कुंवर प्रताप सिंह
राजा ध्यान सिंह युत आयो हुकम खास है।
विशनु पार्षद लै बिबानन पै चलै गए
जाई जाई कियो ब्रहमलोक मैं अवास है। ३३६।

सिश्र बेली राम और ज्ञानी गुरमुख सिंह के मशवरे

दोहरा

जाय तखत तब नीच वे, बैठे बीच दलान।
लियै लवाईक[११९] संग सब, करत सलाह निदान। ३३७।
नीच लगे फिर राज के, बंदोबसत के काज।
राज सुचित ह्वै करैंगे, अब हम तखत बिराज। ३३८।
ताहि समें आए, जु द्वै, गुरमुख सिंह इक जान।

---

११९. साथी संगी।

सिश्र जु बेली राम द्वै, दोऊ हिय हरषान।[१२०] ३३९।
तिन दोउन की कहित हो, नयारी नयारी रीत।
कौन हुते और करी उन कैसी अधिक अनीति। ३४०।

कबित।

गुरमुख सिंह नाम ज्ञानी कहवावत है,
ता पै सरकार अति करत कृपा रही।
हर इक कामन मैं वा की मुखत्यारी रही,
नित अखत्यारी करे बात जो बिचार ही।.
कंवर प्रताप सिंह ताकौ सरकार सौंप्यौ
जानि निज अंगी इक रंगी इक बार ही।
सभ सरदारन तै हर जा सिवाइ राख्यो
दौलत मुलक हुकम दियो है अपार ही। ३४१।

दोहरा ।

सोई गुरमुख सिंह फिर, बनकै गुरु की ठाम,
पाहुल पढ़ि दीनी हुती, कुंवरहि यहि जग आम। ३४२।
या बिधि गुरुमुख सिंह को, कुँवर पुत्र सम लाग।
ताहुं पै बालक उमर, बड़े रूप को बाग। ३४३।

---

१२०. संधावालीयों ने इस मौके पर पंजाब के राज प्रबंध के लिए अपने साथियों से जो बातें की वह एक पुरातन रोजनामचे के अनुसार इस प्रकार है :
"तब संधावालिओं दोनों सरदारों तथा बेली राम तोशेखानिया और भाई गुरमुख सिंह ज्ञानी यह चारों मिल कर मनसूबा करने लगे राज के समाज का। बेली राम कहा संधावालिओं को "जो मेरे मन तो यह बात आवती है माया के हौंदे भरा आप हाथिओं पर चढ़ो से फौज को सूबेदारों को मुसाहिबों को, जरनैलों को इनाम बशाको (बखशो) घोड़े, कड़े, पुशाकी, जेही (जैसी) लायक का कोई होवै तेहा ही इनाम बशाको, फौज मुसाहिब अपने कर लेवो। तब भाई गुरमुख सिंह ज्ञानी कहा : "जो तुम उतावल न करो यौं ही माया क्यों लुटाईए, रीत से बरतावेंगे, अब हमें डर किस का है। पादशाह अर वजीर दोनों मारे गए।
फौज सब असाडी मुथाज है। यहां अभी सभ सलामीआं आन करते हैं। करतार का भाणा इसी प्रकार था। तब संधावालियों कहा जो वाहु वाहु भाई साहिब जी, इहो बात अच्छी है।
(पं:यू:लाहौर, MSS नं ४०८)

कबित ।

बाहर तै ऐसै आय गुरमुख तखत पास
लहना अजीता को मिल्यो है, कंठ लाइकै।
लाग्यो है कहन "आज अधिक बधाए तुमै
हमैं हरख छायो सो कहों मैं का सुनाइकै?
अंग अंग मेरे उठैं फूलि फूलि खुशी माहि
कियो तुम रंग, दियौ पर्बत द्वै ढायकै"।
अतर लगावै, माल फूलन की गलै पावै
ऊचे ऊचे गावै, बतरावै मुख बायकै। ३४४।

सोरठा ।

मिसरी और कड़ाह, बांटन लगयो उचार योंः-
आज मिट्यो सभ दाह, राज अटल अब तुम भयो। ३४५।

दोहरा ।

गुरमुख को तो हाल यह, दियो सबन सुनाइ॥
मिश्र जु बेली राम को, कहौं हवाल बुझाइ। ३४६।

कबित ।

बालकपने ते रह्यो बड़ी सरकार[१२१] पास
कियो सरकार ने जो ताहि तोशेखानिया।
बडो सरोकार कियो, मुलक अपार दियो
तां ते रह्यो भोगत बहार मन मानीआं।
ताहुंते सिवाई शेर सिंह जु नै करी कृपा
कई युग बीते खात निमक प्रमानीआ।

---

१२१. महाराजा रणजीत सिंह।

भूप ध्यान सिंह जु छुडायो कैद कौर[१२२] की तैं
फेर कै बनायो कोश[१२३] काम को प्रधानीआं। ३४७।
गुरमुख सिंह आइ बांटयो हो कड़ाह जब
तब ही मिसर बेली राम आयो धाइकै।
हंसि हंसि बोलत अजीता लहिना सों अब
आप को बधाइ है बधाई चित्त चायकै।
लायो मैं जवाहरात पहिनो दिन रात तुम
हीरन के मोतिन के हार हर्षायके।
सुख सरसायो भयो, मेरे मन भायो भयो
किला छबि छायो थयो तो सों प्रभु पायकै। ३४८।

सोरठा।

ऐसो कृतघ्न कूर, निमक हराम निकाम अति।
जगत दई मुख धूर धिक धिक बेली राम तुहि[१२४]। ३४९।

दोहरा।

अब फिर पूरक प्रसंग को, मेलि कहत्त विवहार।
भयो अचरज को मरन, तिह को जगत मझार। ३५०।
कहा कियो, का करत है, का कर है प्रकार।
लख न सकत हैं अमर हूं, भावी को विवहार। ३५१।

कबित।

जैसे बुधि सागर श्री शेर सिंह महाराज
नागर सु तैसे ध्यान सिंह जु निहारे हैं।
जाकै राजनीत के भेद भाव भाव सभ
एसौ को निदान जो ना दोऊ उर धारे हैं।

---

१२२. कुंवर नौ निहाल सिंह १२३. खज़ाना। १२४. इस कथन की कहीं से पुष्टि नहीं होती।

सास दाम दंड भेद आदिक अनेक अंग

रंगे रंग रंग दोऊ एक ढार ढारे हैं।

कई कई लाखन को एक एक बली हतो

अै पै बली छली छलि सभ डारें हैं। ३५२।

हेम को हिरन कभूं देखे नाहि सुन्यो काहु

ता पै उठि धायो रघुबर सो सुजान है।

नारद बताई महां माया नै सुनाई तऊ

कंस को कन्हैया ने पटकि काढ्यो प्राण है।

ग्वाल कवि पारथ[१२५] के बान ते अकारथ ह्वै।

भीलों पै चलै न, रही कर मैं कमान है।

कोउ है न आन बलवान या जहान बीच

जैसी छलवान एक भावी बलवान है। ३५३।

सवैया । कवि प्रियायं

बालि बंध्यौ, बलि राव बंध्यौ, कर सूली के सूल कपाल थली है।

काम जर्यो जग काल पर्यौ, बदि शेष धरे बिख हाल हली है।

सिंध मथयौ, किल काली नथ्यौ, कहि केषव ईन्द्र कुचाल चली है।

राम हुं की हरी रावण बाम, चहुं जुग एक अदृष्ट बली है। ३५४।

ध्यान सिंह के कतल की खबर

अन्यच काहुं कृत। कबित।

कैसे कैसे बली भूप भूपर विख्यात भए

अरि कुल काल नेक भौंह के विकार सों।

लंघै गिरि सागर दिवाकर से दिपैं जिनै

कायर किये हैं भट करन हंकार सों।

---

१२५. अर्जुन

ऐसै महामानी मौत छाए हूं, न हार मानी
कबहुं न उतरे है मान के पहार सों।
देव सों न हारे, पुनि दान सों न हारे
फेर काहुं सों न हारे, एक हारे होनहार सों। ३५५।

पुनि प्रसंग । कबित ।

बुद्धू के सु आवै वाली बारहदरी परै हुते
हिंदुपति हीरा सिंह माहराज वा समैं।
काहुं कही जाइ संधावालियों दुहुं ने अभी
मारी सरकार अर कौर इक सास मै।
ताही छिन सुनी श्री महीप ध्यान सिंह हुं कौ
उन नै पठाइ दियो हरि पुर वास मैं।
सुनत उदास मय रह्यो न जी हुलास मय
जु बोले ता समें "भई दगा विश्वास मैं"। ३५६।

दोहरा ।

जो जो लहर उठी हुती ध्यान सिंह जू हीय।
सो सो नृप हीरा सिंह आनि फुरी सभ जीय। ३४८।

कबित ।

महाराज हिंदुपति हीरा सिंह बोले तब
जानी अब उनहू की मीच सिर खेली है।
सात हुं विलायत मैं पकरि मंगाऊं हाल
भेजूं ततकाल काल गाल की अलेली है।
कौन उनैं राखे, खड़ग मेरी को स्वाद चाखै
खाखैं करि दैहों फौज लाखैं हूं सकेली है।

आज रजपूती की सपूती मजबूती मेरी
देखैंगे विभूती दोऊ सीसन की सेली है। ३५८।

राजा हीरा सिंह की प्रतज्ञा व चढ़ाई

दोहरा

हीरा सिंह महाराज नै, अफसर सबैं बुलाए।
सबै खबर करि फिर कह्यो - तुमरे चित कह आए। ३५९।

कबित ।

अफसर जाय सभ फौज लै सलाह करि
आय महाराज पास कही बात राह की।
स्वामी जो हमारे ताहि मार्‌यो इन दुष्टन नैं
दूजे बाल घात सोऊ बात अति डाह की।
ता पै महाराज ध्यान सिंह को कियौ जो घात
कैसे दुख दुसहु सहै जु सीवा दाह की।
आप ही के केवल पिता न हुते महाराज
हुते माहराज पिता सरब पनाह की। ३६०।

सोरठा ।

जीवन धिकह हमार, जो हम बदलो लेयं नहिं।
सिर पर हाथ तुमार, सिरफ एक चहियैं हमैं। ३६।

दोहरा ।

सभै खालसा पंथ यह, है अब तुमरे संग।
बैठि तमाशा लखहु तुम, अब हम मारत जंग। ३६२।

सोरठा

हीरा सिंह छिति ईस, करी प्रतिज्ञा सबन सों।
पैहौं जब अरि सीस, तब करहों जल पान मैं। ३६३।

दोहरा ।

सुन कै बचन नरेश के, बोले सब तब गाज।
है हमरी हुं सबन की यह प्रतिज्ञा आज। ३६४।

कबित ।

तब महाराज हीरा सिंह जू बिचार करि
दियो बटवाय फौज माहिं जंगी साज है।
सब छावनीन के इकट्ठे तोपखाने कढि
पलटन पंगति के जुरे ज्यों समाज है।
बिबिध रसाले कई वार सत्रु साले तोऊ
खड़ें है निराले करैं तुरम अवाज है।
खुले असवार सिंह सूरमे अपार धार
भए सब त्यार शरत निमक की आज है। ३६५।

दोहरा ।

हीरा सिंह महाराज जब, चले सैन लै संग।
सभ ही के दिल मै भरी रण की अधिक उमंग। ३६६।

मिश्र लाल सिंह कीं सहायता

हूं जो तोशेखनीया, मिश्र लाल सिंह नाम।
शामल संग सलाह सुभ, बीर धीर संग्राम। ३६७।

कबित ।

उज्वल जनम पायो, विप्र कुल कहवायो
सब सरकारन सुहायो शुभ चाली है।
सजन सुहृद सब ही सै हंसि बोले बाक
छाक छ्कयो रहै, खैर खवाही की बिसाली है।

ग्वाल कवि रहै कहै एक रंग अंग ढंग
रंग रंग हिये में उमंग की बहाली है।
बीरता दिखावन की हुकम बजावन की
मिश्र लाल सिंह जू को मुख चड़ी लाली है। ३६८।

दीवान दीना नाथ और उस की उपमा

दोहरा

सरकारी दफतरन के, ईस जु दीना नाथ।
सोऊ तब हाजर हुकम, रहे जु नृप के साथ। ३६९।

कबित

इलम कमाल हाल राज का है नोक-ज़बां
ऐसी बातैं क्या हैं जो न याद इक साथ हैं?
राखत निगाह परवरिश की यतीमन पै
खुशी होय जावते जो आवत अनाथ हैं।
की है सरकार की हज़ारों खैर-खवाही खूब
हुकमी हजूरी पूरी साची गुन गाथ हैं।
रोशन हुई है खूबी जिन की जहान पर
नेकी के निशान श्री दीवान दीना नाथ हैं। ३७०।
मालक को हुकम प्रमाण मन मानि मानि
मानि बिन रहैं, चहैं सनमान साथ हैं
बान परी परउपकार ही की हियैं आनि
पुन्य ही मैं प्राण ओ जुबान धर्म गाथ हैं।
आन नहिं नाथ जा को खान पान दै दै
करत प्रदान जान राखैं नम्र माथ हैं।
जाहर जहान जान जान प्रजान के हैं
नेकी के निशान श्री दीवान दीना नाथ हैं। ३७।

कश्यप पुरी[१२६] के नीके, द्विज कुल ही के दीप
जानत महीप सब जानी गुन गाथ हैं।
सब ही की भली कहैं छली ते अलग रहैं
बली कहां अबली बतावैं उच्च माथ हैं।
स्वामी ही के राजन के साजन मैं चित्त नित्त
वृत्त भगवान ही की कृष्ण के साथ है।
सुजस महान आनि छायो है जहान जान
नेकी के निशान श्री दीवान दीना नाथ हैं। ३७२।

शुभ शगन

सोरठा

रघु कुल राम मनाय, गनपत द्विजपद पूज है।
श्री गुरू पद को ध्याय, चले जंग जीतन तबैं। ३७३ ।

छंद प्रमाणिका

मिले सु कुम्भ पूरणं तुरंग आय् तूर्णं।
सबाल बाल सोहनी! मिली सदुग्ध दोहनी। ३७४।
सुने सु गीत मंगलं । गऊ मिली सु उज्जलं।
करी शिंगार सज्जितं। सुंदुदंभी सु वज्जितं। ३७५।
मिली सु बारि नागरी। सरूप मैं उजागरी।
मिले सु फूल फल जयों। दधी सुपात्र भल तयों। ३७६।
मिले सु बिप्र बृंद हैं। सुने सु वेद छंद हैं।
भर्यो डला सु गोबरैं। सुमास थाल मैं भरैं। ३७७।

---

१२६ कश्मीर, कश्यप नामी पहाड़ की वादी में बसा होने कारण कश्यप पुरी के नाम से प्रसिद्ध है। दीवान दीना नाथ कश्मीरी ब्राहमण था और उस के बड़े शाहजहां के दरबार में मुलाज़म थे। संन १८१५ में दीवान दीना नाथ दीवान गंगाराम के रसूख से शेरे-पंजाब के पास मुलाज़म हुआ था। (चीफस एंड फैमलीज आफ नोट इन दी पंजाब, जिल्द १, पन्ना २५६।)

मिली सु कंन्यका घनी। प्रसंग खेल मैं सनी।
शराब के सु भाजनैं। मिलयो मखीर राज मैं। ३७८।

छंद भुयंग प्रयात।

लियै धूप दीपं कोई अग्र आयो।
ब्रिषभ स्वेत आगे सि आयो सिधायो।
बिना धूम अगनी प्रकाशित कहुं है।
खरे धृत भरे कुम्भ राजत तहुं हैं। ३७९।
कुई लै सिंहासन अगारी ति आयो।
कुई लै पताका सु छत्रं दिखायो।
रजक बसत्र धोए लिये आवैं आगे।
डब्बे रत्न के साहु कर मैं हू जागे। ३८०।
चले और आगै हिये लै लहे हैं।
मिले नीलकंठं नकुल गृह गहें हैं।
लखी वृक्ष पै मोर अवली घनेरी।
मिले आ झबेले[१२७] लियै मीन ढ़ेरी। ३८१।

दोहरा।

पिक पल्ली ओ पांडुकी[२] बहुर छछुंदर स्यार।[३]
कोली[४] जुत छै हुं सु ये मिली बाम सुख सार। ३८२।
रूपा रेली चाख अर हिरनन को समुदाय।
ए दछन लछन जु सुभ, सगुन मिले सुखदाय। ३८३।

फौजी चढ़त

छंद भुयंग प्रयात।

चले तोपखाने सवारं अपारं।

---

१२७ मछेरे।

चली पलटनैं रजबनैं बेशुमारं।
रसाले बिसाले चलो हर्षाए।
जंबूरे शत्रु पै चलै हैं चढ़ाए। ३८४।
गुबारण की पांति नयारी चली हैं।
सु पैदल बंदूकन की आवली हैं।
चली हैं कतारैं कराबीनियों की। ३८५।
सुभाले विशाले प्रभा बरछियों की। ३८५।
असित उरदीआं हैं। गुलंदाज गन जे।
मनो आज उमडे, महा शयाम घन ये।
अखिल तोप संगीन विज्जुलि चमँकै
महां शोर छायो, मनों गरज बँकैं। ३८६।
उड़ी रेन भू ते चली आसमानैं।
भयों धुंद जो लें छपा भासमानैं। ५
उड़ै जाइ घोड़े कि पै सस्सड़तैं।
मची ताप चाक्रन की खक्खड़तैं। ३८७।

कबित ।

जंग करबे को महाराजे हीरा सिंह बीर
भीर लै चमु की चढ़यो, धर धड़ड़ात है।
कुद्दत तुरंग मन मुद्दित सुरंग भए
उद्दत सवार सोर घन गड़ड़ात हैं।
ग्वाल कवि कहै हलै दिग्गज, दहले दिल
पल्ले फेरे ईन्द्र सों, समीर सड़ड़ात हैं।
कच्छप की पृष्ट कड़क कड़ड़ात ऐसै
जैसे परलै तड़ित तड़प तड़ड़ात है। ३८८।
चढ्यो एक हल्लै हिंदुपति हीरा सिंह बीर
संग लै बितुंडन को झुण्ड घन घेरा सों।

तोपन को, तुपक को, तेगन तमंचन को
तीरन को शोर मनो बैरन थपेरा सौं,
ग्वाल कवि एकै ओर भार को भंडार परै
भूपि भहरानी भाव भूल्यो चित चेरा सौं।
फौज को फनेश की फनाली पैं भयो फतूर
फैले, फेन फैंके, फन फ़ेरे पान फेरा सौं। ३८९।

संधावालियों को खबर

दोहरा

संधावालिन को भई, खबर किले के माहि,
नृप हीरा सिंह सैन लै, आए रन को चाहि। ३९०।
तब उनहु निज फौज को, दियो हुकम सर्राए।
चढ़े सफीलन पै लरौ, मारौ तोप तकाए। ३९१।
लहना सिंह अजीत सिंह, फिरैं दुहुं घबराए।
मन ही मन सोचैं कहैं, को अब बनै बचाए। ३९२।
इतने मैं पहुंची तबै, सैना किले समीप।
हुकम दियो तब फैर को, हीरा सिंह अवनीप। ३९३।
दए मोरचे साइकैं गढ़ के चारों ओर।
सबै फौज घेरा कियो, डारैंगे गढ़ फोर। ३९४।

लाहौर किले पर धावा

छंद भुयंग प्रयात

चहुंघां बजंत्रीन मारू बजाए।
घुरे घोर डफले सुताशे तचाए।
तुरम की तुतूतुं तुतूतूं तुतूतूं।
नगारेन की धुधूधूं धुधूंधूं धुधूंधूं। ३९५।

बजै बंसरी और तंबूर बाजैं।
पढ़ैं वार ढ़ाढ़ी कड़क्के अवाजैं।
खड़ी फौज चहुंघा सु उत्थत महाई।
लिये हाथ भाले विसालै तहांई। ३९६।
बरछीन की कौन गिनती गिनावैं।
किती पंगतैं सैफ-बाज़ों की छावैं।
हजारों दुधारा, सिरोही सु लक्खैं
कतारैं सु कत्तैन की को परक्खैं। ३९७।
कुमेदान कपतान औ सूबदारं।
सजी बिरजसैं औ किरच्चैं अपारं।
बिबिध रंग की जाकटें है झलाझल।
बंधी पेट पेटी जडाऊ भलाभल। ३९८।
जमें हैं तिलंगे सजे हैं जु चंगे।
उमंगे अभँगे कई रंग रंगे।
किती पलटनैं हैं पुर्बियों की सु चंगी
किती खालसों की खड़ी हैं इकंगी। ३९९।
किती रजबनैं सजबनैं लैस ठाढ़ी।
सबै जंग की हैं उंमगैं सु बाढ़ी।
संगीनैं दुनाली बंदूकैं चमक्कैं।
मनों बिज्ज भू सेल कर मैं दमक्कैं। ४००।
किते ही पंच रंग कारे सु लीले।
किते सुरख स्वेतं दुरंगे सु पीले।
किते ही जरी तास के झल झलाते।
छपे वार पहले सुनहले दिखाते। ४०।
किते सादगी औ दरियाई के खासे।

किते कीमखापी जगा जोत रासे।
खड़े दंड उद्दंड मैं यों निशानं। ४०२।
हवा ते हलैं औ छुऐं आसमानं
किले तैं सु गोली हज़ारों परैं हैं।
मनों मेह की बूंद दुंदै करैं हैं।
जहां ताक लावैं तहां ही चलावैं।
तऊ बाहरी फौज को गुरू बचावैं। ४०३।
किती ही सों तोपैं चढ़ी दमदमों पै।
तहां ते सु गोले चलावैं जु भोंपै।
फिरै चार हुं ओर बाहीन पै वो।
करैं ओट चौटैं सिपाहीन पै वो। ४०४।
इतै तै महाराज की तोपैं तड़क्कैं।
मनो काल ब्रिकाल की गाज गड़क्कैं।
चलैं गंज गोलेन के सन सनाते।
धमा धम धमा धम धमा धम धमाते। ४०५।
जहां जाइ लागैं तहां तोड़ चलैं।
दमो दम दमो दम दमो दम उथल्लै।
करी झंजरी सी चहुंघा सफीलैं।
कहुं हु गिराई ढहाई अढ़ीलैं। ४०६।
गुबारे हज़ारौं चलैं आसमानैं।
गिरें जाइ गढ पै फुटैं लैं प्रानैं।
किले मैं सिपाही कहन यौं लगे हैं।
कई तो गजब के जु गोले बगे[१२८] हैं। ४०७।
किते कंध कों फोड मारैं दुअन कों।

१२८. चले हैं

दुअन को फाड़ कै जा लगैं पत्थरन कों।
कई बुरज के पुरजे पुरजे करे हैं।
दरखतों के टुकड़ो के टुकड़े परे हैं। ४०९।

छंद प्रमाणिका ॥

चलैं गुलाब गोल यों। छुटैं घुटैं सु लोल यों।
चढ़ैं मढ़ैं अकासियं। परैं तरैं प्रकासियं। ४०९।
छुटैं कई सु वेर हैं। छुरा छुरी बखेर हैं।
करैं न नैक देर हैं। दुअन मार देर हैं! ४१०
कहैं दुअन दल यौं। गजब बलथल यौं।
हनैं पर्‌यौ बगल मैं। अजब है उछल्ल मैं। ४११।
परैं कहीं मलूम हैं। करैं सु आय झूम हैं।
भरी अनेक घूम हैं। करैं बड़ी तु धूम हैं। ४१२।
परौ कि नभ बिज्ज हैं। निकार लेत मिज्ज हैं।
कि वज्र इन्द्र हन्नियं। घने हने बदन्नियं। ४१३।

छंद माल्लिका ।

गज्ज गज्ज सन्न सन्न बज्ज बज्ज घन्न घन्न।
धाई धाइ झट्ट झट्ट। काय काय कट्ट कट्ट। ४१४।
कौन कौन जाय सक्क। कौन कौन पाय धक्क।
यों जु हाय हाय गाय। भौंहरेन जाय जाय। ४१५।

सोरठा

तोपन दई ढ़हाय गढ़ की एक दिवाल तब।
सिंह चमूं चित चाय हल्ला करि ऊपर चढे। ४१५।

छंद भयंग प्रयात।

जबै उन जानी न बच हैं अबेई।
सिपाही ऊहां के जुटे हैं तबेई।

घनी खग्ग दग्गं दुअल दुग्ग मग्गं।
भए गड़बड़ सु महा युद्ध जग्गं। ४१७।
पलक मैं किते ई दुअन मार डारे।
भए घोर युद्धँ करै कोऊ चारे।
कडक्कैं बंदूकैं खड़क्कैं निखंग्गँ।
सड़क्कैं नराचैं अड़क्कैं जु अंगं। ४१८।
फड़क्कैं भुजा सिंघ दल की भड़क्कैं।
तड़क्कैं दुअन दल हियै चल धड़क्कैं।
झड़क्कैं पड़क्कै पगन मैं चड़क्कैं। ४१९।
चड़क्कै झिलम खग्ग, लग कैं रड़क्कैं। ४१९।

छंद शंख नारी।

बजैं घोर बाजे। कडा कडु गाजे।
दसौं दिस्स जागी। कपैं भीत लागी। ४२०।
हलैं दिग्गजै हैं, चिंघारैं, सजै हैं।
धरा डग्ग मग्गै, महां युद्ध जग्गैं। ४२१।
नदी पिट्ठ फट्टैं, बिखी बिख छुट्टैं। ४२२।
भऐ और हल्ले। कहुं कट्टैं चल्ले।
बड़े बीर बंके। किलक्कैं निसंके। ४२३।
जुटें एक एकैं। सने हैं बिबेकैं।
भरे हैं उचंगो। उछाही अभंगै। ४२४।
नहीं मोहे चित्तं। घरे को न हित्तैं।
सजे स्वागति भक्ह। करैं शस्त्र व्यकृहैं ४२५।

छन्द पद्धरी

कहुं करत भट चंक्रँ सुमार। अँगुरीन रक्खू घूमंत धार।

---

१२९. लखै निशाने कूका। १३० अचुक मग्ते हैं।

गति अधिक बक्र बज्रं समान। झट हनत सीस शत्रुं प्रमाण। ४२६।
कहुं छूटत बान प्रज्वलित अग्ग। सन सनित शब्द धुमंत अथग्ग।
नर हनत जाहिं अति सहज मग्ग। तन तजत त्वरित जिह जात लग्ग। ४२७।
अरि दलन माहिं खलभल मचंत। गिर परत सूरे उठ न सकंत।
लग परत जो कि पत्थर मंझार। बहु करत खंड खंडं अपार। ४२८।

विद्धुन माला।

तोड़ा दारैं हैं बंदूकैं। मारैं धारैं पारैं कूकैं।
गोली टोली लाखैं चाखैं। उली उड़ै हा वे भाखैं। ४२९।
चूकैं रूकैं नैको नाहीं। लछैं लछैं अछैं खाहीं।
मक्खी लक्खी नाही कोऊ। झोकैं झौंके धाई होऊ। ४३०।

छंद भुयंग प्रयात।

चलैं तीर जंगी महा तीबर चाली।
लगैं जो मतंगैं कढ़ैं पार हाली।
सफाई भरे और सूधे बहे हैं।
लगैं जाय जामैं, न बाहर रहैं हैं। ४३१।
कई हाल भाले, विशाले चलावैं।
कसालैं अरिन दै, रसाले दिखावैं।
कोउ लै बरच्छी, रिपुगोल तच्छी।
गरे लच्छ लच्छी, समर मैं प्रतच्छी। ४३२।
किते ही कटारी करैं नोक पारी।
महां तबिर तीखी सु आंतन बिदारी।
न रुकैं कहुं अस्थि मैं पार होवैं।
बनी सार मजबूत की वे दिखौवैं। ४३३।
किते खंजरों सो जु पंजर बिदारैं।
किते पेश कबजैं करैं वार पारैं।
किते बांधि खपची दुहुं संग डिग्गैं।
सकल तन जिनों के रुधिर सों हैं भिग्गैं। ४३४।

सः लहना सिंह को भांज औ जखम

दोहरा ॥

गोली लहना सिंह को लगी पर्‍यो बिल्लाय।
तबै भाज भौंदू गयो, धस्यों भोहरैं जाय। ४३५।

छंद प्रमाणिका।

गिरी सु लुथ लुथ पैं। लगैं सु जुत्थ जुत्थ पैं।
बहै जु सोन नद्द ह्वैं। अथाह बे बिहद्द हैं। ४२६।
तरैं सु सुण्डह मुण्डियं। मनों सु जंत झुण्डियं।
कहीं कबंघ जुट्ट ही । लडैं अडैं सु कुट्ट ही। ४३७।
मनों सु इन्द्र जाल हैं। भए अजब खयाल हैं।
भए सु सभि खुसालियं। रचै सु मुण्डमालियं। ४३८।

छंद भुयंग प्रयात।

जुरी जुग्गनी की जमातैं घनी हैं।
नचैं भूत प्रेतैं चुरैलैं तनी हैं।
बडी चीक मारैं भरैं स्रोण खप्पर।
पियैं घुट्टघुं घुट्ट सोखंत छप्पर। ४३९।

सः अजीत सिंह का कतल

कबित

सुन कै अजीत सिंह फौज निज मारी गई
लहिना सिंहै हु होइ घायल विलायो है।
तब भय भारी खाए, पाछै की तरफ जाए
रस्सा मजबूत अति पुष्ट लटकायो है।
ताको गहि लटकि चल्यो है भू तरफ त्यों ही
टूट पर्‍यौ रस्सा पाप प्रगट दिखायो है।

तरै कौ गिरत देखि दूर तैं नजीब दौरे

काट लेहु याहि को नजीक सीस आयो है। ४४०।

दोहरा ।

काटि सीस सरदार के, लै दौरे हर्षाय।

हीरा सिंह महाराज को, नजर दिखायो जाय। ४४१।

सः लहिना सिंह दा अंत

कबित ।

महाराज हीरा सिंह उन को इनाम दियो

कही "खूब काम कियो" करूं सरदार है।

फेर फरमायो सभ फौज को नरेश बैस

"लहिना सिंह हुं गहि ल्याओ बिन बार है।"

आगै किला माहि फौज ढूंड ही रही थी तहां

काहुं कहयो "भोहरे मैं छिपयो जाय हार है।"

तब कई बीर धीर भौहरैं मैं धसि

जातै सीस काट लियो पाप को पहार हैं[१३१]। ४४२।

दोहरा

लहिणा सिंह हूं कौ तबै लै आए झट सीस।

हीरा सिंह महाराज नै, हर्षि दई बखशीस। ४४३।

संधावालिया की लाशों का त्रिसकार।

हुकम भयों सभ नगर मैं, खैंचो इन की लाश।

कीच बीच इन दुंहन को, करवायो फिर बास। ४४४।

---

१३१ सरदार लहिना सिंह संधावालिआ को ढूंडने के लिए जब हीरा सिंह के सिपाही गये तो आगो एक सिख सिपाही ने, जो नंगी तलवार ले कर जखमी सरदार की रखवाली कर रहा था। अच्छा डट के मुकाबला किया और हीरा सिंह के १८-१९ सिपाही मारे। अन्तत: वह खुद भी शहीद हो गया। (पं:ग:री;, एक लिखत के आधार पे)

कबित ।

ऐसै दै हुकम महाराज हीरा सिंह बीर
फौज कौ इनाम दियौ अगनित वा समैं।
किले कौ कियो है सब बंदोबसत पूर्व वत
चौकसी नगर की कराई तैसे तां समै।
फेर सरकार ने जो संसकार हेत कछु
भेजि सरदार आप आए गृह जां समैं।
महाराज ध्यान सिंह जू के दाह करबे की
करी फेर त्यारी झट पट एक सास मैं। ४४५।

सुनी रनवास मैं सपूत पूत हीरा सिंह
बदलो पिता को लेय आय़ो है अबै घरैं।
बोली सभ माता सुखदाता है हमारो यह
त्राता राम या पै सदा रहैगो कृपा करैं।
यह कुल भूषन है, दुष्टन को दूखन हैं
पूखन हमारो, जियो, जांतैं हम हु तरैं।
सूरज सों तेज रहै, आनंद की सेज रहै
जग मैं मजेज रहै, मौत नित बितरैं। ४४६।

राजा ध्यान सिंह दा संस्कार

सोरठा

सती होन को त्यार, भई सु पंद्रह राणियां।
कियो दान प्रकार, पट भूषन, गौ, रथ, अरथ। ४४७।

कबित

चंदन की केवल चिता कौ चुनवाइ करि
ऊपर बिछाए कुशा ता पै फूल डारैं हैं।

घृत हुं की जगह अतरन की सु धारहिं दई
मनिन कपूर किये ता मध पसारै हैं।
तां पै महाराज ध्यान सिंह पधरायो जाय
बैठी चहुं ओरैं सती भक्ति भाव धारे हैं।
आए नृप हीरा सिंह जू नै, दियो दाह तब
सीता राम सीता राम सभन उचारे हैं। ४४८।

सोरठा

तब कियो जल पान, हीरा सिंह महाराज नै।
और जू देह बिधान, क्रम क्रम सभ करनै लगै। ४४९।

महाराजा दलीप सिंह को गद्धी

कबित ।

सिंह बादशाह रणजीत सिंह जू के सुत
तीसरे दलीपसिंह बाल व्यय जां की है।
श्री महीप हीरा सिंह जाय कै किले मैं त्वरित
तखत बिठायो तिनैं, रास जो प्रभा की है।
फेरी है दुहाई श्री दलीप सिंह बादशाह
भूप हीरा सिंह जू वजीर दुति बांकी हैं।
भेजे परवाने देस देस सभ सूबन पै
हाजर हुकम रहो एकता यहां की है। ४५०।

भुयंग प्रयात।

फते की भईं हैं सु शलकैं झड़ाझड़।
तड़ातड़ तड़ातड़ तड़ातड़ तड़ातड़।

---

१३२ महाराजा रणजीत सिंह के चार पुत्र और थे। कौर कशमीरा सिंह, पिशौरा सिंह, तारा सिंह और मुलताना सिंह जो दलीप सिंह से उमर में बड़े थे, महाराजा खड़ग सिंह तथा शेर सिंह से छोटे थे। डोगरे क्योंकि इन कुंवरों के विरोधी थे, इस लिए कवि ने उन्हों का उल्लेख नहीं किया।

कई एक घड़ी लौ झड़ी सी लगाई।
झड़ी जो पलाटन[१३३] की बाढ़ैं महाई। ४५१।
चमुं वाहगुरू की फते है बुलाई।
फते है फते है फते है सदाई।
जहां साध संगत तहां भोर सांझै।
बजी दुंदभी संख घंटा सु झांझैं। ४५२।

कबित।

राजा ध्यान सिंहादिक हरि पुर जायबे को
शोक सरसायो हुतो प्रजा को अपार ही।
शत्रुन कै सीस कटै, बादशाह तखत बैंठ्यो
हीरा सिंह जू को रहयो सभ अखतयार ही।
यां तै दब्यो शोक भयो ओक ओक आनंद सो
लोक लोक भाखें सभै मिल इकतार ही।
धन धन हिन्दुपति हीरा सिंह महाराज
जा नै पुत्रता को नाम दियो है उछार ही। ४५३।

दोहरा।

हीरा सिंह महाराज नै दियो हुकम समुझाइ।
सरदारन पुर द्वार पै, लटकाओ अब जाइ। ४५४।

कबित।

मसती दरवाज़े के अगाड़ी जाय लटकायो
लौन खा गवायो[१३४] जिंह लहना सिंह नाम है।
अधिक चलाक चित पातकी अजीत सिंह
दिल्ली दरवाजे लटकायो वाम वाम है।

---

१३३. यहां पलटन का बहु वचन पलाटन फारसी व्याकरण अनुसार है।

१३४ लहना सिंह राजा ध्यान सिंह का नमक खाने वाला नहीं था।

सीस है बिहीन हीन बसन बिहीन पीन
मोरन की कीच तै रंगीन तन सयाम हैं[१३५]।
काक हुं न चौथै स्वान नियरे न जाहि जा के
ऐसो महा अधम अभागो बदनाम है। ४५५।
कछु दिन पाछे आछे हीरा सिंह महाराज
श्री दलीप सिंह की जलूस करवाई है।
मारतंड आदि नौऊ गृहिन सु थाप करि
बेद बिधि मंत्रनि सो पूजा करवाई है।
राज अभिषेक कर तिलक लगायो भाल
आप दै नजर फेर सभ पै दिवाई है।
चौर छत्र सहित सिंघासन बिराजमान
भासमान की सी दुति दीरघ दिपाई हैं। ४५६।

स: अतर सिंह का कतल

लहिना अजीत ने कियो है यह काम जब
तब ही खबर काहुं ऊने जा सुनाई है।
उहां हो अतर सिंह सुनत प्रमाण भाजयो
पार सतरुद्र गयो जिय भय खाई है।
रह्यो कुरखेत मैं उदास सात मास लग
फेर जमदूत करी ता पर चढ़ाई है।
चित मैं विचार्यो, जांनै बंधु औ भतीजा मारयो
तां सों अब मैं हुं करौं चल के लड़ाई है। ४५७।
राखन लगयो है ढूंडि ढूंडि असवारन को
पयारन सों पैदल को रखत सुहायो हैं।
ऐसै कछु दिन माहिं करि तजवीज सब
लै के निज फौज चल्यो काल को चलायो है।

---

१३५. स: अजीत सिंह का रंग सांवला था।

आयो सतरुद्र के उत्तर इत ओर फेर
नदी सों अगाडी आय डेरा उतरायो हैं[१३६]।
लागयो है सलाह मैं, चलों, जु कौन राह मैं
हौं भेज हूं सिपाह लेइ लडि दायो हैं। ४५८।
ऐते मैं खबर सुनी हीरा सिंह महाराज
आयो वार उतर अतर सिंह जंग को।
मनि हर्षायो, सरसाए अंग बीरता सों
फेर फरमायो बद्दू आयो दैन अंग कौ।
तब निज पयारे मियां लाभ सिंह जू सों कही
जाओ तुम मारो ताहि लै के फौज संग को।
सुनकै प्रभु के हुकम हिये मैं अभंग राखयो
तरल तरंग उठी रण के प्रसंग को। ४५९।
लै के फौज मौज सो, सिधार्यो मियां लाभ सिंह
दाब लियो जाइ कै चहुंघा जाको डेरा है।
मारी तजवीज सों तड़ाक तड़ड़ाइ तोपैं
ओपैं चड़ी रण की भयो सु भट भेरा है।
भए गड बड चढ़ीं तेगन की धारैं बारैं
मारैं बेशुमारैं भयो शत्रु दल जेरा है।

---

१३६. सरदार अतर सिंह को सतलुज पार अंगरेजी इलाके में नई फौज रखने का अधिकार नहीं था। और ना ही भरती करने का हुकम था। इस लिए कवि का यह कथन सही नहीं माना जता। इस के बिना सतलुज उरार उस का डेरा नहीं, बलकि यह डेरा बाबा बीर सिंह नौरंगाबादीए का था। वह तो सिरफ कुछ नौकर चाकरों समेत सतलुज लांघ कर उन के साथ शामल हो गया था। पंजाब आने की सलाह उसे उन्हीं मित्र सरदारों ने दी थी। जो ऊपर से उस के शुभचिंतक और भीतर से हीरा सिंह डोगरे के साथ मिले हुए थे। असल में हीरा सिंह की सकीम सरदार अतर सिंह, कौर कशमीरा सिंह और कौर पिशौरासिंह को इक्टठे कर के मारने की थी। अत: जब यह भाई वीर सिंह के डेरे साथ शामल हुए तो इनके ऊपर पंडित जल्हे की राय से राजा हीरा सिंह की तरफ से ज़ोरदार हमला किया गया।

काट लियो झटपट अतर सिंह हूं को सीस[१३७]
पाछै जो भजे सो कियो नदी मैं बसेरा है। ४६०।
कीनी फते जंग, मियां लाभ सिंह नैं अभंग
रंग रह्यो रण मैं उमंग अधिकायो हैं।
जै जै करै फौज हीरा सिंह जू को नाम लै लै
जास को प्रताप आप शत्रु उठि आयो हैं।
जैसे तो संपाती[१३८] गीध जर्‌यो सूर सौंही जाइ
तैसे यह आयि प्राण तुरत गवायो है।
फेरु हूं ते कूच कर आयो मियां धीर बीर
लै के सीस शत्रु को प्रभु को दिखायो है। ४६१।
देखि शत्रु सीस अवनीस हीरा सिंह बीर
कही लाभ सिंह जू सो "तुमै वाह वाही है।
तूं है अति सूर पूर प्रण को जहूर जोर
मार्‌यौ मगरुर कूर अधम मह़ाई है।
ता ही समें बोली सभा यही है जो कलह बीच
पाई मीच नीठ जाइ नरक पराई है।
लख लख लानत रे अतरु अभागै तोहि
कुटंब कटाय कट्यो कायर कसाई है। ४६२।

---

१३७. यहां कवि ग्वाल ने अकेले स: अतर सिंह का ज़िकर ही किया है, तथा कौर कशमीरा सिंह और भाई वीर सिंह के मारे जाने का हाल नहीं बताया। मालूम होता है यह दोनों नाम महाराणी चंद कौर की तरह इसी लिये छोड़े गए थे ताकि इस को राजा हीरा सिंह ऊपर निमक हाराम होने का दोष न आवे और इस तरह इस प्रसंग को अधूरा एवं संकुचित रखा गया है।

१३८. एक पौराणिक कथा के अनुसार एक बार अरुन के पुत्र संपाती और जटायू गिद्ध सूरज को जीतने के लिए चढ़ाई करके गए। जब जटायु के पंख सूरज के तेज़ से जलने लगे तो संपाती ने उसको अपने पंखों के नीचे ले लिया, ऐसे जटायु को बचाता हुआ संपाती भी जल गया और जटायु समेत बेहोश हो कर विन्ध्याचल पहाड़ पर ग़िर पड़ा, बनाबास के समय श्री राम चन्द्र जी जब सीता की खोज करते हुए वहां गए तो इस सहायता के बदले उन के पंख नये सिरे से उग आए।

दोहरा ।

भई खुशी सभ नगर मैं, देत असीस समाज।
नृप हीरा सिंह चिर जियौ, जिन रख लीनो राज। ४६३।

कबित ।

सुंदर धरम औ करम पग दोऊ जाके
प्रजा है ऊदार औ खजानों हिय साज है।
असवारी दाहनी औ, पलटनादि वामी भुज
तोपैं अग्र भाग पृष्ट पुंज गजराज है।
ग्वाल कवि सत्य मुख नीत औ बिबेक दृग
सील बास सुजस रत्न छबि छाज है।
हिन्दु पति हीरा सिंह राजन को श्री मुकट
प्राण जाको जल्हा पंडितेश महाराज है। ४६४।
पापी घोर तापी संधावालिये सरापिन को
पाप के पहारन सों भूमि दबि दहती
लुट जातो नगर न डगर दिखातो कहीं
बगर बिलाइ जातो प्रजा डाह डहती।
ग्वाल कवि कहै फौज फैलन फतूरन सौं
फलत न होती, औ विषाद स्वाद लहती।
होते जो न ऐसो हिन्दुपति हीरा सिंह बीर
तो न रणजीत सिंह जू की गादी रहती[१३९] ४६५।

---

१३९. राजा हीरा सिंह ने उस समय महाराजा दलीप सिंह गद्दी पर रखा था यह बात मन नहीं लगती, क्योंकि से डोगरा खानदान महाराजे का अधिक संधावालियों शुभचिंतक नहीं था। अत: संधावालियों के साथ महाराजे का लहू का सम्बन्ध था और वह बहुत ज़ोर मारते तो महाराजे के बालग होने तक बतौर सरप्रसत हकूमत कर सकते थे। पर हीरा सिंह का पिता ध्यान सिंह तो महाराजा दलीप सिंह को ही किसी कुदरती घटना के बहाने खतम करके पंजाब का राज तखत अपने बेटे हीरा सिंह को देना चाहता था। अत: इस विषय में डोगरा मण्डली की चिर अभिलाषा जुड़ी थी, देखो (मैमुआयरज़ आफ अलैक्स गारडनर) फिर उस के पुत्र हीरा सिंह को जो पिता जैसा ही कुटिल था महाराजे की गद्धी का रक्षक कैसे माना जा सकता है।

महाराज हीरा सिंह हिन्दुपति तुं ही एक
राखी निज टेक नेक धरम की चुहद्दी तैं।
फौज मैं फितूर को ना फिरका चलन दीनो
हलन न दीनों कोऊ सूबा सरहद्दी तैं।
ग्वाल कवि कहै बादशाही को न मुंद करी
दुदं खरी दरी प्रजा सुखन सों लद्दी तैं।
बदी को करैया बैरी रद्दी सम फारि डारे
कर के मरद्दी हद्दी राखी राज गद्दी तैं। ४६६।

सुरकुल अवतंश हीरा सिंह महाराज
रावरो प्रताप मो पै जात बरन्यो नहीं।
राम अति क्रोध कैं सहसरबाहु एक ता की
भुजा काट दीनी पर जीव सों हन्यो नहीं।
ग्वाल कवि कहै तुम लियो द्वै जनों से वैर
दोऊअन के काटे सीस रोस सों सन्यो नहीं।
जैसो कछु बदलो पिता को आप लियो आज
तैसो परस राम हुं सों ले ह्वां बन्यो नहीं। ४६७।

चाहत रहत एक नज़र मिहर तेरी
उजर न काहुं हसपान[१४०], रूम, साम लौं।
सात हुं विलायत हिकाइत तिहारी सुनैं
रियायत मंगैया हर रोज आठों जाम लौ।
ग्वाल कवि कहै पारावार हूं के वार पार
पहुंची खबर जाइ टापून तमाम लौं।
हर्षन को हौज हिन्दुपति हीरा सिंह बीर
तेरी बीरता की धाक धाई ध्रुव धाम लौं। ४६८।

---

१४०. स्पेन (Spain)

जा छिन तुरी पै, तरवार लैं सवार होत
ता छिन तैं पारावार बारि छलकत हैं।
धूसरी धरा ते धुरि हय खुर तारन की
पुर गई हरि[१४१] पुरहूत[१४२] धरकत हैं।
ग्वाल कवि कहै रंगै जंगन के रंग रंग
खग्गन के बाहबे को भुज फरकत हैं।
हिन्दुपति हीरा सिंह तेरी धांक देस देस
दिग्गज दिगीशनके दिल दरकत है। ४६९।
बयाली[१४३] सी करौ तौ दाव पाए दंस करवैया
दूजे मंत्र गारडू के झारै जात झरी है।
यही है अदाव दूजे या को न उपाए कोऊ
रहै मुंह फारे दिन रात भूख भरी है।
ग्वाल कवि कहै एक सवास ही मै खैंच करि
दुजन दलन को निगल जात खरी हैं।
हिन्दुपति हौंसदार हीरा सिंह महाराज
ता ते तरवार तेरी ताको अजगरी हैं। ४७०।

अमृत ध्वनी।

गहि गहि करि तरवार को, हीरा सिंह समरत्थ।
चड़त गज हय रत्थ पै, कित्ति[१४४] ग्वाल कवि कत्थ।
कत्थं भिग्य गत्थं सुनियन पत्थं खलभल।
मत्थं धुनि हरि थत्थं थरकित्त कुपत्थं बल चल।
जत्थं पत्थ अनत्थ सुनत्थ नत्थ किय लख लहि।
गुत्थत रुण्डन मुण्ड भद्द हत्थ हत्थ भुज[१४५] बत्थं गहि। ४७१।

---

१४१. विष्णु। १४२. इन्दर देवता १४३. नागिन १४४. कीरती १४५. वसतु।

कबित ॥

जैसे स्वाति बूंद को पपिहा निस दिन चाहै
जैसे मोर चाहे घन घोर महमान कैं।
चंद्रमा को जैसे चित चाहित चकोर रहै
भौरन को झौर चाहै कञ्ज प्रफुलान कैं॥
ग्वाल कवि कहै ऐसे देस देस भेस भेस
चाहै चित हित कर वह हिन्दुआन कैं।
चाकर सभी को महाराज हीरा सिंह बीर
और सभ चाकर है भूपति जहान कै।
चंदन सी चरचि चरचि चित चौंप करैं
चद्रंक सी चंद्रिका सी मुनि मनसरियैं।
हीरा सिंह हलायुध सी हरि गिरि हंसन सी
हर सी हरा सी औ हिमालय सी पतरियै।
ग्वाल कवि कहत गिरा सी गुन सत्व सी है।
गंगा सी, गजाधिप सी, ज्ञान सी गहिरियै।
कामतरु सी है कलानिधि सी है कमनीय
हीरा सिंह महाराजे कीरति तिहरियै। ४७३।
बीकानेर नृपति निहारै तसवीर तेरी
जैपुर मैं रावरी मनावै जै विशाल है।
उदै पुर राणा बादशाही इतमाम राखैं
सोउ नाम तेरे को कलाम राख्यौ डाल है।
ग्वाल कवि कहै राऊ बूंदी को नमूदी लियै
गुंदी माल कीरति तिहारी हर हाल है।
हिन्दुपति हौसदार हीरा सिंह महाराज
हिन्द के नरिंदन की तुही एक ढाल है। ४७४।

जोधपुर वारे जो तिहारे ही भरोसे रहैं
कोटा पति कियो कोट तुछ जस माल हैं।
दक्षन मैं ऐसों को जो पख न तिहारो राखैं
लखन अमीर कै स भयो धीरता लहै।
ग्वाल कवि कहै गुजरात दिन रात रटै
मुजरात ह्वै कै कब जागै मम भाल है।
हिन्दु पति हौसदार हीरा सिंह महाराज
हिन्द के नरिंदन की तुही एक ढाल हैं। ४७५।
कुल कछवाह हुलसाए से रहित सदा
सीस मनि जानत सीसोदिया विशाल है।
चैन भो चुहानन कै, बैंस कहै बैस फली
गौर और तौर हांडा राखियो कमाल है।
गवाल कवि कहत बुंदेले का बघेले बीर
चौहदी चंदेलन को चक्र भो खुशाल है।
हिन्दु पति हौसदार हीरा सिंह महाराज
हिन्दु के नरिंदन की तुही एक ढाल है। ४७६।
लोक सभ जानै हद हिन्दुन की लाज तुही
गाज तुही गिरिजा के सिंघ की विशाल है।
आवत चुगतन की दाव मद मत्तन की
बीर रस रत्तन की ताब ही को ताल है।
ग्वाल कवि कहै धर्म धारिन को भाल तुही
सूमन को साल तुंही दान की दिवाल है।
हिन्दुपत हौसरदार हीरा सिंह महाराज
हिन्दु के नरिंदन को तुही एक ढाल है। ४७७।

जाहर जगत हिन्दुपति हीरा सिंह बीर
ठाढी करि राखी धर्म धुजा जयों मनीन की।
सिंघ बादशाह जू की भूमि राज गादी राखी
फौज की अबादी राखी नीत जयों पुनीन की।
ग्वाल कवि कहै राजपूती की फसल राखी
कुल की ललाई राख लीनी जयों चुनीन की।
और सब राखी, पर द्वैं ही बात खोई तुम
बैरिन की पति, अर विपति गुनीन की। ४७८।

दोहरा ॥

हीरा सिंह महाराज के, सचिव प्रान के प्रान,
श्री जलहा जिन कौ कहैं, गनपति सभ बुधिमान। ४७९।

कबित ॥

कुल अपने मैं भानु जल्हा महाराज भयो
बंधवर कुंजन की भई फल बृद्धि है।
सरद सुधाकर सों मित्र चकोरन को
दास कुमुदावली की शोभा होत सिद्ध है।
ग्वाल कवि कहै सत्य धर्म को जुधिष्ठर सों
दान कौ दधीचि की सी बिरति प्रसिद्ध है।
ज्ञान को वशिष्ट ब्रहम तेज है बृहसपति सों
शास्त्रन को ब्यास देव बंदन को वृद्ध[१४६] है। ४८०।
जैसी है मर्यादा शास्त्रीन राजनीतिक की
तैसी रीत राखी सिरमौर खैर खवाही को।

---

१४६. ब्रहमा।

मुलक अबादी को महान मंत्र मालूम है
जालम है शत्रु को पच्छक सिपाही को।
ग्वाल कवि कहै, पण्डतेश जल्हा महाराज
बुध को जहाज गुण ग्राहक उछाही[१४७] को।
पावन धरम गंग अंग सो पुजावन है
प्रगट अदम्भ आज थंभ पादशाही को। ४८१।

ग्राहक गुनी को रच्छक दुनी को नीको
ही को अति उज्जल जनैया चित चाही को।
यथा योग आदर करैया सभ ही को सदा
फीको कर डारत तुरंत लव राही को।
ग्वाल कवि कहै आप सत्य ही को बोल कहै
प्रण को अमोल कहै आसरो उच्छाही को।
पण्डितेश जल्हा महाराज आज है स्वयंभु
प्रगट अदंभ दृढ़ पादशाही को। ४८२।

छांह परै जा पै जल्हा महाराज तेरी नेरी[१४८]
ता पै झूठ रेखा हु नहीं निहारियत है।
झूठो नग धरि कोऊ आवै जो सभा के बीच
तौ तबै उतार साचे अंग डारियत है।
ग्वाल कवि कोउक पै साचै हू भए तौ लघु
तिनौं बडे रत्न दै दे प्रभा पारियत है। ४८३।

आप रघुवंसी अवतंसी के परम प्राण
वह समनेस अकबर कै प्रसंस हो।

---

१४७. उत्साही। १४८. नियेर।

प्रतिभा है सरस्वति आप मैं करत वास
वा मैं सरस्वति जू को वर रूपी हंस हो।
ग्वाल कवि जल्हा जु तुहारी इच्छा सत्य हो
वा के सत्य होत रहयो वाक्यन को बंस हो।
बीर बल बीर बल लोक सभ कहैं तुमैं
मेरे जानै बीरबर तेरो इक अंश हो। ४८४।

दोहरा

या विधि लव पुर की कथा, वरनी हिय कर मोद।
हीरा सिंह महाराज हित विरच्यौ विजय विनोद।

कबित ॥

तेज रहो रवि सौं जहान मैं प्रकाशमान
सेज रहो सुख की सुफल फरिबो करैं।
सरद सभी सों पूर सुजस जहूर रहो
पै ब्रत प्रताप सो प्रताप परिबो करौ।
ग्वाल कवि उमर दराज मारकंडे की सी
गजराज कैसो कस दान ढरिबो करो।
हिन्दु पति हीरा सिंह महाराज मंत्रि युत
ध्रुव लौं अचल उग्र राज करिबो करो। ४८६।
एक सै उनासी हैं कबित द्वै सवैया शुभ्र
एक सौ अठासी दोहरान की कतार है।
बत्तिस हैं सोरठा सरस भांति भांति भले
अमृतधुनि एक जाको अमृत उचार है।

ग्वाल कवि कहत प्रमाणिका उनीस जा मैं
भुयंग प्रयात छंद बावन विचार है।
छैं हु संखनारी, तीन पद्धरी द्वै विद्धुन है।
मल्लिका द्वै विजय विनोद की बहार हैं। ४८७।

इति ॥

---

१४९. ध्रुव तारा, जो अचल है। पुराणक कथा है कि ध्रुव एक राज कुमार था। यह अमर और अटल पदवी उस को तप्सया के कारण मिली है। इस कबित के अनुसार इस पुस्तक में छंदों की गिनती इस प्रकार है:-

१- कबित्त १७९; २- स्वैये २, ३- दोहरे १८८, ४- सोरठे ३२, ५- अमृत ध्वनि। १ ६- प्रमाणिका।१८ ७- भुयंग प्रयात ५२, ८- संख नारी ६, ९- पद्धरी ३, १०- विद्धन माला २, ११- मल्लिका २, १२- छंद = गिनती का। कबित कुल जोड़ ४८७ तथा कुल ११ प्रकार के छंद इस पुस्तक में रखे गए हैं।